RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

वर्ष-02, अंक - 36 (साप्ताहिक) खवासा, गुरुवार 11 जून 2020 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

चीन ने हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया और प्रधानमंत्री खामोश हैं: राहुल गांधी

नई दिल्ली, एजेंसी। चीनी सेना के घुसपैठ मामले में कांग्रेस के पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी, मोदी सरकार पर हमलावर हैं। राहुल गांधी ने ट्वीट कर एक बार फिर मोदी सरकार को घेरा है। राहुल गांधी ने लिखा कि चीन ने लद्दाख में हमारी जमीन पर कब्जा कर लिया है और प्रधानमंत्री खामोश हैं। राहुल गांधी ने कहा कि चीनी, लद्दाख में हमारे क्षेत्र में चले आए और कब्जा कर लिया, लेकिन प्रधानमंत्री चुप हैं और पूरे मामले से ही गायब हैं। इससे पहले राहुल ने रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह से पूछा था कि क्या क्या लद्दाख में चीनी सैनिकों ने भारतीय जमीन पर कब्जा किया है? कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने मंगलवार को कहा था ?कि रक्षा मंत्री का हाथ पर कमेंट करना खत्म हो जाए, तो वह इस सवाल का जवाब दे सकते हैं। क्या लद्दाख में चीनी सैनिकों ने भारतीय जमीन पर कब्जा किया है?

इस बीच एलएसी विवाद पर आज भारत-चीन के बीच एक बार फिर बैठक होने के आसार हैं। दोनों देशों के बीच मेजर जनरल स्तर की बातचीत हो सकती है। बातचीत से ठीक पहले गलवान घाटी समेत कई तीन जगहों पर चीन ने 1 से 2 किलोमीटर अपनी सेना पीछे हटा ली है। सूत्रों के मुताबिक, चीनी सेना गलवान वैली, पीपी-15 और हॉट स्प्रिंग इलाके में 2 से ढाई किलोमीटर पीछे तक हट गई है। ये सभी इलाके पूर्वी लद्दाख में पड़ते हैं। गलवान वैली के इलाके में चीन ने जो वेसेल और नौकाएं तैनात की थीं, उसे हटा लिया गया है। भारतीय सेना भी इस इलाके में पीछे हटी है और अपने वाहन वापस लिए हैं।

पेट्रोल-डीजल कीमतों में तेजी जारी

नई दिल्ली, एजेंसी। लगातार चौथे दिन बुधवार यानी 10 जून 2020 को भी पेट्रोल और डीजल दोनों के रेट में बढ़ोत्तरी की गई है। बुधवार को दिल्ली में पेट्रोल के दाम 40 पैसे बढ़कर 73.40 रुपये प्रति लीटर पर पहुंच गया है। वहीं, डीजल के रेट में 45 पैसे की तेजी आई है। इंडियन ऑयल की वेबसाइट के मुताबिक 10 जून 2020 को दिल्ली,मुंबई, कोलकाता और चेन्नई में डीजल और पेट्रोल के रेट इस प्रकार रहे कंपनियों का कहना है कि पेट्रोल-डीजल में लागत और बिक्री का अंतर पहले ही 4-5 रुपये प्रति लीटर पहुंच गया है। ऐसे में वैश्विक कीमतों को देखते हुए घाटे को पूरा करने के लिए लगातार दो सप्ताह तक 40-50 पैसा प्रतिदिन दाम बढ़ाना पड़ेगा। ऑयल मार्केटिंग कंपनियां कीमतों की समीक्षा के बाद रोजाना पेट्रोल और डीजल के रेट तय करती हैं। इंडियन ऑयल , भारत पेट्रोलियम और हिंदुस्तान पेट्रोलियम रोजाना सुबह 6 बजे पेट्रोल और डीजल की दरों में संशोधन कर जारी करती हैं।

कलेक्टर द्वारा आवास हेतु आवंटित भूमि पर ग्राम पंचायत कर रही दुकानों का निर्माण

बिना अनुमति के चल रहा है कार्य, एमपीआरडीसी भी लगा चुका हैं रोक

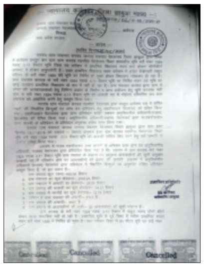

आवासीय पट्टे हेतु जारी जिला कलेक्टर का आदेश

मौके पर बिना अनुमति कार्य करवाते ग्राम पंचायत के कर्मचारी।

एमपीआरडीसी द्वारा निर्माण करने पर अतिक्रमण तोड़ने के लिए जारी पत्र

माही की गूंज, पेटलावद। राकेश गेहलोत

ग्राम पंचायत में मचे भ्रष्टाचार और अधिकारियों की लेन-देन कर मामले निपटाने की आदतों के बाद अब ग्राम पंचायतों के सरपंच-सचिव इतने बेकाबू हो गए है कि कलेक्टर के आदेश तक को ताक में रख कर मनमाने ठंग से कार्य कर रहे हैं। करवड़ ग्राम पंचायत में ऐसा ही एक मामला सामने आया है। जहां मुख्य मार्ग झाबुआ-रतलाम रोड पर के निकट ग्राम पंचायत द्वारा दुकानें बनाने का कार्य कुछ महीने पूर्व शुरू किया गया। जिसको आपत्ति के बाद रोक दिया गया। कुछ दिन पूर्व सीमांकन हुआ, जिसने आधी अधूरी भरी हुई नींव में आधी भूमि एमपीआरडीसी और आधी भूमि शिक्षा विभाग की निकली। जिसके बाद कार्य को पूरी तरह से रोक दिया गया। उक्त मामले में जिला कलेक्टर सर्वे नम्बर 1324 रकबा 0.11 हेक्टेयर की भूमि में जो पूर्व में स्कूल मद दर्ज रही। जिला कलेक्टर द्वारा प्रकरण क्रमांक 01/अ-59/59/2020-21में पारित आदेश दिनांक 28.05.2020 उक्त भूमि परिवर्तन मद की भूमि घोषित करते हुए उक्त भूमि पर पंचायत द्वारा आवासहीनों को आवास निर्माण हेतु उपलब्ध कराने हेतु आवंटित की गई थी। उक्त भूमि पर आवास के लिए ग्राम पंचायत में 32 लोगों की सूची जिला कलेक्टर को प्रस्तुत की। जिसमें अधिकांश लोग एसटी और एससी वर्ग है, लेकिन भ्रष्ट पंचायत ने गरीबों को आवास देने के स्थान पर 32 दुकान बनाने का कार्य शुरू कर दिया। जिसे एमपीआरडीसी और नगर के जनप्रतिनिधियों द्वारा आपत्ति लेने पर रोक दिया गया था, और सीमांकन होने के बाद स्थिति पूरी तरह से साफ हो गई कि उक्त भूमि पर ग्राम पंचायत किसी भी तरीके से दूकान निर्माण नहीं कर सकती हैं।

अतिक्रमणकर्ता को दी जा रही है दुकानें

ग्राम पंचायत द्वारा उक्त दुकानें रोड के करीब किए हुए अतिक्रमणकर्ताओं को दुकान बना कर देने का वादा कर लिया। जबकि दुकान निर्माण कार्य पूरी तरह से अवैध है। बताया जा रहा है कि 32 दुकानदारों में हर दुकानदार से 70 हजार रुपए एक नम्बर में वसूले जाएंगे और बाकी का लेन-देन सेटिंग से किया जाएगा। जिसकी बंदरबांट जिले तक के अधिकारियों के साथ कर के सबके मुंह बन्द किए जाएंगे। ग्राम पंचायत द्वारा इन 32 दुकानदारों को ही सूची में शामिल आवासी भूमि आवंटन करना बताने कर गुमराह किया जा रहा है। जबकि जिला कलेक्टर से पारित सूची में से एक भी व्यक्ति को दुकान नहीं दी जा रही हैं।

बिना अनुमति किया कार्य शुरू

सीमांकन के बाद पूरी तरह से गलत निर्माण तय हो चुके स्थान पर ग्राम पंचायत ने पुनः कार्य शुरू कर दिया। जिसकी जानकारी शिकायतकर्ता सचिन गामड़ द्वारा अधिकारियों को देने के बाद भी कार्य को रोका नहीं गया। मामले में पटवारी ईश्वरलाल पाटीदार से जानकारी ली गई तो उसका कहना था कि मेरे पास अधिकारी का ऐसा कोई आदेश नहीं है। आप अधिकारी से वर्जन लो मुझसे क्यों बात कर रहे हो। ग्राम पंचायत के पास किसी प्रकार की अनुमति होने के बारे में भी कोई जानकारी पटवारी नहीं दे सके। ग्राम पंचायत सचिव गोपालदास वैरागी का कहना है कि हमने अनुमति ले ली है। जब अनुमति के कागज दिखाने की बात कही तो सचिव बात को घुमाते हुए कहने लगा कि हमने अनुमति के लिए आवेदन किया है। आखिर बिना अनुमति क्यों निर्माण किया जा रहा है। इस पर सचिव मिलकर बात करने की बात कहने लगा। शिकायतकर्ता सचिन गामड़ द्वारा अनुविभागीय अधिकारी पेटलावद को पूर्ण दस्तावेज के साथ आवेदन देकर कार्य रोकने मांग की है। सचिन गामड़ ने बताया कि पटवारी को तहसीलदार ने मौके पर चल रहे कार्य की जानकारी मांगी तो पटवारी ने झूठी जानकारी देते हुए कार्य बंद बताया। जबकि मेरे द्वारा अधिकारियों मय फोटो और वीडियो के साथ प्रमाणित शिकायत दर्ज कराई गई है।

एसडीएम की फटकार, नहीं लगाई लिखित रोक

शिकायतकर्ता सचिन गामड़ द्वारा स्टे हेतु लिखित शिकायत की थी लेकिन शिकायत के दो दिन प्रभारी एसडीएम बघेल ने किसी प्रकार से लिखित रोक दुकान निर्माण के कार्य पर नहीं लगाई और मंत्री-सरपंच को फटकार लगाते हुए बिना अनुमति कार्य नहीं करने के मौखिक आदेश दे दिए। मामले में स्थानीय भाजपा नेता करवड़ के सरपंच और सचिव के साथ जिले के अधिकारियों के चक्कर लगा रहे हैं और अपने नेता से दबाव डलवाकर 34 गरीब लोगों के हक पर डाका मारने का प्रयास कर रहे हैं। मामले में जिला कलेक्टर प्रबल सिपाहा पहले ही कह चुके हैं कि ग्राम पंचायत गलत तरीके से निर्माण करेगी तो उसे तोड़ा जाएगा। मामले में आगे बड़े खुलासे होंगे। कैसे ग्राम पंचायत ने अधिकारियों को धोखे में रख कर गरीबों के नाम पर आवासीय पट्टे देने के नाम पर दुकानें बनाकर लाखों कमाने का खेल खेला।

कोरोना का कहर देश के 86 प्रतिशत मामले सिर्फ40 दिनों में सामने आए

नई दिल्ली, एजेंसी। कोरोना ने भारत में भले ही पांच माह पहले दस्तक दी हो, लेकिन महामारी के 86 फीसदी मामले पिछले 40 दिनों में आए हैं। वहीं, 84 फीसदी संक्रमितों की मौत भी मई से जून के बीच हुई है। देश में कोरोना का कहर मई में ही सबसे ज्यादा रहा। मई में ही एक लाख 53 हजार से मरीज मिल चुके हैं। वहीं अनलॉक के नौ दिनों में ही 76 हजार से ज्यादा मरीज मिल चुके हैं। मई में उद्योगों-कार्यालयों और दुकानें खोलने के साथ राज्यों के भीतर आवागमन की सशर्त छूट मिली थी। साथ ही ट्रेनों, बसों, विमानों से यात्रा भी प्रारंभ हुई। देश में कोरोना के एक दिन में रिकॉर्ड 9,987 मामले आए हैं। अब कुल संक्रमितों की संख्या 2,66,598 हो गई। एक दिन में रिकॉर्ड 266 की मौत के साथ ही मृतकों की संख्या 7,466 पहुंच गई। पांच दिन से लगातार 10,000 के करीब केस आ रहे हैं। बीते सोमवार को 9983, रविवार को 9971, शनिवार को 9887 और शुक्रवार को 9851 नए मामले सामने आए थे। लॉकडाउन ने दुनिया में कम से कम 50 करोड़ लोगों को कोरोना के संक्रमण की चपेट में आने से बचाया है। 50 करोड़ को संक्रमण से बचाने का यह आंकड़ा महज छह बड़े प्रभावित देशों या क्षेत्रों चीन, अमेरिका, यूरोप का है। कैलीफोर्निया यूनिवर्सिटी के मुख्य शोधकर्ता सोलोमन सियांग ने कहा कि लॉकडाउन लागू करने में छोटी सी भूल इन देशों पर भारी पड़ती। अभी कोरोना के कुल मामले 72 लाख हैं।

जम्मू-कश्मीर के शोपियां जिले में सुरक्षाबलों के बीच एनकाउंटर, दो आतंकी ढेर

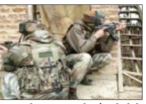

जम्मू, एजेंसी। जम्मू-कश्मीर के शोपियां जिले में एक बार फिर से आतंकवादियों और सुरक्षाबलों के बीच एनकाउंटर शुरू हो गया। सुरक्षाबलों को इलाके में कुछ आतंकियों के छिपे होने की सूचना है। इस दौरान सुरक्षाबलों ने दो आतंकियों को ढेर कर दिया है। शोपियां में पिछले पांच दिनों में यह तीसरा एनकाउंटर है। शोपियां जिले के सुगू गांव में चल रहे एनकाउंटर में माना जा रहा है कि एक घर के अंदर तीन आतंकवादी छिपे हो सकते हैं। सेना और सीआरपीएफके इस ज्वांइट ऑपरेशन की शुरुआत रात डेढ़ बजे के करीब हुई, जब सुरक्षाबलों को इलाके में आतंकियों के छिपे होने की जानकारी मिली। लगातार दो दिन तक अलग-अलग मुठभेड़ चली थी, जिसमें नौ आतंकियों को मार गिराया गया था। रविवार को पांच आतंकी ढेर किए थे तो वहीं, सोमवार को चार आतंकवादियों को सेना ने मारा था। पिछले दो सप्ताह में सेना ने नौ बड़े ऑपरेशंस को अंजाम दिया है, जिसमें 22 आतंकवादियों को मार गिराया है। शोपियां जिले में लगातार दूसरे दिन हुए एनकाउंटर के बाद यह जानकारी जम्मू-कश्मीर के डीजीपी दिलबाग सिंह ने दी थी। डीजीपी, दिलबाग सिंह ने एनकाउंटर के बारे में कहा था कि बीते, दो हफ्तों में नौ बड़े ऑपरेशनंस को अंजाम दिया गया है। इनमें से छह टॉप कमांडरों समेत 22 आतंकवादियों को मौत के घाट उतार दिया गया।

मंदिर निर्माण से पहले राम जन्मभूमि परिसर में हुआ शिव का रुद्राभिषेक

अयोध्या, एजेंसी। राम जन्मभूमि पर भव्य मंदिर निर्माण से पहले सारी विघ्न बाधा समाप्त करने के लिए जन्मभूमि परिसर में बुधवार को वैदिक मंत्रोच्चार के साथ विधिवत भगवान शशांक शेखर का रुद्राभिषेक हुआ।रामनगरी के संतों के साथ रुद्राभिषेक का नेतृत्व राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के अध्यक्ष मणिरामदास छावनी के महन्त नृत्यगोपाल दास के उत्तराधिकारी महंत कमल नयन दास ने किया। राम जन्मभूमि परिसर में यह पहला मौका है, जब 28 वर्षों के बाद किसी तरह का धार्मिक अनुष्ठान किया गया।

यह मंदिर और शिवलिंग मौजूदा समय में अत्यधिक जीर्णशीर्ण अवस्था में है। राम मंदिर निर्माण में किसी भी तरह की और बाधा आगे उत्पन्न न हो और निर्माण कार्य निर्बाध रूप से चलता रहे। इसी को लेकर भगवान शिव का रुद्राभिषेक किया गया। बुधवार को राम जन्मभूमि परिसर में पुरातत्व विभाग द्वारा संरक्षित कुबेर टीला पर प्रातः शिव की आराधना करके रुद्राभिषेक अनुष्ठान ढाई घंटे से ज्यादा समय तक चला। रुद्राभिषेक की पूर्णाहुति दोपहर में की गई। कुबेर टीला पर स्थित शशांक शेखर के मंदिर में अभिषेक करने के बाद महंत कमल नयन दास ने कहा कि कुबेर टीला पर भगवान शिव स्थापित हैं। उन्होंने कहा कि राष्ट्र हो अखंड, सभी रहे सुखी और प्रसन्न, कोरोना वायरस जल्द दूर हो, भगवान राम का भव्य मंदिर बनकर जल्द तैयार हो, इसी कामना के साथ रुद्राभिषेक किया है।

राम जन्मभूमि पर मंदिर निर्माण शुरू होने के विषय पर उन्होंने बताया कि राम जन्म भूमि में अंदर कोई भी निर्माण कार्य नहीं शुरू हुआ। केवल शिव की आराधना के लिए हम परिसर में आए थे। उन्होंने कहा कि पूर्व के दिनों में हम रामलला के दर्शन करने के लिए गए थे। कुबेर टीला पर भगवान शिव जी दिखाई पड़े। पुराना मंदिर जीर्णशीर्ण अवस्था में गिरा हुआ है। हमारी इच्छा हुई भगवान शिव जी का अभिषेक किया जाए। उन्होंने कहा कि भगवान शिव की आराधना के बिना और उनको प्रसन्न किए बिना इच्छित फल की प्राप्त नहीं होती है। करोड़ों तप और पूजा की जाए, लेकिन जब तक भगवान शिवजी की आराधना नहीं की जाती है, तब तक फल की प्राप्ति नहीं होती।

प्रधानमंत्री कर सकते हैं मंदिर निर्माण का शिलान्यास

महंत कमल नयन दास ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात पर उन्होंने कहा कि अभी समय निश्चित नहीं हुआ है। शीघ्र ही समय निश्चित होगा और उन्हें शिलान्यास के लिए आमंत्रित किया जाएगा। दिल्ली में प्रवास कर रहे ट्रस्ट के महासचिव चंपत राय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से मुलाकात कर अयोध्या में मंदिर निर्माण की गतिविधियों की जानकारी देंगे और शिलान्यास के लिए आमंत्रित भी करेंगे जिसकी संभावित तिथि 2 जुलाई रखी गई है। राम जन्मभूमि परिसर में 11 मई से हो रहे समतलीकरण का कार्य लगभग पूरा हो गया है। गत 8 जून को रामकोट स्थित राम कचहरी चारों धाम में ट्रस्ट का कार्यालय भी खोला गया है। यहीं से मंदिर निर्माण की गतिविधियों को संचालित किया जाएगा।

भारत-चीन के बीच लद्दाख पर तनाव में कमी के संकेत

नई दिल्ली, एजेंसी। भारत और चीनी सेना ने मेजर जनरल स्तर की बातचीत के पहले तनाव में कमी के संकेत दिए हैं। घटनाक्रम से जुड़े सूत्रों के मुताबिक, दोनों सेनाएं सांकेतिक तौर पर पूर्वी लद्दाख के कुछ क्षेत्रों से पीछे हटी हैं। सैन्य सूत्रों ने कहा कि दोनों सेनाओं ने गलवान घाटी के पेट्रोलिंग प्वॉइंट 14-15 और हॉट स्प्रिंग क्षेत्र के आसपास से पीछे हटना शुरू किया है। चीनी सेना दो क्षेत्रों से डेढ़ किलोमीटर पीछे हटी है। हालांकि इस बारे में रक्षा मंत्रालय, विदेश मंत्रालय की ओर से कोई आधिकारिक बयान नहीं जारी किया गया है।

सूत्रों का कहना है कि दोनों सेनाओं ने सैनिकों के अलावा इन तीन इलाकों से कुछ अस्थायी ढांचा वहां से हटाया है। चीनी सेना ने कुछ तंबू भी वहां से हटाए हैं। एक वरिष्ठ सैन्य अधिकारी ने इसे सकारात्मक घटनाक्रम बताया है। वहीं चीनी विदेश मंत्रालय ने एक बयान में कहा कि दोनों देश वास्तविक नियंत्रण रेखा एलएसी पर शांति कायम रखने और बातचीत के जरिए गतिरोध को सुलझाने पर सहमत हैं। सूत्रों का कहना है कि दोनों सेनाएं पैंगोंग सो, दौलत बेग ओल्डी, डेमचोक जैसे क्षेत्रों में तो अपने मोर्चे पर डटी हैं और अगले कुछ दिनों में टकराव का समाधान खोजने के लिए कई दौर की वार्ताएं होंगी।

सूत्रों ने बताया कि दोनों पक्षों के बीच छह जून को सैन्य वार्ता के बाद सहमति बनी थी कि दोनों सेनाएं सांकेतिक तौर पर कुछ पीछे हटेंगी, ताकि सकारात्मक संदेश दिया जाए। इसका यह मतलब नहीं है कि सैनिकों की वापसी में बड़ा बदलाव आया हो। अभी भी बड़ी तादाद में चीनी सैनिक गलवान घाटी क्षेत्र में मौजूद हैं, जिस पर भारत ने आपत्ति जताई है।

पूर्वी लद्दाख क्षेत्र में भारत और चीन के बीच लगातार चल रहे तनाव और कम करने के लिए दोनों देशों के बीच मेजर जनरल स्तर की बातचीत होगी। फील्ड कमांडरों के बीच भी वार्ता होगी। उम्मीद की जा रही है कि कुछ और सकारात्मक नतीजे निकलेंगे। सेना के 14 कोर कमांडर लेफ्टिनेट जनरल हरिंदर सिंह और चीन के दक्षिणी शिंजियांग मिलिट्री डिस्ट्रिक के कमांडर मेजर जनरल लियु लिन के बीच पिछली वार्ता हुई थी। भारतीय और चीनी सैनिकों में पैंगोंग सो इलाके में पांच और छह मई को हिंसक झड़प हुई थी। इसके बाद से दोनों पक्ष वहां आमने-सामने थे और गतिरोध बरकरार था। यह 2017 के डोकलाम घटनाक्रम के बाद सबसे बड़ा सैन्य गतिरोध बन रहा था।

चीन से सटी सीमा वाले राज्यों में बुनियादी ढांचे पर जोर

चीन से सटी सीमाओं वाले राज्य में आधारभूत ढांचे की मजबूती को लेकर केंद्र सरकार गंभीर है। सरकार ने उन राज्यों को प्रोत्साहित करने का फैसला किया है जो चीन से सटे सीमावर्ती इलाकों में इंफ्रास्ट्रक्चर के लिहाज से बेहतर काम करेंगे। इन्हें विशेष प्रोत्साहन राशि दी जाएगी। सरकार ने सीमावर्ती राज्यों में इंफ्रास्ट्रक्चर बेहतर बनाने के लिए खास रणनीति बनाई है। यहां होने वाले कामकाज का फीडबैक सरकार सुरक्षा बलों से लेगी।

सूत्रों ने कहा, सीमावर्ती राज्यों में केंद्र प्रायोजित योजनाओं का दस फीसदी हिस्सा खर्च किया जाएगा। ये राशि इंसेंटिव के तौर पर रिजर्व रखी जाएगी। लद्दाख, अरुणाचल प्रदेश, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम जैसे राज्यों को योजना का लाभ मिलेगा। राज्यों को सहायता के दौरान अंतरराष्ट्रीय सीमा की लंबाई वहां मौजूद आबादी और काम का आकलन किया जाएगा।

सूत्रों ने कहा, सरकार सीमा से सटे विभिन्न सुदूरवर्ती इलाकों में विकास के काम को लेकर संजीदा है। इन इलाकों में ग्रामीणों का पलायन रोकने के लिए भी सरकार ने राज्यों को रणनीति पर काम करने को कहा है। सरकार का मानना है कि सीमा से सटे इलाकों में रहने वाले लोग देश के लिए संपत्ति हैं। ये सीमा की रखवाली में परोक्ष योगदान भी करते हैं। ह्यूमन इंटेलिजेंस के तौर पर इनकी अहम भूमिका है। इसलिए सरकार सीमावर्ती आबादी को ध्यान में रखकर बुनियादी सुविधाओं के विकास पर जोर दे रही है।

सूत्रों ने कहा, सरकार सीमावर्ती इलाकों में सभी तरह की बुनियादी सुविधाओं का विकास तेज करना चाहती है।ष् रणनीतिक लिहाज से महत्वपूर्ण इलाकों में ढांचा बेहतर करने के अलावा नागरिक इलाको में भी सुविधाओं के विकास की समन्वित रणनीति बनाई गई है। सीमावर्ती क्षेत्र विकास कार्यक्रम (बीएडीपी) के लिए इस साल 784 करोड़ रुपए आवंटित किए गए हैं, लेकिन सूत्रों ने कहा जरूरत के हिसाब से राशि का अतिरिक्त आवंटन रणनीतिक प्राथमिकताओं के मद्देनजर किया जा सकता है।

कमलेश भानपुरिया कोषाध्यक्ष और भगवतीलाल पोरवाल मीडिया प्रभारी नियुक्त

माही की गूंज, पेटलावद। गत दिनों सम्पन्न जिला चालक परिचालक संघ की बैठक में सर्व सहमति से परिचालक संघ की कार्यकरणी का गठन किया। जिसमें पेटलावद से कमलेश भानपुरिया कोषाध्यक्ष और भगवतीलाल पोरवाल को तहसील मीडिया प्रभारी का प्रभार दिए गए। पोरवाल को जिले में संगठन मंत्री का अतिरिक्त दायित्व भी दिया गया। साथ ही अमित अरोरा झकनावदा, गणपतसिंह सोलंकी बामनिया, मुश्ताक अहमद शेख पेटलावद , भेरूलाल मालवीय करवड़, गोवर्धनसिंह पंवार पेटलावद, मांगीलाल सीनम करवड़, इस्माइल सैलानी बामनिया, पूनमचंद सजोड़िया तारखेड़ी, भूपेंद्रसिंह चौहान रायपुरिया और गिरधारी पांडे सेमरोड को कार्यकरणी सदस्य बनाया गया। कार्यकरणी के सभी नए पदाधिकारियों और सदस्यों को बधाई परिचालक संघ ने बधाई दी है।

भाजपा ने सेनेटाईजर से हाथ धूलवाए व मास्क का किया विरतण

माही की गूंज, झाबुआ। कोरोना वायरस के संक्रमण को लेकर भाजपा द्वारा नगर के छतरी चौक पर कार्यकर्ताओं के द्वारा नगर में आने-जाने वाले लोगों को सेनेटाईजर से हाथ धूलवाए और साथ ही ऐसे लोग जिन्होने मुंह पर मास्क नहीं लगाए थे उन्हे मास्क वितरीत किए गए। साथ ही नगर में चौराहों पर ड्यूटी पर तैनात पूलिस कर्मियों का स्वागत सम्मान भी किया गया। इस अवसर पर सांसद गुमानसिह डामारे, प्रदेश कार्यकारिणी के सदस्य शैलेष दुबे, दौलत भावसार, धनसिंह बारिया, नगर मंडल अध्यक्ष बबलू सकलेचा, नाना राठौर, पूर्वेश कटारिया, महेश वर्मा, भूपेश सिगोड, अक्षय लौढा, अर्पित कटकानी, निलू मकवाना, अजय पोरवाल, विजय चौहान, कार्तिक हटिला, सत्येन्द्र यादव, अकुर पाठक, आदि उपस्थित थे।

भ्रष्टाचार की जांच करने बरवेट पहुंचे अधिकारी, निकली भारी लापरवाही

ग्राम पंचायतों में हो रहे भ्रष्टाचार पर नही हो रही कोई बड़ी कार्रवाई, जांच के नाम पर अधिकारियों का वसूली अभियान

माही की गूंज, पेटलावद।

ग्राम पंचायत बरवेट में वर्षो से किए जा रहे भ्रष्टाचार की शिकायत ग्रामवासियों द्वारा की गई थी, लेकिन मिलीभगत करते हुए अधिकारी जांच के नाम पर केवल आश्वासन देकर ग्रामीणों को मूर्ख बना रहे थे। माही की गूंज द्वारा ग्राम पंचायत में फैले भ्रष्टाचार को प्रमुखता से प्रकाशित किया। जिसके बाद अधिकारियों की नींद टूटी और मनरेगा एसडीओ घोंसले तथा जनपद सीईओ चौहान के नेतृत्व में जांच दल बरवेट पंचायत पहुंचा। ग्राम पंचायत के किए नए-पुराने कार्यों की जानकारी ली। जांच दल के साथ ग्रामीण और शिकायतकर्ता भी मौजूद रहे और ग्राम पंचायत के कार्यों में हुए भ्रष्टाचार से जांच दल को अवगत कराया। जांच दल के अधिकारियों से जब मामले में बात की तो उन्होंने बताया कि मौके पर पंचायत की भारी लापरवाही और भ्रष्टाचार दिख रहा है। हम जांच प्रतिवेदन बनाकर जिले के अधिकारियों को भेज देंगे। आगे की कार्यवाही जिले के अधिकारियों को ही करनी है।

मिले अधूरे किचन सेड, अधुरी आंगनवाड़ी से निकले जानवर

जांच दल ने पूरे ग्राम पंचायत क्षेत्र का दौरा किया। इस दौरान ग्राम पंचायत क्षेत्र की स्कुलों में बने लगभग सभी किचन शेड अधूरे पाए गए। किसी की छत, तो किसी का प्लास्टर, तो किसी के दरवाजे-खिड़कियां गायब मिले। ग्राम पंचायत अपने अधिकारियों की कार्यवाही से इतनी निडर हैं कि जुलवानिया फलिये में बनी आंगनवाड़ी जिसमें आस-पास के लोग बकरी और जानवर बांध रहे थे। खबर लगने के बाद भी स्थिति जस का तस रही और जांच के लिए मौके पर पहुँचे अधिकारियों ने आंगनवाड़ी से बकरे-बकरियां बाहर निकलवाए और वीडियो बनाया। आंगनवाड़ियों सहित बरवेट के फलियों में बने खेल मैदान जिनकों बनाने के लिए 03-03 लाख रुपए ग्राम पंचायत द्वारा खर्च किए गए थे। मौके पर सेक्टर के उपयंत्री अहिरवार से नपती करवाई गई, तो 50 हजार का काम होना तक भी नहीं पाया गया। इसी तरह सार्वजनिक कूप को भारी मशीनों से खुदवा कर फर्जी हाजरी भरने का मामला भी उजागर हुआ। यहाँ सहायक मंत्री के परिवार और लगभग 85 वार्षिय बुजुर्ग पिता जिनको आंख से ठीक से दिखाई तक नहीं देता, उनकी फर्जी हाजरी भरी हुई पाई गई। पंचायत के कई जीएसबी रोड के रोड गायब मिले। अशोक वाटिका में पौधा रोपण के नाम ग्राम पंचायत वर्षो से फर्जी आहरण कर रही हैं। जबकि मौके पर पौधे जीवित अवस्था में तो ठीक पौधे तक नहीं मिले। जिस तरह से ग्राम पंचायत बरवेट में भ्रष्टाचार और लापरवाही उजागर हुई है। यदि कार्यवाही हुई तो वर्तमान सरपंच, पूर्व सरपंच, पूर्व सचिव, रोजगार सहायक, उपयंत्री का जेल जाना तय है। उपयंत्री अहिरवार की कारिस्तानी फर्जी मूल्याकंन कर कैसे करवाया लाखो का गबन अगले अंक में करेंगे खुलासा।

ज्रांच के लिए पहुंचे अधिकारियों ने अधूरे पड़े आंगनवाड़ी में बंधी बकरियों को बाहर निकलवाया।

ज्रांच दल ने पंचायत के अन्य किए कार्यों का भी निरीक्षण किया जिसमें अनियमितता और भ्रष्टाचार पाया गया।

श्री गौवर्धननाथ मंदिर में शासन-प्रशासन के नियमानुसार भक्तजन कर रहे प्रभु के दर्शन

मंदिर के बाहर जिला प्रषासन के निर्देषों की सूचना चस्पा की

माही की गूंज, झाबुआ।

शहर के अति प्राचीन श्री गौवर्धननाथजी हवेली (श्री गौवर्धननाथ मंदिर) के पट शासन-प्रषासन के नियमानुसार 9 जून, प्रातःकाल से खुले है। यहां शासन-प्रषासन के नियमों की सूचना मंदिर के प्रवेष द्वार पर चस्पा की गई है। जिसका पालन करना प्रत्येक वैष्णवजनों एवं भक्तजनों को करना आवष्यक है। साथ ही मंदिर के अंदर भी भक्तजनों द्वारा सोषल डिस्टेनसिंग के पालन हेतु गोले बनाए गए है। आयोजन में फ्लिहाल केवल प्रातःकाल मंगला आरती एवं संध्याकाल को शयन आरती हो रही है। सामूहिक धार्मिक कार्यक्रमों पर मंदिर ट्रस्ट द्वारा फ्लिहाल रोक लगाई गई है।

श्री गौवर्धननाथ मंदिर ट्रस्ट ने शासन-प्रषासन के निर्देषों का पूर्णतः पालन करने का निर्णय लेते हुए मंदिर के प्रवेष द्वार पर सूचना चस्पा की है कि सभी वैष्णवजन एवं दर्षन के लिए आने वाले भक्तजन मंदिर में प्रवेष से पूर्व साबुन से हाथ धोएंगे। सभी भक्तजन मंदिर में शारीरिक दूरी (सोषल डिस्टेनसिंग) का पूर्णतः पालन करेंगे। मंदिर में मास्क पहनना एवं कपड़े से मुंह को ढकना अनिवार्य होगा। ठाकुरजी के दर्षन के पश्चात् मंदिर परिसर में अधिक समय तक बैठना अलाउ नहीं है। 10 वर्ष से कम उम्र के बच्चों एवं 65 वर्ष से अधिक उम्र के बुजुर्गों का मंदिर में प्रवेष निषेध रहेगा। सर्दी-खासी, जुखाम, बुखार जैसे लक्षण वाले व्यक्ति का मंदिर में प्रवेष निषेध रहेगा। शासन के नियमों के अनुसार प्रसादी वितरण फ्लिहाल बंद रहेगा। मंदिर को दर्षन के लिए प्रातःकाल 7.30 बजे मंगला आरती एवं शाम को शयन आरती के समय ही खोला जाएगा। ठाकुरजी के शेष सेवाक्रम मंदिर के भीतर ही हो जाएंगे। नियमों का उल्लंघन करने वालों पर मंदिर ट्रस्ट एवं प्रषासन द्वारा कार्रवाई की जाएगी।

सामूहिक धार्मिक कार्यक्रमों पर लगाई रोक

गोवर्धननाथ मंदिर में दर्षनार्थियों के लिए दूरी पर बैठने के लिए बनाए गए गोले।

श्री गौवर्धनानथ मंदिर के सवार्ध्यक्ष गोवर्धन श्री दिव्येषकुमारजी महाराज ने बताया कि फिलहाल कोरोना वायरस महामारी के प्रकोप के चलते सभी सामूहिक धार्मिक कार्यक्रमों पर मंदिर ट्रस्ट ने रोक लगाई है। केवल प्रातःकाल मंगला आरती एवं शाम को शयन आरती होगी। इस दौरान ही भक्तजन मंदिर के अंदर 3-3 मीटर की दूरी में बनाए गए गोले के अंदर खड़े रहकर आरती में शामिल होंगे। इसके अलावा दर्षन के लिए आने वाले भक्तजन भी इन गोलो में बैठकर दर्षन लाभ लेंगे। मंदिर ट्रस्ट शासन-प्रषासन के नियमों का पूर्णतः पालन करते हुए कोरोना वायरस जैसी महामारी से बचाव हेतु पूरी तरह से कृत-संकल्पित एवं तत्पर है। इसके साथ ही फ्लिहाल आरती के बाद माखन, चरणामृत, प्रसाद के वितरण पर भी रोक लगाई गई है।

निशक्तों तक नही पहुँच पा रही शासन की योजनाएं मंत्री-सरपंच दारू, मुर्गे और भ्रष्टाचार में मस्त

माही की गूंज, पेटलावद।

शासन द्वारा सैकड़ों योजनाओं के माध्यम से हर वर्ग और जरूरतमंद को साधने की कोशिश की जाती है। ग्राम पंचायत स्तर तक वर्ग अनुसार प्रमाण-पत्र बांटे जाते हैं। ताकि योजनाओं का लाभ आसानी से मिल सके। शासन ने योजनाओं के लाभ के लिए ग्राम पंचायतों में सचिव, सहायक सचिव को बिठाया। ताकि अंतिम छोर तक योजनाओं का क्रियान्वयन कर लाभ दिया जा सके। ग्राम पंचायत असालिया की असलियत हम पहले ही उजागर कर चुके हैं कि कैसे भ्रष्टाचार को बिना रोड बनाए पैसे निकाल कर डकारे जा चुके है, लेकिन ग्राम पंचायत इतनी लापरवाह होगी ये किसी ने नहीं सोचा होगा। पंचायत में रहने वाले निःशक्त और दिव्यांग लोगों को भी शासन की ओर से मिलने वाली पेंशन का लाभ तक नहीं दिलवाया जाएगा। पंचायत में ऐसे एक नहीं बल्कि कई ऐसे मामले है, जहां न केवल निःशक्त बल्कि बुजुर्ग और विधवा महिला पेंशन के लिए भटक रही हैं।

ग्राम असालिया की 31 वार्षिय भुण्डी पिता खीमा शारीरिक और मानसिक रूप से दिव्यांग हैं। पेंशन के लिए ग्राम पंचायत में भुण्डी के परिजन कई बार आवेदन दे चुके हैं, लेकिन आज दिन तक पेंशन शुरू नहीं हुई। भुण्डी के परिजनों की माने तो विगत 07 साल से पंचायत के चक्कर लगा रहे हैं पर आज तक पेंशन शुरू नहीं हुई। असालिया के रमेश पिता वीरजी बारिया भी शरीर से 40 प्रतिशत विकलांग हैं। भुण्डी कि तरह ये भी ग्राम पंचायत सचिव और सरपंच के चक्कर लगा-लगाकर हार गया हैं, लेकिन इनकी भी कोई सुनवाई आज तक नहीं हुई। असालिया की 60 वर्षीय बुजुर्ग महिला जो लकवाग्रस्त होकर शरीर का एक भाग पूरी तरह से काम नहीं करता। ग्राम पंचायत को कई बार कहने पर भी किसी प्रकार की पेंशन का लाभ नहीं दिया गया। ये ऐसे कुछ मामले है जो अब तक हमारे सामने केवल असालिया से आए हैं। कई और भी लोग पंचायत व उसके दूसरे फलियों में है। जिसमें अधिकांश महिलाएं हैं, उनको बुजुर्ग पेंशन, विधवा पेंशन, विकलांग पेंशन योजना का लाभ नहीं मिल सका हैं। जबकि राज्य और केंद्र सरकारों द्वारा महिलाओं, बुजुर्गों और दिव्यांगों के लिए बड़े-बड़े दावे भरे जाते है। जो केवल कागजी रेकॉर्ड में दिखते हैं जमीन पर नहीं। पंचायतों के भ्रष्टाचार को दबाकर अपना पेट भर रहे अधिकारी और सरपंच-सचिव में थोड़ी सी भी गैरत बची हो तो कम से कम ग्राम पंचायत स्तर पर केम्प लगाकर ऐसे जरूरतमंदों तक शासन की योजनाओं का लाभ पहुंचा दें। क्योंकि पैसा सरकार की जेब से जाना है खुद की जेब से नहीं।

डॉ. चंचल की 'तपती गर्मी और हम-तुम' का हुआ विमोचन

माही की गूंज, झाबुआ।

प्रख्यात साहित्यकार, नई कविता के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. रामशंकर चंचल की ताजा कविता 'तपती गर्मी' और 'हम तुम' का सोमवार को सुबह स्थानीय गोपाल कॉलोनी स्थित मां सदन में जिला युवक कांग्रेस अध्यक्ष तथा विधायक प्रतिनिधि डॉ. विक्रांत भूरिया ने विमोचन किया। विमोचन अवसर पर डॉ. विक्रांत भूरिया ने कहा कि राजनीति से सुदूर शहर के सरस्वती पुत्र डॉ. रामषंकर चंचल ने अपनी रचनाओं के माध्यम से राष्ट्रीय के साथ अंर्तराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है। इस अवसर पर डॉ. चंचल ने अपनी कृतियों का परिचय देते हुए बताया कि 'तपती गर्मी' कविता का शीर्षक मेरी पाठ्यक्रम से ली गई कविता का शीर्षक है। यह कविता राष्ट्रीय स्तर पर भी सम्मानित हो चुकी है। यह आदिवासी अचंल पर आधारित नई कविताओं का संग्रह है। वहीं 'हम तुम' दार्शनिक प्रेम कविताओं का संग्रह है। अंत में प्रदीप पंड्या ने आभार माना।

पूरे एहतियात के साथ हो रही परीक्षाएं

माही की गूंज खवासा/परवलिया

कोविड-19 (कोरोना संक्रमण) के चलते स्थगित की गई हाई सेकेंडरी स्कूल परीक्षा संक्रमण के बचाव व कोरोना संक्रमण के भय के बीच दो पालियों में संपन्न हुई। लगभग 70 दिनों बाद हुई परीक्षा में तमाम स्थितियां बदली हुई थी। विद्यार्थियों के लिए सोशल डिस्टेंसिंग के साथ ही सैनिटाइजर, मास्क व थर्मल स्क्रीनिंग की व्यवस्था बोर्ड द्वारा की गई थी। एतिहात के बतौर निर्देशानुसार किसी परीक्षार्थी को किसी प्रकार का स्वास्थ्य खराब होने की दशा में परीक्षार्थी को अलग कक्ष में परीक्षा दिलवाने हेतु विशेष कक्ष की व्यवस्था के साथ शिक्षक की भी ड्यूटी विशेष कक्ष हेतु अलग से की गई थी। यही नहीं विद्यार्थियों के लिए भी विस्तृत दिशा-निर्देश भी जारी किए गए थे। 9 मई को खवासा की बालक हाई सेकेंडरी स्कूल में केन्द्राध्यक्ष प्रेमलता निनामा के अनुसार सुबह रसायन के पेपर में कुल 32 विद्यार्थियों में से 31 ने परीक्षा दी और 1 अनुपस्थित रहा। वहीं दोपहर में भूगोल के पर्चे में 40 में से 39 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी। खवासा के एक अन्य केंद्र कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय में भी कोविड-19 से बचाव के तरीके को अपनाकर परीक्षा संपन्न करवाई गई। यहां केन्द्राध्यक्ष किरण बाला चौहान ने बताया कि रसायन के पर्चे में 49 में से 46, भूगोल के पर्चे में 54 में से 52 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी। 10 मई को शा.क.उ.मा.वि केन्द्र पर बुक-कीपिंग एंड एकांउटेन्सी के पेपर में 11 में से 10 परीक्षार्थियों ने परीक्षा दी 1 अनुपस्थित रहा।

इसी प्रकार परवलिया प्रतिनिधि भावेश चौहान अनुसार परवलिया की शासकीय उ.मा.वि. केंद्र पर परीक्षा के एक दिन पूर्व ही सरपंच खुशाल सिंगाड व सचिव रामचंद मालीवाड द्वारा परीक्षा हॉल को सेनेटाइज करवाया गया। मंगलवार को केंद्राध्यक्ष भूरालाल चौहान के अनुसार सुबह रसायन के पेपर में 56 परीक्षार्थी में से 1 अनुपस्थित रहा वही भूगोल का कोई परीक्षार्थी नहीं था जिसके कारण एक ही चरण में परीक्षा हुई।

अतिथि विद्वानों के भविष्य का जिम्मा अब शिवराज सरकार के पास

माही की गूंज, झाबुआ।

अतिथि विद्वानों के नियमितीकरण की जवाबदारी अब शिवराज सरकार ने ली हैं। दिसंबर से मार्च तक चलें भोपाल में जीवन रक्षा का ऐतिहासिक आंदोलन का हिस्सा सीएम शिवराजसिंह चौहान, गृहमंत्री नरोत्तम मिश्रा, गोपाल भार्गव, शीताशरण शर्मा आदि रहें है। जिन्होनें पूर्व कमलनाथ सरकार पर यथावत रखनें व नियमित करनें के लिए धरना स्थल ही नहीं सोशल मीडिया में भी टवीट करके आंखे खोलने का दबाव बनाया था। विपक्ष में रहकर भी विधानसभा में पूरी ताकत के साथ नियमितीकरण मुद्दा उछाला था। यही नहीं 9 जून को सुसनेर जिला आगर मालवा में आगमन पर सीएम ने अतिथि विद्वानों के प्रतिनिधि मंडल को प्राथमिकता से नियमितीकरण मुद्दे को हल करने का भरोसा दिया हैं। इससे पूर्व बीजेपी के कई मंत्री और विधायको से इसी मामले पर आश्वासन मिल चुकें हैं। इतना ही नहीं 16 दिसंबर 2019 को धरना स्थल पर स्वंय सीएम शिवराजसिंह चौहान सभी को नियमित करने की हामी भर चुकें हैं। इसलिए यह मामला हल होना लाजिमी हैं।

अतिथि विद्वान मोर्चा के मीडिया प्रभारी शंकरलाल खरवाडिया ने बताया कि, यह व्यवस्था सन 2002 से कालखण्ड दर से चलीं आ रही हैं। इससे पूर्व अंशकालीन सहायक प्राध्यापक के नाम से थी। इस तरह अपने जीवन का अमूल्य हिस्सा हमने चपरासी से भी कम वेतन पाकर गुजार दिया। लगातार उच्च शिक्षा विभाग को सेवा देते आए हैं। अतः सेवा और अधिक उम्र होने से नियमित करना आवश्यक हैं। ऐसे मोड़ पर कहां जाऐंगें।

पीएम आवास की राह देख रहे हितग्राही के मकान का हिस्सा गिरा, बड़ी दुर्घटना टली

अब तो जागो सांसद और प्रशासन या लोगों की लाशों पर घर बनाओगे

माही की गूंज, पेटलावद।

लगभग दो साल से ऑफिसों की खाक छान रही नगर परिषद पेटलावद के अंतर्गत 202 पीएम आवास योजना की फाइल के कारण अब नगर के हितग्राहियों को परेशान होना पड़ रहा है। कल जोरदार हवा के साथ हुई तेज बारिश के कारण नगर के भोई मोहल्ला निवासी रमनलाल प्रजापत के मकान के एक हिस्सा बुधवार सुबह भरभरा कर गिर गया। गनीमत रही दीवार घर के बाहरी हिस्से में गिरी और उस दौरान कोई व्यक्ति मौके पर मौजूद नहीं था। दीवार की चपेट में आकर दुपहियां वाहन और ठेलागाड़ी पूरी तरह से टूट गई। नगर में आवास योजना की स्वीकृत हो चुकी फाइल के दो साल से अटके होने के कारण नगर में कई परिवार परेशानी से घिरे हुए है। वार्ड के पार्षद पति संजय कहार का जिला प्रशासन पर आवास की स्वीकृत राशि का आवंटन की मंजूरी नहीं होने पर गंभीर आरोप लगाया है। वहीं नगर परिषद के सीएमओ लालसिंह राठौर कहना है कि हम अपनी ओर से पूरे प्रयास कर रहे हैं। जल्द ही आवास के हितग्राहियों को पहली किश्त का भुगतान कर दिया जाएगा।

चंचल की ताजा कृति 'महुआ' का अंतराष्ट्रीय स्तर पर चयन

माही की गूंज, झाबुआ। प्रख्यात साहित्यकार डॉ रामशंकर चंचल की ताजा कृति महुआ को नई दिल्ली से प्रकाशित प्रख्यात अंतराष्ट्रीय पत्रिका आखर ने प्रकाशित किया। अंतराष्ट्रीय स्तर पर चयन समिति ने 'महुआ का चयन किया' महुआ आंचलिक सजीव जीवंत कथा हैं।

महुआ का पेड़ कालूबा की जिंदगी थी उसकी रोजी-रोटी थी एक दिन उसका भाई वेलु ने पेड़ को लेकर विवाद किया । अंत में उसने गुस्से में आकर पेड़ को काट दिया कालूबा रोते रहें और उसने वेलु को पुलिस में जाने की धमकी दी ।भयभीत वेलु ने जिस कुल्हाड़ी से पेड़ को काटा था। उसी कुल्हाड़ी से कालूबा को काट दिया। कहानी बेहद मार्मिक जीवंत और कालजयी है ।यही वजह है कि अंतराष्ट्रीय चयन समिति ने डॉ रामशंकर चंचल की इस कहानी को अंतराष्ट्रीय पत्रिका के लिए चयनित किया ।सचमुच यह गर्व का विषय है कि झाबुआ के रचनाकार डॉ चंचल की रचना अंतराष्ट्रीय स्तर पर आज चर्चित हो रही है।

झाबुआ नगर मंडल अध्यक्ष पद पर कई दावेदार सक्रिय

माही की गूंज, झाबुआ। भाजपा नगर मंडल झाबुआ के नवीन कार्यकारिणी का गठन केक का वायर नगर के भाजपा कार्यकर्ताओं में चालू हो गई है नगर मंडल के अध्यक्ष पद पर कई पदाधिकारी और प्रमुख कार्यकर्ता अपना अपना दावा ठोक रहे हैं। झाबुआ नगर मंडल के अध्यक्ष पद पर प्रमुख रूप से प्रथम नाम के रूप में अंकुर पाठक, दूसरे प्रबल दावेदार के रूप में राजा ठाकुर, नाना राठौड़, पार्षद अजय सोनी, प्रवेश कटकानी, पर्वत मकवाना, जुवान सिंह गुंडिया, पार्षद पपीष पानेरी आदि कई नाम उभर कर सामने आए हैं। देखना यह है कि भाजपा जिला अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह नायक किसको नगर मंडल अध्यक्ष पद की दावेदारी सौपते है। उपरोक्त सभी दावेदार अपने अपने स्तर पर अध्यक्ष बनने हेतु अपने-अपने स्तर पर जी तौड मेहनत कर अध्यक्ष पद की दौड में शामिल हो रहे है।

सरपंच कर रही भाजपा समर्थकों को परेशान

नारकीय जीवन जीने को मजबूर वार्ड क्रमांक 20 के रहवासी

माही की गूंज, बामनिया। गौरव भंडारी

बामनिया जिले भर में अपने घोटालों के लिए चर्चा में बनी रहने वाली बामनिया पंचायत अब भाजपा कार्यकर्ताओं और भाजपा समर्थित जनता को परेशान करने पर आमादा हैं। वार्ड क्रमांक 20 जो अनुसूचित जाति और जनजाति बाहुल्य बस्ती हैं और यहां के रहवासी वर्षों से भाजपा को समर्थन करते आ रहे है, लेकिन इनके बुरे दिनों की शुरूआत हुई जब वर्तमान सरपंच चुनाव जीतकर आई। उसके बाद से इनकी बस्तियों में जल प्रदाय, नालियों की सफाई, कचरा वाहन जैसी सुविधाएं बंद कर दी गई। अचानक इस भेदभावपूर्ण रवैये से हतप्रभ रहवासी शुरुआत में इसे नए सरपंच की कोई नई योजना का हिस्सा मानकर मोन रहे, लेकिन धीरे-धीरे इस भेदभावपूर्ण रवैये को समझने लगे। वार्ड क्रमांक 20 के पश्चिमी भाग में जाने के लिए एकमात्र रास्ता है। उस रास्ते पर कच्ची नाली है। जिसका पानी रास्ते पर फैला रहता है और गंदगी से पटा पड़ा हुआ हैं। उस मार्ग पर सीमेन्ट कंक्रीट कर पक्की नाली निर्माण की मांग करते हुए मोहल्ले के बाशिंदों को विगत तीन वर्ष से अधिक समय व्यतीत हो गया, लेकिन कोई सुनवाई पंचायत द्वारा नहीं की गई। कई बार लोगों ने पंचायत में आवेदन दिए मगर भ्रष्टाचार की वैतरणी में डुबकी मारने वालों को इन गरीब लोगों की तकलीफ दिखाई नहीं दे रही हैं, पानी का टेंकर तक नहीं पहुंच सकता। यहां तक कि कचरा परिवहन करने वाला वाहन भी इस बस्ती में नहीं भेजा जाता है। जिसके कारण मजबूरी में यहां के लोग अपना कचरा फेंकने खुद आधा किलोमीटर दूर पैदल चलकर जाते है। सबसे ज्यादा परेशानी का सामना करना पड़ता है बारिश में, जब 100 से अधिक घरों की गंदगी एक साथ बारिश के पानी के साथ इस बस्ती में घुस जाती हैं और पूरी बारिश यहां के लोगों को जहरीले जीव-जंतुओं से खतरा बना रहता है। तमाम मूलभूत सुविधाओं के अभाव में जीवन काटने वाले इन लोगों ने

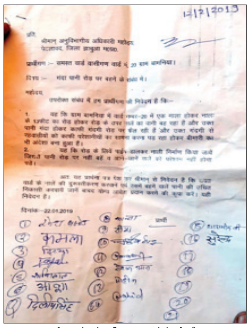

कई बार आवेदन देकर शिकायत कर चुके है वार्डवासी।

सरपंच की उपेक्षा का शिकार हुए वार्ड नं २० में इस तरह पसरी रहती है गंदगी।

अनुविभागीय अधिकारी राजस्व पेटलावद को भी आवेदन किया था। किंतु कहते है गरीब का कोई नहीं होता। वहां भी स्वयंभू सरपंच जो पूर्वाग्रह से ग्रसित होकर इन लोगों को हेय दृष्टि से देखता है ने उन तमाम आवेदनों के बारे में तथा निर्माण की मांग को राशि का अभाव बताकर अधिकारियों को भृमित कर दिया और इस बस्ती के रहवासियों को ज्यादा प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। एक ईंट भी नहीं लगेगी जैसे शब्दों का प्रयोग करने लगे। गरीब लोग जो रोजी रोटी के लिए दिनभर संघर्ष करते हैं वो इस धनाढ्य समर्थक सरपंच से बैर ले उसके चुनौती भरे प्रताड़ना के शब्दों से मुकाबला करने के बजाए गंदगी, अंधेरे और अव्यवस्था को अपनी नियति मानकर फिर से कोई नया सरपंच आएगा वो काम करेगा कहकर अपने जीवन संघर्ष में जुट जाते है।

अनुसूचित जाति, जनजाति के लोग इस मोहल्ले में रहते हैं। यहां सरपंच द्वारा विगत तीन वर्षों से अधिक समय से भेदभावपूर्ण रवैया अपनाया जा रहा है जो कि पंडित दीनदयाल उपाध्याय की अंत्योदय की परिकल्पना तथा भारतीय जनता पार्टी की रीति-नीति के खिलाफ है। भाजपा समर्थित सरपंच होकर भाजपा के लोगों तथा मतदाताओं के साथ दोहरा मापदंड अपनाया जा रहा है। जिसकी शिकायत में मुख्यमंत्री और भाजपा प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा से करूंगा और इस सरपंच के पूरे कार्यकाल की जांच भी करवाऊंगा।

रमेशचंद्र बसोड़ पूर्व जिला महामंत्री भारतीय जनता पार्टी अनुसूचित जाति मोर्चा झाबुआ।

वर्तमान सरपंच का अभीतक का पूरा कार्यकाल विवादों से घिरा हुआ है और भाजपा सरपंच ने आदिवासी हरिजन वर्ग के लोगों को केवल अपना वोट बैंक बना रखा है। उनकी बस्तियों में कोई भी विकास कार्य नहीं किया गया है। जिस तरह से वार्ड क्रमांक 20 के लोग गंदगी और अभाव का नारकीय जीवन जी रहे है उसके लिए बामनिया की भाजपा समर्थित सरपंच जिम्मेदार हैं और जिस तरह से भ्रष्टाचार की खबरें आ रही है। उसके बाद तो सरपंच को खुद ही नैतिकता के आधार पर इस्तीफा दे देना चाहिए और अब भी इसी तरह भ्रष्ट कार्यशैली नहीं छोड़ी तो बामनिया पंचायत की जांच की मांग की जाएगी।

कय्यूम शेख, ब्लॉक कांग्रेस महामंत्री पेटलावद।

बामनिया में वार्ड क्रमांक 20 कहा है मेरी जानकारी में नहीं है। हमने दो वर्ष पूर्व कार्य के प्राक्कलन तैयार कर शासन को भेजे हैं किंतु विगत दो साल से एक भी पैसा निर्माण कार्य के लिए सरकार द्वारा नहीं दिया गया है। जब भी मप्र शासन पैसा देगा पूरे गांव के रोड नाली बनवा दिए जाएंगे।

भेरूलाल मैड़ा, प्रभारी सचिव ग्राम पंचायत बामनिया।

मुख्य नाले के अधूरे पड़े निर्माण के कारण घरो में पानी घुसा

कानवन रोड वार्ड क्रमांक 08 के रहवासियों के बारिश की शुरुआत में ही ये हालत है तो आगे क्या

माही की गूंज, पेटलावद।

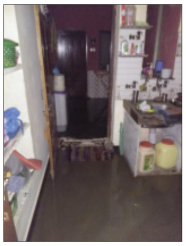

बीती रात पेटलावद नगर में हुई हुई बारिश की वजह से नगर कई घरों में पानी घुस गया। जिससे रह वासियों को बड़ी परेशानियों का सामना करना पड़ा। खासकर कानवन रोड़ वार्ड क्रमांक 08 के लोगों की पूरी रात घरों से पानी और मुख्य मार्ग पर अधूरे पड़े नाले की गंदगी जो पानी के साथ घरो में घुस गई निकलते हुए गुजरी। लम्बे समय से वार्ड क्रमांक 08 का नाला निर्माण अधूरा पड़ा है, लेकिन पेटलावद नगर परिषद की नींद नही खुल रही है। आज से साल भर पहले कानवन रोड पर यह नाला खोदा गया था, जो आज तक पूरा नहीं हो सका है। वार्डवासियों की लगातार शिकायतों सहित अखबारों के माध्यम से उक्त समस्या की और ध्यान आकर्षित किया जा चुका है, लेकिन नगर परिषद के अध्यक्ष, पार्षद जगदीश जाटव और मुख्य नगरपालिका अधिकारी को बार-बार कहने पर भी इसका कोई निराकरण नहीं किया गया। इस गटर की वजह से मच्छर-मक्खियां हो रही है और बहुत गंदगी हो रही है। जो प्रधानमंत्री के स्वच्छता अभियान पर किए जा रहे लाखों के खर्च की पोल खोल रही है। अभी बारिश का मौसम शुरू भी नहीं हुआ है और पहली बारिश में नाले का कीचड़ लोगों के घरों में घुस गया। तो आगे की स्थिति का सहज ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

यहां के रहवासी महेंद्र सोनी, राजेश, शंकरलाल, अमित सुक्ला ने बताया कि कई बार पार्षद को भी समस्या के बारे में बताया गया, पर कोई भी निराकरण नहीं किया गया है। आज फिर से नगर परिषद में आवेदन देकर नाला बनाने की मांग कर इस समस्या से निजात दिलाने की मांग नगर परिषद से की है। इससे पहले भी नगरपालिका में आवेदन दे चुके हैं, लेकिन अभी तक कोई भी जिम्मेदार व्यक्ति सामने नहीं आया है और समस्या का समाधान नहीं हुआ है।

तेज आंधी और हवा के साथ हुई बारिश

माही की गूंज, झाबुआ। बुधवार 10 जून शाम ढलते ही मौसम बदलाव आया करीबन 1 घंटे तक तेज हवा, आंधी और धूल के गुबार उठते रहे। आसमान बादल गर्जना के साथ हल्के फुल्के बूंदाबांदी से शुरू बारिश थोड़ी ही देर में तेज हो गई और नगर की सड़कों पर पानी बह निकला। झाबुआ सहित जिले के कई क्षेत्रों में किसानों ने बोनी का कार्य चालू कर दिया है वही किसानों की भीड़ खाद-बीज और दवे के व्यापारियों के यहां लगने लगी है गत दिनों दावा जिले में कई स्थानों पर तेज बारिश हो जाने से नदी नालों में भी पानी आ गया था जिसके चलते इसके चलते किसानों ने बोनी खेतों में चालू कर दिए।

अब कालीघाटी पंचायत में आया बिना रोड बनाए पैसे निकालने का मामला

लॉकडाउन से पहले कलेक्टर से हुई थी शिकायत, अब तक नही हुई सुनवाई

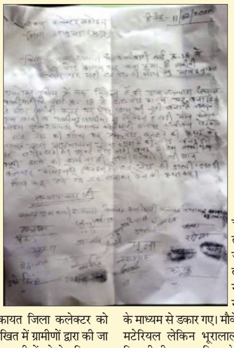

माही की गूंज, पेटलावद।

गूंज की पंचायत भ्रष्टाचार को उजागर करने की मुहिम ने भले ही अधिकारियों में वसूली अभियान छेड़ रखा हो, लेकिन गूंज के पास अब ऐसे मामले आमजन पूरे विश्वास के साथ लेकर आ रहे हैं और हमारी कलम तब तक नहीं थकने वाली जब तक भ्रष्टाचार करने वाले और उनके भ्रष्टाचार के भागीदार, बढ़ावा देने वाले जेल की हवा नहीं खा ले। असालिया, खोरिया, टेमरिया, मोहकमपुर, महूडीपाड़ा कला, मोहनपुर, टेमरिया, बाछीखेड़ा, बरवेट, जामली, बामनिया जैसी कई पंचायतों में काले कारनामें उजागर कर चुके हैं, लेकिन कार्यवाही के नाम पर केवल वसूली की गई है। विकास खण्ड की एक और पंचायत में ऐसा मामला सामने आया है। जहां बिना सीसी रोड़ बनाए पंचायत ने पूरी राशि डकार ली। शिकायत जिला कलेक्टर को 11मार्च 2020 को की लिखित में ग्रामीणों द्वारा की जा चुकी हैं, लेकिन अब तक न ग्रामीणों को रोड मिला, न भ्रष्टाचार करने वालों को कोई सजा। ग्राम पंचायत कालीघाटी के रूपापाड़ा फलिये के वार्ड नंबर 18 में वर्ष 2017 में 05 लाख 35 हजार की लागत से माता जी चौक से बाबू पूना के घर तक सीसी रोड बनना था, जो आज तक नहीं बना। लेकिन रोड के लिए स्वीकृति राशि पंचायत के सरपंच-सचिव फर्जी बिलों के माध्यम से डकार गए। मौके पर रोड नहीं है, न ही कोई मटेरियल लेकिन भूरालाल हटिला, श्री हाडवेयर, गिरधारी हीरालाल हटिला के नाम से हजारों के फर्जी बिल भुगतान कर दिए गए। रूपापाड़ा के ग्रामीण मामले की गुहार मय सबूत और मौके के फोटो के साथ जिला कलेक्टर को आवेदन दे चुके हैं। ग्रामीणों का कहना है कि उनके द्वारा कई बार ग्राम पंचायत के सरपंच-सचिव से रोड बनाने का कहा गया, लेकिन आश्वासन के आलावा कोई काम नहीं हुआ। ग्रामीणों के हित और विकास के उद्देश्य से आया रोड पूरी तरह से भ्रष्टाचार की भेंट चढ़ गया, लेकिन भोले-भाले ग्रामीणों ने कलेक्टर से शिकायत की भी। रोड नहीं होने से हो रही परेशानी और स्वीकृत रोड़ जल्दी बनवाने की। जबकि ग्राम पंचायत द्वारा खुला भ्रष्टाचार होने के बाद भी ग्राम पंचायत सरपंच और सचिव की कोई शिकायत नहीं की। ऐसे भोले-भाले ग्रामीणों को स्वार्थी सरपंच और सचिव अधिकारियों के साथ मिलकर लूट रहे हैं और जवाबदार फिर भी मुकदर्शक बनकर तमाशा देखकर अपनी जेब भर रहे हैं।

बोर्ड परीक्षा के शेष पेपरो के लिए विद्यार्थियों की परीक्षा केन्द्र मे प्रवेश पूर्व की स्क्रीनिंग

माही की गूंज, झाबुआ। माध्यमिक शिक्षा मंडल भोपाल द्वारा आयोजित होने वाले बोर्ड परीक्षा के शेष पेपरों की परीक्षा मंगलवार 9 जून से शुरू हुई है। जिसमें विद्यार्थियों को परीक्षा केन्द्र में प्रेवश से पूर्व स्क्रीनिंग कर सेनेटाईजर से हाथों को धुलवाया गया और मास्क पहनकर ही परीक्षा कमरे में प्रवेश कराया गया। कोरोना के चलते माशिम बोर्ड की कक्षा 12 की परीक्षाएं जो स्थगित की गई थी उन्हे पुन लिया जा रहा है। परीक्षा केन्द्रों पर स्वास्थ्य विभाग की टीम भी उपस्थित रहकर हर एक विद्यार्थी की जांच कर ही उसे प्रवेश दिया गया। परीक्षा सुबह 8 बजे से शुरू होकर शाम 5 बजे तक चली। जिसमे दो शिफ्टो में बोर्ड के पेपर लिये गये। वही विद्यार्थियों को सोश्यल डिस्टेसिंग का पालन करने की हिदायत देकर ही उन्हे परीक्षा केंद्रों मे सम्मिलित किया गया। बोर्ड परीक्षा 16 जून तक यथावत चलेगी। प्रतिदिन विद्यार्थियों की स्क्रीनिंग के साथ ही सेनेटाईजर से हाथ धूलाई एवं मास्क पहने होने पर ही प्रवेश दिया जायेगा।

केंन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने वर्चुअल रैली को संबोधित किया

माही की गूंज, झाबुआ। बुधवार को जिले भर के भाजपा पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने नागपुर से संबोधित कर रहे भाजपा के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी को वर्चुअल रैली के माध्यम से सुना। इस अवसर पर झाबुआ जिले के संगठित मंडलों में भाजपा पदाधिकारी रैली में शामिल हुए। जिला भाजपा कार्यालय झाबुआ में भाजपा जिला अध्यक्ष लक्ष्मण नायक के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने केन्द्रीय मंत्री नितिन गडकरी को सुना वही वर्चुअल रैली के जिला प्रभारी दौलत भावसर ने अपने कार्यालय में श्री गडकरी को सुना। जिले के 19 मंडल के अध्यक्ष महामंत्री एवं पदाधिकारी जो ने भी रैली के संबोधन को सुना।

वर्चुअल रैली मदन में केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने दिल्ली मुंबई ट्रैक सड़क मार्ग का जिक्र करते हुए कहा कि उक्त रोड झाबुआ जिले के आदिवासी क्षेत्र से निकल कर मुंबई पहुंचेगा। जिसके तहत नागरिक महान से दिल्ली से मुंबई 12 घंटे में पहुंच जाएंगे। इससे आदिवासी क्षेत्रों का भी विकास होगा। उक्त घोषणा का स्वागत करते हुए भाजपा के प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य दौलत भावसर, भाजपा जिला अध्यक्ष लक्ष्मण नायक ने नितिन गडकरी देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और प्रदेश के मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए खुशी जाहिर कर करके इन नेताओं को धन्यवाद ज्ञापित किया। झाबुआ भर्ती रैली में नगर मंडल अध्यक्ष बबलू सकलेचा, उपाध्यक्ष अंकुर पाठक, महामंत्री नाना राठौड़, जिला उपाध्यक्ष अजय पोरवाल, सायरा बानो, ओपी रॉय, नरेंद्र राठौरीया, अर्पित कटकानी, सत्यम यादव, पर्वत मकवाना, प्रवीण सुराणा, अमरो डामोर, महेंद्र तिवारी, गोविंद अजनार, राजेश मेहता सहित बड़ी संख्या में कार्यकर्ता पदाधिकारी उपस्थित थे।

संपादकीय

बेजुबान जानवरों पर हिंसक और दरिंदगी भरा प्रयोग

क्या 'भगवान के देश' केरल में एक गर्भवती हथिनी की बेरहमी और क्रूरता से हत्या की जा सकती है? क्या इस 'आदर्श राज्य' में बारूद खुला मिलता और बिकता है? क्या घरों में फलों वाले बम भी बनाए जाते हैं? अत्यंत विस्फोटक और खतरनाक संकेत हैं! ये सिर्फ सवाल नहीं हैं, बल्कि सत्यापित सच हैं। एक साथ दो-दो हत्याएं! हथिनी की कोख में बच्चा भी पल रहा था। उस अजन्मे बच्चे को तो अभी यह दुनिया देखनी थी, लेकिन मां के साथ वह भी मारा गया। कमोबेश केरल के संदर्भ में यह सांस्कृतिक और पारंपरिक मूल्यों की हत्या करार दी जा सकती है। केरल में मंदिरों से जुड़े उत्सवों और जुलूसों में हाथी की उपस्थिति किसी आस्था से कम नहीं है, लेकिन क्रूरता, हैवानियत और पाशविक प्रवृत्ति इतने चरम पर रही होंगी कि गर्भवती हथिनी को भी नहीं छोड़ा। उसे विस्फोटक फल खिला कर हत्या कर दी गई। बेशक कई राज्यों में जंगली सूअर, भालू, बंदर आदि जानवरों के लिए फलों वाले विस्फोटक तैयार किए जाते रहे हैं। अनानास ही नहीं, पपीता, तरबूज में भी पटाखे लगाकर रखे जाते हैं। जानवर उन्हें खाने की कोशिश करते हैं, तो वे फट पड़ते हैं और जानवरों के जबड़े क्षतिग्रस्त हो जाते हैं। जानवरों की मौत भी हो जाती है। यह हिंसक और दरिंदगी भरा प्रयोग फसलों को बचाने के मद्देनजर किया जाता रहा है। केरल में इस घटना के बावजूद सैकड़ों बारूद वाले फल बरामद किए गए हैं। ये विस्फोटक फल किसी भी जानवर के मुंह तक पहुंच सकते हैं। हथिनी को भी पटाखों वाला अनानास खिलाया गया था। उस अबोध, बेजुबान, संयमी और मानव-प्रिय जानवर को क्या ज्ञान, एहसास था कि वह फल उसके मुंह के भीतर विस्फोट करेगा। नतीजतन उसका जबड़ा, जुबान से लेकर फेफड़े तक क्षतिग्रस्त हो जाएंगे। यकीनन यह जानलेवा हरकत इनसानी नहीं हो सकती। हत्यारे इनसान का मुखौटा पहने कोई हिंसक जानवर ही हो सकते हैं। पूर्व केंद्रीय मंत्री एवं जानवर-प्रेमी शख्सियत मेनका गांधी के मुताबिक, केरल में सालाना करीब 600 हाथियों की मौत होती है। सभी अप्राकृतिक मौतें और हत्याएं3! एक वन्य जीवन विशेषज्ञ ने खुलासा किया है कि 93 फीसदी साक्षर, सुसंस्कृत, सभ्य और आदर्श राज्य केरल में विस्फोटक फलों से जानवरों, खासकर हाथियों, को मारने की एक खास मानवीय प्रवृत्ति है। अजीब दानवी प्रवृत्ति है यह! कमोबेश ऐसी प्रवृत्ति वाली हमारी भारतीय संस्कृति नहीं हो सकती। हाथी को तो भगवान गणपति गणेश का प्रतीक माना गया है। क्या 'भगवान के देश' में ही भगवान की हत्या की जा सकती है? वह गर्भवती हथिनी भूखी थी, लिहाजा ग्रामीण इलाके की तरफ गई थी। विस्फोटक फल खिलाने के बाद जरा उसकी अनंत, असहनीय पीड़ा और दर्द की कल्पना करें, उसे महसूस करें। काश! हथिनी की खामोश अभिव्यक्तियां और दर्द की कराहें भीतरी आत्मा से सुनी-समझी होतीं, तो मानवता दहल उठती, दानवता पिघल उठती। यह हथिनी और उसके अजन्मे शिशु की मौत नहीं, बल्कि इनसानियत के समापन की शुरुआत है। बेशक जानवर मारे जाते रहे हैं, उनका शिकार किया जाता है, उनके जरिए व्यापार किए जाते हैं, जानवर दुर्घटनाओं में भी मारे जाते रहे हैं, लेकिन हथिनी गर्भवती थी। कानूनन न तो किसी जानवर को मारा जा सकता है और न ही उनके अभयारण्य पर कब्जे किए जा सकते हैं, लेकिन दोनों ही अपराध किए जा रहे हैं, जबकि वन्य जीवन संरक्षण अधिनियम में सात साल की कड़ी सजा का प्रावधान है। दुर्भाग्य और विडंबना है कि अपराधी अक्सर 25,000 रुपए का जुर्माना देकर छूट जाता है। वन्य जीवों के अभयारण्य के लिए भी पांच फीसदी से कम जमीन बची है। निगाहें उस पर भी टिकी हैं। हाथी को तो मनुष्य का साथी जीव माना जाता रहा है। उस हथिनी ने भी दर्द सहे, तीन दिन पानी में बसी रही शायद जुबान को ठंडक देने के लिए, अंततः तीन दिन के बाद 'नि:शब्द' हो गई। बेशक केंद्रीय पर्यावरण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर ने जांच का भरोसा दिया है। उधर केरल के मुख्यमंत्री पी.विजयन ने भी पुलिस और वन विभाग की दो जांच टीमें बनाई हैं। लेकिन एक तरफ इंसाफ का भरोसा दिलाना और दूसरी तरफ नफरत का अभियान करार देना वाकई परस्पर विरोधाभास है। बहरहाल हत्यारों को तो दंडित कीजिए।

चाणक्य नीति

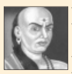

विवेकशील मनुष्य को जन्मदाता अर्थात् माता-पिता, दीक्षा देकर ज्ञान देने वाले अर्थात् गुरू, रोजगार देने वाले अर्थात् स्वामी एवं विपत्ति में सहायता करने वाले संरक्षक को सदा आदर देना चाहिए। जो व्यक्ति इन आदरणीय जनों को सम्मान नहीं देता। इनकी आज्ञा का पालन नहीं करता और इनके प्रति कृतज्ञ नहीं होता। उसका इस संसार में कभी भला नहीं होता। बुद्धिमान मनुष्य को कौवे से पांच बातें सीखनी चाहिए- छिपकर मैथुन करना, चौकन्ना रहना, उचित समय पर भविष्य के लिए संग्रह करना, कभी आलस्य न करना, किसी पर विश्वास न करना।

काम की बात

भूल पीठ की तरह होती है, जो औरों की दिखती है पर अपनी नही।

एक सलाह

छोटी सोच शंका को जन्म देती है और बड़ी सोच समाधान को।

यह दुनिया सिर्फ इंसानों की नहीं

अनिल प्रकाश जोशी, पर्यावरणविद

पिछले कुछ वर्षों में दुनिया कई तरह की खबरों से विचलित हुई है, इनमें सबसे बड़ा मसला पर्यावरण से जुड़ा रहा है। इस दौरान आर्थिकी और कुदरत से जुड़ी आपदाओं से भी हमारा वास्ता पड़ा, जिनको अंततरू प्रकृति के अतिक्रमण से जोड़कर ही देखा गया। पिछले कुछ समय की घटनाओं का यदि विश्लेषण करें, तो अब नए मिजाज के साथ हर वर्ष तूफान आ रहे हैं, जो जमकर तबाही मचाते हैं। अभी अम्फान से हुई तबाही के निशान मिटे भी न थे कि निसर्ग तूफान का सामना करना पड़ा है। इतना ही नहीं, पिछले दो-तीन दशकों में हमने कई बीमारियों के नाम भी पहली बार सुने। इनमें बर्ड फ्लू, स्वाइन फ्लू, इबोला और अब कोरोना जैसे महारोग मनुष्य द्वारा पारिस्थितिकी तंत्र को न समझ पाने के कारण ही पनपे हैं। साफहै, हम प्रकृति को समझने में पूरी तरह विफल रहे हैं।

दरअसल, हमने अपने जीवन-चक्र में कभी इस बात को महत्व ही नहीं दिया कि हर तरह की हलचल प्रकृति से जुड़ी होती है। पहले बाढ़ और भूकंप जैसी प्राकृतिक आपदाएं दशक भर पर अपना बड़ा असर डालती थीं, लेकिन हाल-फिलहाल के वर्षों में तो मानो ये रोजाना की घटनाओं का हिस्सा बन चुकी हैं। उल्लेखनीय यह भी है कि आज का समाज धीरे-धीरे इनसे न जूझ पाने की स्थिति में पहुंच चुका है। ऐसा इसलिए भी हुआ, क्योंकि अब होने वाले ये आक्रमण सर्वव्यापी और कहीं ज्यादा असरकारी हैं। हमने कभी भी उस पारिस्थितिकी तंत्र को समझने की कोशिश ही नहीं की, जिससे प्रकृति और पृथ्वी जुड़ी है। हमने एक ही तंत्र को दुनिया में सबसे ज्यादा महत्व दिया, वह है आर्थिक तंत्र। इसी तंत्र को बेहतर बनाने के लिए हमने विज्ञान की हर पहल झोंक दी, ताकि आरामतलबी का हमारा जीवन बना रहे। इतना ही नहीं, इस दरम्यान पारिस्थितिकी तंत्र में सबसे बड़ा हिस्सा मनुष्य ने अपने कब्जे में रखा।

पिछले दो-तीन दशकों से दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी जिस प्रजाति की बढ़ी है, वह मनुष्य ही है। पहले पारिस्थितिकी किसी भी प्रजाति की संख्या तय करती थी, लेकिन जब से मनुष्य ने अपने जीवन की रक्षा के लिए विशेष प्रयास शुरू किए हैं, दुनिया में उसकी संख्या तेजी से बढ़ती गई है। अदृश्य विषाणु और कीटाणु की बात यहां इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है, क्योंकि वे हमेशा गौण स्थिति में रहे हैं और किसी छेड़छाड़ के बाद अपनी संख्या का प्रदर्शन कर पाते हैं। मनुष्य की अपने लिए जुटाने की भावना और अन्य जीवों को न समझने की मूर्खता का ही नतीजा है कि आज हम एक बड़े और अनोखे संकट में फंसे हुए हैं।

19वीं शताब्दी की शुरुआत से लेकर आज तक हमने करीब 41 फीसदी उभयचर प्रजातियों को गंवा दिया। इतना ही नहीं, समुद्री जीवों को भी खतरे में डाल दिया। इसके अलावा, दुनिया की 10 फीसदी कीट प्रजातियां अब हमारे बीच नहीं हैं। हमने समुद्र से भी 33 फीसदी कोरल रीफको इस दुनिया से दूर कर दिया। इसी तरह, हमने करीब 90 फीसदी फसलों की प्रजातियों को पूरी तरह नष्ट कर दिया। 16वीं शताब्दी से आज तक नौ फीसदी पालतू जानवरों की प्रजातियां भी अब हमारे साथ नहीं हैं। एक मोटे अनुमान के मुताबिक, हम सभी तरह की करीब 80 लाख प्रजातियों को खो चुके हैं और लगभग 10 लाख खत्म होने के कगार पर हैं। ये आंकड़े बताते हैं कि किस तरह हमने अपनी चारों तरफप्रकृति के अन्य जीवों को दुनिया से विदा कर दिया है। ऐसा लगता है, हम अपनी बनाई मुसीबतों के साथ दुनिया में अकेले रह गए हैं।

समुद्र का हाल भी हमने बुरा कर दिया है। वैज्ञानिक परिभाषा के अनुसार माना जाता है कि समुद्र कार्बन उत्सर्जन का 60 फीसदी हिस्सा अवशोषित करते हैं, पर कार्बन उत्सर्जन के लगातार बढ़ने के कारण आज वहां भी 400 डेड जोन बन चुके हैं, मतलब अब इनमें जीवन नहीं दिखाई देते। वेटलैंड, यानी दलदली भूमि का किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र में महत्वपूर्ण योगदान है, लेकिन पिछले 300 वर्षों में हमने दुनिया की 15 फीसदी दलदली भूमि गंवा दी है। औद्योगिक क्रांति के बाद वन भी 68 फीसदी घट गए हैं और वर्ष 1992 से 2000 के बीच लाखों हेक्टेयर वन को अपनी जरूरतों के चलते हमने स्वाहा कर दिया है। इसके बदले में वन लगाने की हमारी पहल लगभग शून्य के बराबर है।

असल में, मानव ने कभी यह सोचा ही नहीं कि अन्य जीव-जंतु, जो प्रकृति ने हमारे साथ पैदा किए थे, उनका भी संतुलन में योगदान है। आज भी हमारा जीवन अगर प्राकृतिक दृष्टिकोण से सुरक्षित है, तो शायद अन्य जीवों के कारण ही। आज कोरोना की महामारी ने सबको यह सोचने के लिए बाध्य कर दिया है कि पारिस्थितिकी तंत्र के प्रति जो हमारा कर्तव्य है, उसका निर्वाह किया जाना चाहिए। हम दरअसल, उनसे पूरी तरह से विमुख हो गए थे, इसीलिए हम आज एक ऐसे मोड़ पर आ गए हैं, जहां इसी प्रकृति का एक अंश अदृश्य रूप में हमारे बीच में आया और हमें यह सबक सिखा गया कि अन्य जीव भी दृश्य या अदृश्य होकर अपनी उपस्थिति दर्ज करा सकते हैं। अब यह हम पर निर्भर करता है कि हम उनके साथ कैसा व्यवहार करते हैं। प्रकृति के संदेश को समझ लें और यह स्वीकार कर लें कि पृथ्वी मात्र मनुष्य की नहीं, बल्कि सबकी है। 'सबकी बात और सबका साथ' नारा अपनाने की जरूरत है। यह नारा सिर्फमनुष्य और उसके विकास तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि इसमें उन तमाम जीवों से जोड़कर देखे जाने की पहल करनी होगी, जिन्हें प्रकृति ने हमारे साथ पैदा किए। यह सब करने के बाद ही हम शायद इस पृथ्वी पर सुरक्षित रह सकेंगे और प्रकृति के कहर से स्वयं को बचा पाएंगे।

(ये लेखक के अपने विचार हैं)

व्यंग्य

वेलकम बैक डियर मेड

विवेक रंजन श्रीवास्तव, लेखक

मेड के बिना लाकडाउन में घर के सारे सदस्य और खासकर मैडम मैड हो रही हैं। मेड को स्वयं कोरोना से बचने के पाठ सिखा पढ़ाकर खुशी खुशी सवैतनिक अवकाश पर भेजने वाली मैडम ही नहीं श्रीमान जी भी लाकडाउन खुलते ही इस तरह वेलकम बैक डियर मेड करते दिख रहे हैं , मानो कोरोना की वैक्सीन मिल गई हो। मेड की महिमा , उसका महात्म्य कोरोना ने हर घर को समझा दिया है . जब खुद झाड़ू पोंछा , बर्तन , खाना नाश्ता , कपड़े , काल बेल बजते ही बाहर जाकर देखना कि दरवाजे पर कौन है , यह सब करना पड़ा तब समझ आया कि इन सारे कथित नान प्राडक्टिव कामों का तो दिन भर कभी अंत ही नही होता . ये काम तो हनुमान जी की पूंछ की तरह बढ़ते ही जाते हैं . जो बुद्धिजीवी विचारवान लोग हैं , उन्हें लगा कि वाकई मेड का वेतन बढ़ा दिया जाना चाहिये . कारपोरेट सोच वाले मैनेजर दम्पति को समझ आ गया कि असंगठित क्षेत्र की सबसे अधिक महत्वपूर्ण इकाई होती है मेड . बिना झोपड़ियों के बहुमंजिला अट्टालिकायें कितनी बेबस और लाचार हो जाती हैं , यह बात कोरोना टाईम ने एक्सप्लेन कर दिखाई है। भारतीय परिवेश में हाउस मेड एक अनिवार्यता है। हमारा सामाजिक ताना बाना इस तरह बुना हुआ है कि हाउस मेड यानी काम वाली हमारे घर की सदस्य सी बन जाती है। जिसे अच्छे स्वभाव की , साफसुथरा काम करने वाली , विश्वसनीय मेड मिल जावे उसके बड़े भाग्य होते हैं। हमारे देश की ईकानामी इस परस्पर भरोसे में गुंथी हुई अंतहीन माला सी है। किस परिवार में कितने सालों से मेड टिकी हुई है , यह बात उस परिवार के सदस्यो के व्यवहार का अलिखित मापदण्ड और विशेष रूप से गृहणी की सदाशयता की द्योतक होती है।

विदेशों में तो ज्यादातर परिवार अपना काम खुद करते ही हैं , वे पहले से ही आत्मनिर्भर हैं। पर कोरोना ने हम सब को स्वाबलंब की नई शिक्षा बिल्कुल मुफ्त दे डाली है। विदेशो में मेड लक्जरी होती है। जब बच्चे बहुत छोटे हों तब मजबूरी में हाउस मेड रखी जाती हैं। मेड की बड़ी डिग्निटी होती है। उसे वीकली आफ भी मिलता है। वह घर के सदस्य की तरह बराबरी से रहती है। कुछ पाकिस्तानी , भारतीय युवाओ ने जो पति पत्नी दोनो विदेशो में कार्यरत हैं , एक राह निकाल ली है , वे मेड रखने की बनिस्पत बारी बारी से अपने माता पिता को अपने पास बुला लेते हैं। बच्चे के दादा दादी , नाना नानी को पोते पोती के सानिध्य का सुख मिल जाता है , विदेश यात्रा और कुछ घूमना फिरना भी बोनस में हो जाता है , बच्चो का मेड पर होने वाला खर्च बच जाता है।

कोरोना के आते ही सब यकायक डर गये। बचपन में हौवा से बहुत डराया जाता था , सचमुच कोरोना हौवा के रूप में आ गया। लगा कि थाली बजाने से , दिये जलाने से , मेड को सवैतनिक अवकाश दे देने से हम कोरोना संकट से निपट लेंगें. पर लाकडाउन एक , दो , तीन , चार बढ़ते ही गये कोरोना है कि जाने का नाम ही नही ले रहा। श्रीमती जी की छिपी अल्प बचत के जमा रुपये खतम होने लगे। सरकार का असर बेकार होने लगा , डाक्टर्स थकने लगे , पोलिस वाले लाचार होने लगे , तब कोरोना के साथ जीने का फार्मूला ढ़ूंढ़ा गया। अनलाक शुरू हुआ। कुछ को लग रहा है जैसे कर्फ्यू खतम , उन्हें समझना जरूरी है कि लाकडाउन से कोरोना से निपटने की जनजागृति भर आ पाई है , कोरोना गया नही है। अब हमारी सुरक्षा हमें स्वयं ही करनी है , पर फिलहाल तो हम इसी में खुश हैं कि मास्क के घूंघट और हैंडवाश की मेंहदी के संग हमारी कामवाली फिर से बुला ली गई है , हम सब समवेत स्वर में कह रहे हैं वेलकम बैक डियर मेड।

अश्वेत की हत्या पर भारत की चुप्पी

डॉ. वेद प्रताप वैदिक

अमेरिका के एक अश्वेत नागरिक जॉर्ज फ्लाएड की हत्या के विरोध में कितने जबर्दस्त प्रदर्शन हो रहे हैं। अमेरिका में ऐसी उथल-पुथल तो उसके गृह-युद्ध के समय ही मची थी लेकिन इस बार तो कनाडा से लेकर जापान के दर्जनों देशों में रंगभेद के खिलाफआवाजें गूंज रही हैं। ब्रिटेन और यूरोपीय देश, जो कि मूलतः गोरों के देश हैं, वहां भी इतने बड़े-बड़े प्रदर्शन हो रहे हैं, जितने कि अमेरिका में भी नहीं हो रहे हैं। अमेरिका और यूरोपीय देशों के राष्ट्रपतियों की सभाओं में जहां दो-चार हजार आदमी जुटाना मुश्किल होता है, वहां 20-30 हजार लोग इन रंगभेदी प्रदर्शनों में स्वतः शामिल हो रहे हैं। इन देशों में भी भारत की तरह तालाबंदी है और कोरोना का संकट कहीं ज्यादा है, फिर भी पुलिस और फौज भी लोगों को रोक नहीं पा रही है लेकिन भारत, जो कि दुनिया का सबसे बड़ा लोकतांत्रिक देश है, यहां तो उस अश्वेत की नृशंस हत्या पर जूं भी नहीं रेंग रही है। हम लोग क्या इतने स्वार्थी और पत्थरदिल लोग हैं ?

वर्तमान सरकार हमारी जनता के इन कुंभकर्णी खर्राटों से खुश होगी, वरना कोरोना के इन बिगड़ते दिनों में एक नया पत्थर उसके गले में लटक जाता। भारत की जनता के दिल में भी दर्द जरुर है लेकिन कोरोना ने उसके दिल में मौत का डर इतना गहरा जमा दिया है कि वह हतप्रभ हो गई है। अमेरिका के गोरे लोग मांग कर रहे हैं कि वहां के पुलिसवालों पर राज्य सरकारें पैसा खर्च करना बंद करें, क्योंकि गोरे पुलिसवाले काले लोगों पर जानवरों की तरह टूट पड़ते हैं। यदि पुलिस के अत्याचारों के खिलाफकोई भी आवाज उठाता है तो पुलिस यूनियनें उस पर टूट पड़ती हैं। डोनाल्ड ट्रंप भी बार-बार पुलिस और फौज के इस्तेमाल की धमकी दे रहे हैं। उनका रक्षा मंत्रालय भी उनके साथ नहीं है। उनकी अपनी रिपब्लिकन पार्टी के कई नेता और कार्यकर्त्ता उनके विरुद्ध उठ खड़े हुए हैं लेकिन नवंबर में होनेवाले राष्ट्रपति के चुनाव में ट्रंप की कोशिश है कि इस मुद्दे पर अमेरिका के बहुसंख्यक गोरों के वोट वे अपने पक्ष में पटा लें। कोरोना के मामले में उनका बड़बोलापन तो उन्हें भारी पड़ ही रहा है, देखें यह रंगभेद क्या रंग दिखाता है ? अमेरिका की आंतरिक राजनीति में भारत न उलझे लेकिन रंगभेद पर उसकी चुप्पी आश्चर्यजनक है।

पवित्र और सूक्ष्मतम प्राण ही शक्तिशाली होते है

मनुष्य के अंदर आरोग्यता शक्ति भी है और रोगाणु भी, पर हमारे शक्तिशाली प्राण ही हमें रोगाणुओं से बचाते हैं। प्राण विद्या विशेषज्ञ कहते हैं कि वही प्राण शक्तिशाली होते हैं, जो जितना अधिक पवित्र एवं सूक्ष्मतम होते है। ऐसे प्राणों से भरे व्यक्तित्व में रोगाणु व वायरस आसानी से प्रवेश नहीं कर पाते। अतः अपनी प्राणशक्ति को इतना सूक्ष्म, पवित्र व शक्तिशाली बनाए कि आप संसार के संघर्षों में अडिग रह सकें। संघर्ष कैसा भी क्यों न हो, शरीर की रोग प्रतिरोधक शक्ति, आत्मबल इसी प्राण से बढ़ता है। ज्ञान के तंतु भी इसी से झंकृत होते हैं। शरीर एवं मन इसी से ऊर्जावान बनते हैं। इन्हीं प्राणों से बुद्धि की जड़ता टूटती है। कोशिकाओं में जीवनी शक्ति का विकास होता है। कहते हैं भय, शोक, भोग व विछोह का आघात प्राणों पर पड़ता है, तो स्थूल प्राण इससे जल्दी प्रभावित हो जाते हैं। स्थूल प्राण जड़ता से युक्त होते हैं। यदि प्राण स्थूल या जड़ हैं, तो व्यक्ति तो रोग, भोग, शोक, भय से भयभीत रहेगा। हर समय डरा रहेगा। इस भय से तनाव कनपटियों के पास जाकर बैठ जाता है और बुद्धि तत्व कमजोर होने लगती है क्योंकि प्राण सूक्ष्म न होने से वह तनाव को बाहर की ओर प्रवाहित नहीं कर पाता। इसी तरह क्रोध में आपकी श्वास की गति तो तीव्र चल रही होती है, पर प्राण में जड़ता होने से गुस्से से नथुने फुल जाते है, जीभ लड़खड़ाने लगती है। हमारे ऋषियों द्वारा बनाई हर साधना पद्धति प्राण परिष्कृत एवं सूक्ष्म करने के लिए है।

ग्रामीण आर्थिकी से ऊंची उम्मीदें

डॉ. जयंतीलाल भंडारी
विख्यात अर्थशास्त्री

यकीनन कोविड-19 की चुनौतियों के बीच देश को आत्मनिर्भर बनाने का जो लक्ष्य रखा गया है, उसके लिए कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था से सबसे अधिक उम्मीदें की जा रही हैं। इन उम्मीदों को पूरा करने के लिए सरकार ने हाल ही में कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था की मजबूती के लिए कई अभूतपूर्व कदम उठाए हैं। ऐसे में ग्रामीण अर्थव्यवस्था में नई जान फूंककर आत्मनिर्भर भारत बनाने की डगर पर कदम-कदम पर दिखाई दे रही विभिन्न चुनौतियों के उपयुक्त समाधान पर ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था से की जा रही ऊंची उम्मीदें पूरी हो पाएंगी। हाल ही में एक जून को सरकार ने 17 खरीफ फसलों के न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) में दो से 7.5 फीसदी के दायरे में बढ़ोतरी की घोषणा की है। खास तौर से खरीफ की मुख्य फसल धान के लिए 2.89 से 2.92 फीसदी, दलहनों के लिए 2.07 से 5.26 फीसदी तथा बाजरे के लिए 7.5 फीसदी एमएसपी में बढ़ोतरी की गई है। नई एमएसपी बढ़ोतरी में मोदी सरकार की किसानों को फसल लागत से 50 फीसदी अधिक दाम देने की नीति का पालन किया गया है। नई कीमतें उत्पादन लागत से 50 से 83 फीसदी अधिक होंगी। साथ ही किसान क्रेडिट कार्ड से किसानों को चार फीसदी ब्याज पर तीन लाख रुपए तक का कर्ज दिया जाना भी सुनिश्चित किया गया है। निःसंदेह इस समय देश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कोविड-19 की चुनौतियों के बीच कुछ सुकून भरे परिदृश्य की तीन बातें उभरकर दिखाई दे रही हैं। एक, बंपर पैदावार के बाद रबी की फसलों के लिए किसानों को लाभप्रद न्यूनतम समर्थन मूल्य मिलता हुआ दिखाई दे रहा है। दो, ग्रामीण भारत के अधिकांश क्षेत्र को शीघ्रतापूर्वक लॉकडाउन से बाहर लाए जाने के कारण उर्वरक, बीज, कृषि रसायन जैसी कृषि क्षेत्र से जुड़ी हुई वस्तुओं की मांग में वृद्धि हो गई है। तीन, सरकार के द्वारा किसानों और गरीबों के जनधन खातों में नकद रुपए डालने जैसे प्रयासों से ग्रामीण परिवारों की आय तथा उपभोग मांग बढ़ गई है।

ऐसे में इन सबके कारण इस समय ग्रामीण भारत देश की अर्थव्यवस्था की गाड़ी को खींचता हुआ दिखाई दे रहा है। गौरतलब है कि इन दिनों 'कोविड-19 और भारतीय अर्थव्यवस्था' विषय पर प्रकाशित हो रही वैश्विक अध्ययन रिपोर्टों में दो बातें प्रमुख रूप से उभरकर सामने आ रही हैं। एक, भारत की कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था के कारण भारत में मुश्किलें कम हैं और दो, आत्मनिर्भर भारत अभियान से भारत में ग्रामीण अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भरता की बुनियाद बन सकती है। अंतरराष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने अपनी नई रिपोर्ट में कहा है कि यद्यपि कोरोना वायरस की चुनौतियों के कारण चालू वित्त वर्ष 2020-21 में भारत की विकास दर में तेज गिरावट आएगी, लेकिन प्रचुर खाद्यान्न भंडार और ग्रामीण अर्थव्यवस्था देश का सहारा दिखाई देगी। एशियन डिवेलपमेंट बैंक ने भी अपनी रिपोर्ट में कहा है कि भारत के पास कृषि और खाद्यान्न ऐसे मजबूत आर्थिक बुनियादी घटक हैं जिनकी ताकत से भारत अगले वित्त वर्ष 2021-22 में आर्थिक वृद्धि करते हुए दिखाई दे सकेगा। ज्ञातव्य है कि पिछले दिनों वित्तमंत्री निर्मला सीतारमण ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा घोषित 20 लाख करोड़ रुपए से करीब एक लाख करोड़ रुपए ज्यादा यानी 20 लाख 97 हजार 53 करोड़ रुपए का जो आर्थिक पैकेज प्रस्तुत किया है, उसमें खेती-किसानी को बेहतर बनाकर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को आत्मनिर्भरता की बुनियाद बनाने का प्रमुख लक्ष्य उभरकर दिखाई दे रहा है। नए आर्थिक पैकेज में सरकार ने खेती-किसानी पर जोर देकर किसानों को बेहतर मूल्य दिलाने की कवायद की है। निःसंदेह शीत भंडार गृहों और यार्ड जैसे बुनियादी ढांचे के लिए एक लाख करोड़ रुपए का कोष अत्यधिक महत्त्वपूर्ण कदम है। निश्चित रूप से पशुपालन बुनियादी ढांचा विकास फंड से भारत की मौजूदा डेयरी क्षमता तेजी से बढ़ेगी। साथ ही इससे ग्रामीण अर्थव्यवस्था में 30 लाख लोगों के लिए रोजगार का सृजन होगा। इतना ही नहीं, किसानों को कृषि उत्पाद मंडी समिति के माध्यम से उत्पादों को बेचने की अनिवार्यता खत्म होने और कृषि उपज के बाधा रहित कारोबार से बेहतर दाम पाने का मौका मिलेगा। यह बात भी महत्त्वपूर्ण है कि नए पैकेज के तहत किसानों एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था के लिए 2.30 लाख करोड़ रुपए के आसान ऋण दिए जाने का प्रावधान किया गया है। नाबार्ड के जरिए कर्ज देने के लिए 30 हजार करोड़ रुपए के अतिरिक्त फंड की व्यवस्था की गई है। खास तौर से महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) के लिए 40,000 करोड़ रुपए बढ़ाने की घोषणा की गई है। इससे गांव लौटने वाले प्रवासी श्रमिकों को रोजगार उपलब्ध हो सकेगा। करीब 300 करोड़ मानव दिवस सृजित करने में मदद मिलेगी। जो प्रवासी मजदूर अपने राज्यों में लौटे हैं, उनके लिए भी नई योजनाएं हैं। जो मजदूर अपने घरों में लौटे हैं, वे अपने गांवों में ही मनरेगा के तहत अपना नाम वहीं रजिस्टर कर काम ले सकते हैं। मनरेगा के तहत मजदूरी 182 रुपए से बढ़ाकर 200 रुपए कर दी गई है। उल्लेखनीय है कि 2008 की वैश्विक मंदी में भी भारत दुनिया के दूसरे देशों की तुलना में कम प्रभावित हुआ था। इसका प्रमुख कारण देश के ग्रामीण बाजार की जोरदार शक्ति भी माना गया था। अब कोविड-19 के बीच भी एक बार फिर भारत के लिए ग्रामीण अर्थव्यवस्था की अहमियत दिखाई दे रही है। यद्यपि हमारे देश के सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) में कृषि का योगदान करीब 17 फीसदी है। लेकिन देश के 60 फीसदी लोग खेती पर आश्रित हैं और वे बहुत कुछ आत्मनिर्भर जीवन जीते हैं। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि की हिस्सेदारी करीब 50 फीसदी है और शेष 50 फीसदी में ग्रामीण क्षेत्र में कार्यरत छोटे-मझोले उद्योग और सेवा क्षेत्र का योगदान है। यह स्पष्ट दिखाई दे रहा है कि इस समय कोविड-19 के बीच भारत का सबसे मजबूत पक्ष यह है कि देश के सामने 135 करोड़ लोगों की भोजन संबंधी चिंता नहीं है। नवीनतम स्थिति के अनुसार 15 मई 2020 के अंत तक देश के पास करीब 10 करोड़ टन खाद्यान्न का सुरक्षित भंडार सुनिश्चित हो गया है। इससे करीब डेढ़ वर्ष तक देश के लोगों की खाद्यान्न जरूरतों को सरलतापूर्वक पूरा किया जा सकता है। इतना ही नहीं, कृषि मंत्रालय के द्वारा प्रस्तुत किए फसल वर्ष 2019-20 के अंतिम अनुमान के आंकड़े सुकून भरा संकेत दे रहे हैं कि देश में खाद्यान्न उत्पादन 29.19 करोड़ टन के रिकार्ड स्तर पर पहुंच सकता है। कृषि और उससे संबंधित क्षेत्रों में 3.5 प्रतिशत की दर से वृद्धि करने की बात कही गई है। हम उम्मीद करें कि कोविड-19 की चुनौतियों के बीच आत्मनिर्भर भारत अभियान से भारत में उन्नत कृषि, शीत भंडार गृह, ग्रामीण एवं कुटीर उद्योग, पशुपालन, डेयरी उत्पादन तथा खाद्य प्रसंस्करण उद्योगों को नया प्रोत्साहन मिलेगा। ऐसे में मजबूत ग्रामीण अर्थव्यवस्था आत्मनिर्भर भारत की बुनियाद बनते हुए दिखाई दे सकेगी।

कोरोना कालः तबाह हो गए दैनिक व साप्ताहिक हाट-बाजार

अरविंद कुमार राय

कोरोना महामारी व लॉकडाउन ने किस-किस तबके को तबाह किया, इसका आकलन लंबे समय तक होता रहेगा। देश में एक ऐसा भी तबका है, जिसकी गिनती किसी सरकारी आंकड़े में नहीं होती। उसको कोई जानता भी नहीं है। यह वह तबका है जो दैनिक व साप्ताहिक हाट बाजारों में सामान बेचता है। इन बाजारों के दुकानदार और खरीददार, दोनों के जीवन पर यह सीधा असर डालता है। कोरोना काल के लॉकडाउन में यह तथ्य साफ-साफउभरकर सामने आया है।

भारत विविधताओं वाला देश है। यहां भाषा, रहन-सहन, पहनावा, बोलियों में काफी भिन्नता के बावजूद समानता है। आज देश का शहरी इलाका तेजी से विकास की सीढ़ियां चढ़ रहा है। शहरों के आसपास के ग्रामीण इलाकों की तस्वीर भी काफी तेजी से बदली है। लेकिन, दूरदराज के इलाकों में रहने वाले लोगों की हालत कितनी खस्ताहाल है, इसका अंदाजा लगाना कठिन है। पिछले कुछ वर्षों में सरकार ऐसे लोगों तक पहुंचने की कोशिश कर रही है लेकिन अभी बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

देश के पिछड़े इलाकों में दैनिक व साप्ताहिक बाजारों में ग्रामीण आबादी सामान खरीदने के लिए पहुंचते हैं। ऐसे बाजारों पर एक बड़ी आबादी का जीवन निर्भर है। बाजारों में सामान बेचने वाले अपनी साइकिल, छोटे वाहनों के साथ-साथ सिर पर सामान लेकर प्रतिदिन बाजार व साप्ताहिक हाट बाजारों में दुकान लगाते हैं। जहां ग्रामीण खरीददार अपनी जरूरत की सामग्री खरीदने के लिए पहुंचते हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाला यह ऐसा तबका है, जिसकी हिम्मत बड़े-बड़े शहरों में पहुंचकर सामान खरीदने की नहीं होती है। प्रतिदिन लगने वाले बाजार या साप्ताहिक हाट बाजारों में दुकान लगाने वाले तथा खरीददार दोनों इस व्यवस्था से खुश हैं। दोनों का इस बाजार से भला हो जाता है। लेकिन, कोरोना काल में इस तबके पर सबसे बड़ी मार पड़ी है। अनलॉक-1 में शहरों की दुकानें तो खुल गई लेकिन भीड़ के डर से प्रशासन साप्ताहिक बाजार व दैनिक हाट बाजारों को खोलने की इजाजत नहीं दे रहा है।

असम के चाय बागान इलाकों में आज भी दैनिक व साप्ताहिक बाजारों पर बड़ी आबादी का जीवन निर्भर है। चाय बागानों में काम करने वाले लोग छह दिनों तक काम करते हैं, सातवें दिन साप्ताहिक हाट-बाजारों में अपनी जरूरत की सामग्री की खरीददारी करते हैं। लेकिन, इन बाजारों के न लगने से दुकानदार व खरीददार दोनों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। इन बाजारों में दुकान लगाने वालों के पास रोजी-रोटी का और कोई जरिया नहीं है। इसलिए ये दुकानदार इन दिनों काफी मुसीबतों का सामना कर रहे हैं। लॉकडॉउन के दौरान ऐसे परिवारों की पूरी तरह से कमर टूट गयी है। सरकार के निर्देश के बाद लगभग सभी दुकानें खुल गई हैं। लेकिन, दैनिक व साप्ताहिक हाट बाजार नहीं खुलने की वजह से दैनिक बाजार में दुकान लगाकर अपनी जीविका चलाने वाले लोगों का हाल काफी बुरा है। लगभग 4 महीने से व्यापार बंद होने की वजह से अब बाजार में दुकान लगाने वाले लोगों की हालत बद से बदतर होती जा रही है।

इन दुकानदारों के सामने रोजी-रोटी की किल्लत हो गई है। सरकार द्वारा बड़े-बड़े दावे तो जरूर किए जा रहे हैं लेकिन दैनिक बाजारों में दुकान लगाने वालों का एक ऐसा तबका है जिनको चाहकर भी सरकारी मदद संभवतः मिलना मुश्किल है। कारण उनका कोई स्थायी ठौर-ठिकाना नहीं है। उनकी कोई स्थायी पहचान नहीं है। जिसकी वजह से उनको सरकारी मदद मिलना नामुमकिन दिखाई दे रहा है। ऐसे लोग मायूस होकर अपने घरों में बैठे हैं। उन्हें अपने जीवन को फिर से पटरी पर लाने का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा है।

हम प्रकृति के अंग हैं

गिरीश्वर मिश्र

सृष्टि में जीवन के स्रोत पर्यावरण को लेकर आज सभी चिंतित हैं। जिस वेग से जलवायु परिवर्तन के असर दिखने लगे हैं उससे धरती पर जीवन के भविष्य को लेकर गहरे सरोकार सामने आ रहे हैं। वैश्विक गर्मी जिस तरह बढ़ रही है वह दुनिया को ऐसे बिंदु पर पहुंचा रही है जिससे बाढ़, भोजन और पेयजल की कमी, लोगों के विस्थापन, संसाधनों के लिए हिंसात्मक संघर्ष की प्रवृत्तियां प्रबल होती जा रही हैं। वनस्पतियों और जीव -जंतुओं की प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं। जल-प्रदूषण, मल और अपशिष्ट के इकठ्ठा होने, वनों की कटाई आदि से जीवनदायी ओजोन की पर्त में छिद्र हो रहे हैं। मनुष्य द्वारा प्रकृति के अंधाधुंध दोहन के कारण जैविक संतुलन बिगड़ता जा रहा है।

धरती पर उपलब्ध संसाधनों की तुलना में जनसंख्या अधिक है और यह स्थिति सफल जीवन जीने के लिए उपयुक्त नहीं बैठ रही है। संतुष्टि न हो सकने वाली हमारी उपभोग-वृत्ति और लोभ के कारण निकलता कूड़ा सभी प्राणियों के स्वास्थ्य पर नकारात्मक असर डाल रहा है। कैंसर जैसे असाध्य रोग की बहुतायत चिंताजनक हो रही है। पहाड़ों, नदियों, घाटियों और वन जो कभी आध्यात्मिक ऊर्जा के स्रोत हुआ करते थे, लुप्त होते जा रहे हैं। पुण्यतोया गंगा का उद्गम जहां से होता है वह ग्लेशियर पीछे खिसकता जा रहा है। नाभिकीय ऊर्जा से सबकुछ समाप्त करने वाला शस्त्रास्त्र बनाने की होड़ बढ़ती ही जा रही है। लाभ और लोभ के लिए सबकुछ दांव पर लग रहा है और पृथ्वी असुरक्षित होती जा रही है। कुल मिलाकर परिवर्तन इतने बड़े पैमाने पर हो रहे हैं कि आदमी के लिए स्वाभाविक नैसर्गिक दशा में जीने और अपनी क्षमताओं का उपयोग करना संभव नहीं हो पा रहा है।

हम अपनी भूमिका निभाने में विफल हो रहे हैं। हमारा राजनैतिक विवेक धरती पर प्राणियों के जीवन और खुशहाली के बारे में मौन है। भौतिकता और उपभोक्तावाद स्वार्थ को ही जीवन सूत्र बनाता जा रहा है। उसकी सर्जनात्मकता इन्हीं की आपूर्ति के लिए सुरक्षित हो रही है। मनुष्य, अन्य जीव-जंतु और भौतिक पदार्थों को एक समष्टि में न देखकर उनके बीच कृत्रिम भेद किया गया है जो दूरगामी दृष्टि से लाभकर नहीं है। आज हमारे पास एक टिकाऊ विश्व व्यवस्था की कोई दृष्टि विकसित नहीं हो पाई है। विज्ञान, प्रौद्योगिकी और व्यापार घोर वैयक्तिकता के नजरिए पर टिके हैं। संस्कृति संरक्षण और पर्यावरण के प्रश्न वैश्विक दबाव में उलझकर विविधता को समाप्त कर रहे हैं। विज्ञान और तकनीकी का विकास सबकुछ को जड़ वस्तु मानकर दुनिया पर स्वामित्व पाने के लिए है। परंतु इसकी दौड़ में जितना भी हासिल किया जाय वह प्रतियोगी लोगों के बीच अपनी स्थिति को सुनिश्चित करने के लिए नाकाफी ही रहेगा। इस तरह की अपसंस्कृति में प्रचंड उपभोग के लक्ष्य ही सदैव महत्व के बने रहते हैं।

ऐसे में हमें अपने आत्मबोध को विस्तृत करना होगा। शायद पिंड और ब्रह्मांड की एकता और पूरी सृष्टि में परस्पर निर्भरता के सत्य को समझना होगा। एक ऐसे आत्म या स्व की अवधारणा पर विचार करना जरूरी होता जा रहा है जो अपने को सभी प्रकार के जीवन से जोड़ सके। आधुनिक जीवन की बढ़ती जटिलताएं अपने परिवेश को समझने, अधिकार में लेने और नियंत्रण करने की होड़ में हमारे जीवनानुभव के मुख्य हिस्से या जड़ों से दूर होते जा रहे हैं। फलतरू आज चिंता, अवसाद, संशय और अकेलेपन से जूझते व्यक्तियों का हुजूम दिख रहा है। हम पर्यावरण के लिए समस्याओं को पैदा करते जा रहे हैं। यदि हम मांस, प्लास्टिक, जीवाश्म ईंधन के कम उपयोग के साथ जीना सीख लें, यदि हम विषैले रेडियो विकिरण या रासायनिक अपशिष्ट को नियंत्रित करें तो सृष्टि की देखभाल हो सकेगी। ऐसे में खुशहाली की मृग मरीचिका वाली अनंत खोज की जगह दया और करुणा की संवेदना आवश्यक हो गई है। आधुनिक समाज के घोर व्यसन से उबरना होगा। हमारी मानसिकता को हरित बनाना पड़ेगा। मनुष्य को पूरी प्रकृति के साथ जीवंत सम्बन्ध रखना होगा। समुद्र, नदी, पशु-पक्षियों की आवाजें हमें गहरे छू जाती हैं। बादल, फूल, संध्या काल में डूबते सूरज की आभा का अहसास ऊर्जा देने वाला होता है। मनुष्य की विशिष्टता अन्य मनुष्यों, प्रकृति और सृष्टि के साथ सजग और परस्पर निर्भरता का रिश्ता बनाने में है न कि उनके शोषण में। हमें सभी जीवन रूपों को आदर देना होगा।

वास्तविकता यही है कि मनुष्य की प्रजाति का जीवन परिस्थितिकी के साथ गहरे सम्बंध की स्थापना की अपेक्षा करता है। तभी जीवन का संरक्षण हो सकेगा और हमारे अपने जीवन को सार्थक बनाएगा। पर्यावरण के साथ अधिक समरसता से पारिस्थितिकी के विनाश को संभालने के लिए हम अधिक ठीक तरह से तैयार हो सकेंगे। यदि हम त्रासदियों से बचना चाहते हैं तो हमें नैसर्गिक दुनिया के सुखों और आश्चर्यों से जुड़ने को भी दैनंदिन जीवन में स्थान देना होगा। जीवन के पक्ष में सामाजिक परिवर्तन की जरूरत होगी।

(लेखक महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विवि, वर्धा के पूर्व कुलपति हैं।)

'कुर्सियों पर बैठते हो ! आग तो तुम्हारी कुर्सियों के नीचे सुलग रही हैं'

श्रवण गर्ग, लेखक

आज 'सम्पूर्ण क्रांति दिवस 'है और मैं 5 जून 1974 के उस ऐतिहासिक दृश्य का स्मरण कर रहा हूँ जो पटना के प्रसिद्ध गांधी मैदान में उपस्थित हुआ था और मैं जयप्रकाशजी के साथ मंच के निकट से ही उस क्रांति की शुरुआत देख रहा था जिसने अंततः वर्ष 1977 में दिल्ली में इंदिरा गांधी की सत्ता को पलट कर रख दिया था।इसके एक दिन पहले 4 जून को पटना की सड़कों पर कांग्रेस हुकूमत की ओर से जो हिंसा की गई थी मैं उसका जिक्र यहाँ नहीं कर रहा हूँ।मैं उन दिनों पटना मैं रहते हुए जयप्रकाशजी के साथ कदम कुआँ स्थित निवास पर उनके काम मैं सहयोग कर रहा था और कोई एक साल उनके सान्निध्य में रहने और काम करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

जयप्रकाश जी की सलाह पर मैंने बिहार आंदोलन पर जो पुस्तक उस समय लिखी थी और सर्व सेवा संघ, वाराणसी ने प्रकाशित की थी वह आज भी उस समय का एकमात्र प्रामाणिक दस्तावेज है जो लोकनायक ने स्वयं पढ़कर स्वीकृत किया था और अपने हस्ताक्षर से टिप्पणी लिखी थी।पुस्तक 'बिहार आंदोलनरूएक सिंहावलोकन' में दर्ज किया गया 5 जून का दृश्य प्रस्तुत कर रहा हूँरू

'पाँच जून की सभा कई मानों में ऐतिहासिक थी।सभा का प्रारम्भ प्रख्यात उपन्यासकार श्री फणीश्वरनाथ रेणु द्वारा स्वर्गीय श्री रामधारी सिंह दिनकर की उस प्रसिद्ध कविता के वाचन से शुरू हुआ जो उन्होंने जयप्रकाशजी पर लिखी थी और जिसे उन्होंने स्वयं पटना के गांधी मैदान में सुनाया था।रेणु जी के बाद आचार्य राममूर्ति बोलेरू' आठ अप्रैल का दिन संकल्प का दिन था आज का दिन समर्पण का है ।भारत की आजादी के इतिहास का उत्तरार्ध लिखा जा रहा है।उसे युवक और छात्र ही लिखेंगे।एक आदमी आया और उसने बिहार की जनता के सिरहाने एक आंदोलन रख दिया।यह देश न जाने कितने काल तक जे.पी. के प्रति कृतज्ञ रहेगा।जे.पी. ने ने इस अधमरे देश को प्राण दिए हैं।सारी सभा मंत्रमुग्ध होकर सर्वोदय आंदोलन के ओजस्वी वक्ता को सुनती रही।

आचार्य राममूर्ति के बाद जे.पी.ने बोलना शुरू कियारू''बिहार प्रदेश छात्र-संघर्ष समिति के मेरे युवक साथियो ,बिहार प्रदेश के असंख्य नागरिक भाइयो और बहनो !''एक-एक शब्द लोगों को भेदने लगा रू''किसी को कोई अधिकार नहीं है कि जयप्रकाश नारायण को लोकतंत्र की शिक्षा दे ।यह पुलिसवालों देश है ?? यह जनता का देश है ।मेरा किसी से झगड़ा नहीं है ।हमें(हमारा) तो नीतियों से झगड़ा है ,सिद्धांतों से झगड़ा है, कार्यों से झगड़ा है ।चाहे वह कोई भी करे मैं विरोध करूँगा।यह आंदोलन किसके रोकने से, जयप्रकाश नारायण के रोकने से नहीं रुकनेवाला है।कुर्सियों पर बैठते हो !आग तो तुम्हारी कुर्सियों के नीचे सुलग रही है ।यूनिवर्सिटी -कॉलेज एक वर्ष तक बंद रहेंगे।सात तारीख़ (जून) से असेम्बली के चारों गेटों पर सत्याग्रह होंगे।अब नारा यह नहीं रहेगा 'विधानसभा भंग करो', नारा रहेगा 'विधानसभा भंग करेंगे', इस निकम्मी सरकार को हम चलने ही न दें ।जिस सरकार को हम मानते नहीं, जिसको हम हटाना चाहते हैं ,उसे हम कर क्यों दें ?हमें कर-बंदी का आंदोलन करना होगा''

'अपने डेढ़ घंटे से अधिक समय के भाषण के अंत में जे.पी.ने कहा रू''यह संघर्ष केवल सीमित उद्देश्यों के लिए नहीं हो रहा है ।इसके उद्देश्य तो बहुत दूरगामी हैं ।भारतीय लोकतंत्र को 'रीयल' याने वास्तविक तथा सुदृढ़ बनना ,जनता का सच्चा राज कायम करना ,समाज से अन्याय,शोषण आदि का अंत करना,एक नैतिक,सांस्कृतिक तथा शैक्षणिक क्रांति करना ,नया बिहार बनाना और अंततोगत्वा नया भारत बनाना है।यह सम्पूर्ण क्रांति है।'

पाँच जून को गांधी मैदान में दिए जे.पी.के 'सम्पूर्ण क्रांति 'के उद्घघोष के बाद देश की राजनीति की धारा ही बदल गई।पाँच जून के बाद दिल्ली में जनता पार्टी की सरकार क़ायम होने तक का भी एक लम्बा इतिहास और सफर है और उस इतिहास को एक साक्षी के रूप में बनते हुए देखने का भी मुझे गर्व है।हम सब जानते हैं कि जे.पी.ने 1974 में जिस 'सम्पूर्ण क्रांति' का आह्वान किया था उसका काम अभी अधूरा है।हमें भरोसा है कि इसे पूरा करने में वे लोग भी अपनी आहुतियाँ देंगे जो इस समय दिल्ली और बिहार की सत्ताओं में हैं और 5 जून 1974 को जे.पी.के साथ पटना के गांधी मैदान में भी उपस्थित थे।कहने को बाक़ी तो और भी बहुत कुछ है पर फिर कभी।'सम्पूर्ण क्रांति' के नायक जे.पी. की स्मृति को प्रणाम।

देश में बेमौत मरते मजदूर जिम्मेवार कौन ?

लेखक, नरेन्द्र भारती

देश में हर वर्ष मजदूर दबकर व जलकर मारे जा रहे हैं।ताजा घटनाक्रम में गुजरात के भरुच के दाहेज में एक कैमीकल फैक्टरी में विस्फोट होने से पांच मजदूरों की दर्दनाक मौत हो गई और 57 लोग बुरी तरह घायल हो गए।अभी गैस लीक हादसे की स्याही भी नही सूखी थी कि भरुच हादसे ने एक नई इबारत लिख दी है।गत दिनों आंध्रप्रदेश के विशाखापटटनम में भोपाल गैस कांड जैसा हादसा हों गया था। एक प्लांट में स्टाईरिन गैस लीक होने से लोगों को अपनी चपेट में ले लिया था और असमय ही काल का ग्रास बन गए थे।रिसाव के बाद यह गैस 4 किलोमीटर के दायरे में फैल गई थी । हादसा शहर से 30 दूर वैंकटपुरम गांव में हुआ था यह कंपनी 1961 में बनी थी और लॉकडाउन की बजह से बंद थी। एनडीआरएफकी टीम द्वारा लोगों को दरवाजे तोड़कर बाहर निकाला था। पल भर में लाशों के ढेर लग गए थे।यह हादसा रात को ढाई बजे घटित हुआ था।सुबह लोग गहरी निंद्रा में सोए थे लोगों ने सपने में भी नहीं सोचा था कि उनके अपने ऐसी नींद सो जाएगें कि फिर नहीं जागेगें।यह बहुत ही दर्दनाक हादसा था। भरुच में हुए दर्दनाक हादसे से हर भारतीय गमगीन है।हर आंख नम है कि पल झपकते ही बेकसूर लोग मारे गए। गत वर्ष दिसंबर में राजधानी दिल्ली में रानी झांसी रोड़ पर्री स्थित अनाज मंडी में सुबह चार बजे आग लगने से 43 लोगों की दर्दनाक मौत हो गई थी तथा कई लोग घायल हो गए थे ।एडीआरएफकी टीम ने केवल 56 लोगों की जान बचा ली थी।यह भीषण आग सुबह साढे चार बजे के करीब लगी थी।आग लगने का कारण शार्टसर्किट था।मालिक के खिलाफगैर इरादतन हत्या का मामला दर्ज कर लिया था।यह मजदूर बिहार के समस्तीपुर के एक ही गांव के थे। अनाज मंडी शमशानघाट बन गई।कैसी विडंबना है कि कभी सुरगों व उद्योगों में बेमौत मारे जा रहे हैं। मगर केन्द्र व राज्य की सरकारों को जरा सा सदमा होता तो मजदूरों के हितों में कदम उठाती लेकिन सरकारें तो तब जागती हैं जब बड़ा हादसा घटित हो जाता है।2019 के 11 महिनों में उद्योगों में आग के काफी मामले घटित हुए थे। देश में मजदूरों के साथ होने वाले हादसे थमने का नाम नहीं ले रहे हैं।कारखानों में जल कर मजदूर मर रहे हैं।गत वर्ष भी एक ही दिन में दो हादसों में 19 मजदूर मारें गए थे जब राजधानी दिल्ली के बाहरी जिले में स्थित बवाना औद्योगिक क्षेत्र में एक पटाखें की फैक्टरी के गोदाम में भीषण आग लगनें के कारण 17 लोगों की मौत हो गई थी और तीस लोग बुरी तरह झुलस गए थे। मरने वालों में 10 महिलाएं तथा 7 पुरुष थी।मजदूरों ने सपने में भी नही सोचा होगा कि यह पटाखा गोदाम शमशान बन जाएगा ।पल भर में जिन्दा लोग राख में बदल गए यह बहुत ही त्रासदी है।लगभग तीन घंटे की मशक्कत के बाद आग पर काबू पाया जा सका तब तक सब कुछ राख हो चुका था।आग के कारणो का पता नहीं चल पाया है।प्रशासन को चाहिए कि लापरवाही बरतने वालों को सजा दी जाए ताकि फिर एसे हादसे न हो सके।दूसरे हादसे में कानपुर में भी दो मजदूरों की मलबे में दबने से दर्दनाक मौत हो गई। एक दिन में ही 19 मजदूर मारे गए।यह बहुत ही दुखद है। ।बीते वर्ष में रायबरेली के उंचाहार में एटीपीसी संयत्र का बायलर फटने से 30 मजदूरों की दर्दनाक मौत हो गई थी तथा 100के लगभग घायल हो गए थे।500 मैगावाट इकाई के बायलर में यह हादसा हुआ था उस समय 200 कामगार मौजूद थे सरकारों ने मृतकों को मुआवजे की घोषणा करती है मगर मुआवजा इसका हल नहीं है।एक ऐसा ही हादसा जयपुर के पास खातोलाई गांव में घटित हुआ था जहां टाऊसफारमर फटने से 14 लोगों की मौत हो गई थी। इन हादसों ने औद्योगिक क्षेत्रों में मजदूरों की सुरक्षा पर प्रशनचिन्ह लगा दिया है इन हादसों पर संज्ञान लेना होगा तथा मजदूरों की सुरक्षा के पुख्ता इंतजाम करने होगें ताकि भविष्य में ऐसे हादसों पर रोक लग सके। गत वर्ष जम्मू के उधमपूर से 80 किलोमीटर दूर रामबन जिले के चंद्रकोट में जम्मू-कश्मीर हाईवे पर टनल कर्मचारियों की बैरक में आग लगने से दस श्रमिक जिंदा जल गए थे। यह बैरक लोहे व फाईबर की बनी थी। यह बहुत ही दुखद हादसा था। आग लगने का कारण बिजली का शार्टसर्किट था।इस बैरक में 100 से अधिक लोग रहते थे। मगर छुटटी होने के कारण आसपास के लोग अपने घरों को चले गए थे। गनीमत रही की यह अपने-अपने घरों को गए थे वरना मृतको की संख्या 100 के लगभग होती ।नया वर्ष इन मजदूरों के लिए यमराज बन कर आया था और बेचारे टनल में ही जिन्दा जलकर राख हो गए थे इन अभागों ने सपने मे भी नहीं सोचा होगा की नया साल उनके लिए घातक साबित होगा।मारे गए मजदूरों में एक मजदूर हिमाचल के कांगड़ा का था तथा एक पंजाब का था बाकि बनिहाल-रामबन क्षेत्र के निवासी थे।सुरगं में घटित इस दर्दनाक हादसे ने कई प्रशन खड़े कर दिए है कि आखिर यह हादसे कब रुकेगें।यह कोई पहला हादसा नहीं है देश में अब तक हजारों मजदूर बेमौत मारे जा चुके है।एक साल पहले हिमाचल के बिलासपुर में भी एक ऐसा ही हादसा घटित हुआ था जब फोरलेन का काम करते समय सुरंग ढह गई और तीन मजदूर उसमें दब गए मगर 12 दिन की कड़ी मशक्कत के बाद दो मजदूरों को जिन्दा निकाला गया था। एक मजदूर हिरदा राम कोई पता नहीं चल पाया था कि वह जिन्दा था या मर चुका था लगभग 9 महीने बाद उसका शव बरामद हुआ था। हिमाचल के जिला किन्नौर में एक निर्माणाधिन प्रोजेक्ट की दीवार गिरने से चार मजदूर बेमौत मारे गए थे। यहां पर 11 मजदूर काम कर रहे थे कि अचानक दीवार गिर गई सात मजदूर तो भागकर बच गए मगर बेचारे चार मजदूर जिन्दा दफन हो गए।इन मजदूरों पर 42 मीटर लंबी दीवार गिर गई थी। हिमाचल में ऐसे बहुत हादसे हो रहे है हमीरपुर में भी गत दिनों दर्जनों मजदूर मारे गए थे। 2015 के फरवरी माह में एक सप्ताह में दो दर्दनाक हादसों में 10 मजदूर मारे गए और 20 मजदूर घायल हो गए। पहला हादसा हिमाचल के कुल्लु में हुआ तथा दूसरा मुम्बई में हुआ। मुम्बई के अलीबाग में एक पटाखा फैक्ट्री में आग लगने से 9 मजदूर मारे गए थे और 19 घायल हो गए थे। और दूसरी घटना में 24 फरवरी 2014 को कुल्लु के मणीकर्ण में करंट लगने से एक मजदूर की मौत हो गई थी जो बिजली विभाग के एक ठेकेदार के पास काम कर रहा था इस दर्दनाक हादसे में एक अन्य मजदूर घायल हो गया था। गोवा के कनाकोना शहर में एक निर्माणाधीन इमारत गिरने से 7 लोगों की मौत हो गई थी और 40 से अधिक लोगों की इमारत के भितर दब गए थे। यह हादसा कनाकोना शहर में घटित हुआ था जो राजधानी पणजी से 80 किलोमीटर दूर था। यह हादसा दोपहर तीन बजे के करीब हुआ जब यह इमारत ढही उस समय 40 लोग काम कर रहे थे गत वर्ष महाराष्ट्र में एक इमारत के गिरने से 75 मजदूरों की असमय मौत गई थी और 60 मजदूर घायल हो गए थे आखिर कब तक मजदूर इमारतों में जमीदोज होते रहगें ।यह बहुत ही दर्दनाक हादसा था जिसने एक साथ इतने लोगों को लील लिया था । भले ही प्रशासन मुआवजे का मरहम लगाता है मगर जो बेमौत मारे गये क्या वे लौट आएगें यह एक यक्ष प्रशन बनता जा रहा है।ऐसे हादसे पहले भी हो चुके है जिसमें सैंकड़ों लोग लापरवाही के कारण मारे जा चुके हैं। इमारतों के नीचे दबकर मजदूर काल का ग्रास बन रहे है।हादसों को देखकर रौगंटे खड़े हो जाते हैं देश के राज्यों में चल रहे ईटों के भठठों में मजदूर मारे जा रहे हैं।मजदूरों के पसीने से ही ईटें पकती हैं मगर भठठा मालिक मजदूरों का शोषण कर रहे हैं मजदूर खून-पसीना बहाकर काम करते है।मगर बदले में मेहनताना नाममात्र दिया जाता है।मालिक मजदूरों के सिर पर करोड़ों रुपया कमा रहे है।आंकड़े बताते है कि 2001 से 2019 तक हजारों मजदूर मारे जा चुके हैं। इस घटना ने सवाल खड़े कर दिये हैं कि बार-बार हो रहे इन हादसों के कारण क्या है इस घटना ने यह प्रमाणित कर दिया है कि बीती घटनाओं से न तो सरकार ने सबक सिखा और न ही लोगों ने सीखा। पिछले कई सालों से ऐसे दर्दनाक हादसे हो रहे हैं सरकारें ऐसी घटनाओ के बाद मुआवजों की घोषणा करने तथा जांच के आदेश देने में देरी नहीं करती। देश में प्रतिदिन ऐसे मर्मातंक हादसे होते है मगर प्रकाश में नहीं आते। ।इन हादसों में सैंकड़ों बच्चे अनाथ हो गए और कई मां-बहनों का सिदूर मिट गया और बहनों के भाई मारे गए।केन्द्र सरकार को इन हादसों के संदर्भ में छानबीन करवानी चाहिए तथा दोषियों को सजा देनी होगी। समय रहते इन घटनाओं को रोकने के लिए कारगर कदम उठाने होगें ताकि भविष्य में ऐसी दर्दनाक हादसों पर विराम लग सके।अगर अब भी सरकार ने लापरवाही बरती तो निदोर्ष लोग व मजदूर बेमौत मरते रहेगें।ऐसे हादसो पर रोक के लिए पुख्ता इंतजाम किए जाए ताकि भविष्य में ऐसे दर्दनाक की पुनरावृति न हो सके।

पशु मनोरंजन का साधन

सिद्धार्थ शंकर

केरल में गर्भवती हथिनी की मौत का मामला अभी शांत नहीं हुआ था कि एक और मामला हिमाचल प्रदेश से सामने आया है। यहां बिलासपुर में झंडुता में एक गर्भवती गाय को विस्फोटक खिलाने के मामले ने तूल पकड़ लिया है। यहां किसी ने एक गर्भवती गाय को विस्फोटक खिला दिया। इस कारण गाय बुरी तरह जख्मी हो गई। इस वीडियो के सोशल मीडिया पर वायरल होने के बाद हिमाचल पुलिस ने मामला दर्ज कर लिया है। इस घटना के बाद से ही आस-पास के इलाकों में रह रहे लोगों में आक्रोश है। पहले केरल और अब हिमाचल केरल की घटना ने मनुष्य समाज की संवेदना और समझ को एक बार फिर कठघरे में खड़ा कर दिया है। हिमाचल की घटना ऐसे समय सामने आई है, जब पूरा देश हथिनी की मौत पर नाराज है और तरह-तरह के विचार सामने आ रहे हैं। सवाल यह है कि यह कैसे संभव है कि मनुष्य का साथी रहे हाथी या गाय का जीवन कुछ लोगों के लिए मनोरंजन का मामला हो जाए और वे अपना मन बहलाने के लिए उसकी जान के साथ खिलवाड़ कर उसके मरने का इंतजाम कर दें!

यह सभी को पता है कि पलक्कड़ में जिस हथिनी की जान चली गई, उसने जंगल में विस्फोटकों से भरा एक फल खा लिया था, जिसे किसी ने शायद जानबूझ कर वहां रख दिया था। वह फल हथिनी के मुंह में विस्फोट कर गया और समूचा जबड़ा फट गया, उसके दांत भी बुरी तरह घायल हो गए। दर्द और जलन से छटपटाती हथिनी राहत की तलाश में एक नदी में जाकर खड़ी हो गई और वहीं तीन दिन तक खड़े-खड़े तड़पते हुए जान निकल गई। बाद में जब पोस्टमार्टम के लिए उसे ले जाया गया तब पता चला कि उसके गर्भ में बच्चा पल रहा था। इस घटना का ब्योरा किसी भी संवेदनशील इंसान को दहला देने के लिए काफी था। यही वजह है कि देश भर में इस पर तीखी प्रतिक्रिया आई और दोषियों को खोज कर उनके खिलाफसख्त कार्रवाई की मांग की गई। यह प्रथम दृष्टया एक पशु की मौत की घटना लगती है, लेकिन इससे जिस तरह के पहलू जुड़े होने की खबरें आई हैं, वे परेशान कर देने वाली हैं। जिन लोगों ने अनानास में विस्फोटक भर कर हथिनी के खाने के लिए छोड़ दिया, उनकी संवेदना का स्तर क्या होगा!

ऐसा करने वाले को क्या विस्फोटक से होने वाले नुकसान और उसकी तकलीफका अंदाजा नहीं था? और अब ऐसा ही एक गाय के साथ किया गया। यह प्रथम दृष्टया महज एक पशु की मौत की घटना लगती है, लेकिन इससे जिस तरह के पहलू जुड़े होने की खबरें आई हैं, वे परेशान कर देने वाली हैं। जिन लोगों ने अनानास में विस्फोटक भर कर हथिनी के खाने के लिए छोड़ दिया, उनकी संवेदना का स्तर क्या होगा! ऐसा करने वाले को क्या विस्फोटक से होने वाले नुकसान और उसकी तकलीफका अंदाजा नहीं था? अब वन्यजीव संरक्षण अधिनियम के तहत संबंधित धाराओं में इस मामले में अज्ञात लोगों के खिलाफमुकदमा दर्ज कर लिया गया है और हो सकता है कि पकड़े जाने पर दोषियों को सजा मिल सके। सही है कि कुछ ऐसे जंगली और हिंसक पशुओं से इंसानी आबादी की सुरक्षा जरूरी है, जो किन्हीं वजहों से जानमाल के लिए घातक हो सकते हैं। लेकिन गर्भवती हथिनी के साथ जो हुआ, उससे एक बार फिर यह सवाल उठा है कि जो पशु जंगलों में अपने भरोसे अपना जीवन चलाते हैं और इंसानी आबादी में लाए जाने पर रोजगार से लेकर अन्य कामों में कई तरह से मददगार साबित होते हैं, उसे लेकर भी मनुष्य समाज अक्सर इस हद तक संवेदनहीन क्यों हो जाता है!

इस तरह की घटनाएं अब मनोरंजन का साधन बनती जा रही हैं। अगर इसे यहीं नहीं रोका गया तो दूसरे राज्यों से भी इस तरह की घटनाएं सामने आने लगेंगी। एक बारगी तो इस तरह की घटनाएं सांप्रदायिक सौहार्द्र बिगडने का भी कारण बन सकती हैं। बेहतर है कि दोनों घटनाओं के दोषियों के लिए सख्त सजा का प्रावधान किया जाए, जो दूसरों के लिए नजीर बने और फिर इस तरह की किसी पशु के साथ अमानवीयता न हो।

न्यूज ब्रीफ

मजदूर की चौथी मंजिल से सिड़ीयों से गिरने से हुई मौत

माही की गूंज, बड़वानी। बड़वानी बायपास रोड़ पर नव निर्मित जयपुरीया स्कुल भवन का काम चल रहा है। जहां पर एक मजदूर को चौथी मंजील से अचानक सिड़ीयों से गिरने से जिला अस्पताल बड़वानी लाया गया। जहां पर मजदूर छोटुराम पिता ग्यारसीलाल कुमावत उम्र 23 निवासी सिकर राजस्थान की मृत्यु हो गई। पुलिस ने मर्ग कायम कर जांच में लिया गया है।

23 दुकानें के लायसेंस निरस्त

माही की गूंज, धार। आबकारी विभाग से प्राप्त जानकारी के अनुसार धार जिले में पीथमपुर, बदनावर व गंधवानी समूहों के नीचे तीनों समूहों के लायसेंस निरस्तीकरण के आदेश हैं। उल्लेखनीय है कि प्रदेश के भोपाल, इन्दौर, सागर , देवास, ग्वालियर, मंदसौर, बुरहानपुर की तर्ज पर जिला धार में भी 88 दुकानें हैं, जो कि 10 समूहों में से मात्र 3 समूहों की 23 दुकानों के लायसेंस निरस्त हुए है।

पीपीई किट का किया वितरण

माही की गूंज, सनावद। चिकित्सकों और स्वास्थ्यकर्मियों को कोरोना मरीजों की चिकित्सा के दौरान कोरोना संक्रमण से बचाने के लिए डॉ. अजय मालवीय ने रेवा गुर्जर कॉलेज स्थित कोविड-19 सेंटर और सरकारी अस्पताल को 25 पीपीई किट प्रदान किए। डॉ.मालवीय ने शासकीय अस्पताल की प्रभारी चिकित्सक डॉ. हंसा पाटीदार को 25 पीपीई किट सौंपे। डॉ. मालवीय ने नागरिकों से अपील करते हुए कहा कि कोरोना संक्रमण से बचने के लिए फेस मास्क लगाएं और सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करें। डॉ. पाटीदार ने इसे अनुकरणीय कदम बताते हुए डॉ. मालवीय के प्रति आभार व्यक्त किया। डॉ. पाटीदार ने कहा कि कोरोना वायरस से शरीर को बचाने के लिए रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाना जरूरी है। इसके लिए प्रत्येक नागरिक को पर्याप्त मात्रा में विटामिन युक्त भोजन नियमित रूप से लेना होगा। भोजन के साथ सलाद अवश्य लें। इस अवसर पर समाजसेवी पवन अरझरे, नंदकिशोर छालोत्रा, अस्पताल के चिकित्सक, स्वास्थ्यकर्मी उपस्थित थे।

लगातार बढ़ रहे कोरोना संक्रमण पर खुलते बाजारों ने बढ़ाई नागरिकों की चिंता

माही की गूंज, सनावद। इन दिनों सनावद क्षेत्र में कोरोना संक्रमितों के बढ़ने का सिलसिला चल रहा है। वहीं अनलॉक चरण एक तथा दो मे बाजार, होटल-रेंस्ट्रा, माल आदि खोलने तथा 12 वीं की शेष परीक्षा प्रारंभ होने से कोरोना का संक्रमण बढने का डर भी आम-जन को सता रहा है। अनेक व्यक्ति अपने नागरिक कर्तव्य भूल कर कोरोना प्रोटोकॉल का पालन नहीं कर रहे हैं। मंगलवार नगर के मुख्य बाजार क्षेत्र के प्रतिष्ठानों, सरकारी अस्पताल और बारहवी के परीक्षा केंद्र मुख्यतः शासकीय कन्या स्कूल और रेवा स्कूल जवाहर मार्ग पर में अधिकांश नागरिक सामाजिक दूरी और मास्क का उपयोग नहीं कर रहे थे। ऐसी स्थिति में जरूरी है स्थानीय प्रशासन विभिन्न स्थानों पर लगे सीसीटीवी कैमरे के जरिए ऐसे लोगों को चिन्हित कर उनपर कार्यवाही ताकि उनमें अनुशासन से रहने का भय बन सके। क्योंकि ऐसे बढ़ते हालातों से नगर एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के भी संक्रमितो की संख्या बढ़ने का खतरा है। अतः कोरोना प्रोटोकॉल तहत बिगड़ती व्यवस्था पर अभिलंब प्रशासनिक कसावट की मांग सोशल मीडिया पर उठने लगी है।

माही की गूंज, सनावद।

शहर में इन दिनों कोरोना संक्रमित लोगों के बढ़ने का सिलसिला चल रहा है। जिसके बाद संक्रमितों को कोविड सेंटर भिजवाने का कार्य प्रशासनिक अधिकारी कर रहे है, लेकिन बाजार खुलने से कोरोना संक्रमण बढ़ने का डर भी नागरिकों को सता रहा है। सोमवार शाम को खरगोन से आई रिपोर्ट के अनुसार अम्बेडकर रोड निवासी संक्रमित व्यक्ति के परिवार के तीन महिला एवं तिलक गली में रहने वाले एक परिवार के तीन लोग की पाजेटिव रिपोर्ट आई। जिसके बाद सभी संक्रमित को कोविड सेंटर भेजने के बाद प्रशासनिक अधिकारी वहां के इंतजाम करवा कर रहे हैं। दोनों क्षेत्रों की गलियों में सेनेटाइज करवाने के साथ बेरीगेट लगाकर आवागमन को रोका जाएगा।

लगातार बढ़ रहे मरीज

कोरोना का संक्रमण लगातार अगर में बढ़ रहा है। शुरुआती दिनों में यहां कोरोना के संक्रमित मरीजों का कोई नाम लेने वाला नहीं था। लेकिन जून शुरू होते होते यह आंकड़ा 25 से ऊपर पहुंच गया। नगर एवं आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों के भी संक्रमित इसमें जुड़ते गए। सोमवार शाम को नगर के अंबेडकर गली निवासी एक संक्रमित व्यक्ति की पत्नी उसकी बेटी औ नातिन भी संक्रमित मिले। रिपोर्ट में तिलक गली में भी तीन लोग संक्रमित मिले। रिपोर्ट आने के बाद नायब तहसीलदार राहुल डावर और कृष्णा पटेल ने क्षेत्र में पहुंचकर संक्रमित लोगों की हिस्ट्री जाने की कोशिश कर रहा है।

बाजार खुलने से बढ़ रहा है खतरा

जैसे-जैसे कोरोना वायरस को लेकर प्रशासन शासन द्वारा लॉक डाउन की मियाद बढ़ाई गई। वैसे-वैसे नगर में कोरोना संक्रमित लोगों के निकलने का सिलसिला बढ़ता गया। नगर के बाजार खुलने से भी नागरिकों में इस संक्रमण का डर लगातार बढ़ रहा है। नागरिकों ने बताया कि प्रशासन के लिए जरूरी है की संक्रमित लोगों के रहवासी क्षेत्र के अलावा उन स्थानों की भी आवाजाही रोकी जाये जहां संक्रमित मरीजो का आना जाना था। सोमवार को फिर आई 6 लोगों की पॉजिटिव रिपोर्ट से संक्रमण बढ़ा है। इस कोरोना का संक्रमण बाजार खुलने से भी हो रही है परेशानी कोरोना वायरस का संक्रमण इन दिनों नगर में लगातार बढ़ता जा रहा है लेकिन उसके बाद भी बाजार खुले रहने से नागरिक संक्रमण की चपेट में आने से डर रहे हैं। वहीं प्रशासन के लिए जरूरी है कि संक्रमण को रोकने के लिए प्रयास किया।

कोविड सेंटर भेजा

सोमवार शाम को ही रिपोर्ट के बाद प्रशासन ने 6 संक्रमित लोगों को रेवा गुर्जर कॉलेज स्थित कोविड सेंटर भेजा। यहां पर अगले 7 दिनों तक संक्रमितो का दवाइयां योग प्राणायाम के जरिए कोरोना संक्रमण का उपचार किया जाएगा। क्षेत्र में पहला मामला इंदिरा नगर की महिला सर इसकी शुरुआत हुई थी। लेकिन धीरे-धीरे नगर में करीब 20 से अधिक संक्रमित मरीजों तक यह आंकड़ा पहुंच गया। जिसमें कुछ स्वस्थ होकर घर चले गए। वही कुछ संक्रमितों को शनिवार को डिस्चार्ज किया गया।

किसानों की उपज खरीद कर आगे ऊंचे दामों पर बैचने की हुई शिकायत

- मंडी में चल रही अनियमितताओं को लेकर अधिकारियों को दिलाया ध्यान

देर रात तक तुलाई का काम नही हो पाया किसान हो रहे है नाराज।

माही की गूंज, सनावद।

कृषि उपज मंडी में किसानों की होने वाली परेशानी के बारे में लगातार किसान विरोध करते रहे हैं। अभी किसान कम तुलाई को लेकर नाराजगी जाहिर करते है। तो कभी व्यापारी द्वारा समय पर पैसा नहीं दिए जाने की बात कर रहे है। लेकिन किसानों ने एक अन्य व्यक्ति द्वारा किसानों से उपज खरीद कर उसे आगे ऊंचे दामों में बेचने की शिकायत की तथा मंडी में अनेक अनियमितताओं पर अपनी नाराजगी जाहिर की।

अधिकारियों ने बनाया पंचनामा

किसानों ने हंगामा करते हुए रात 8 बजे नायब तहसीलदार राहुल डावर और कृष्णा पटेल की मौजूदगी में मंडी कर्मचारी तथा मंडी में चल रही अनियमितताओं पर अधिकारियों का ध्यान दिलाया। किसानों ने बताया कि मंडी में किसानों के हक का कार्य नहीं किया जाता है। कुछ कर्मचारी व्यापारियों को लाभ पहुंचाने के मकसद से काम करते हैं। शनिवार को भी करीब 200 से अधिक किसानों की गाड़ी की खरीद नहीं की गई। इससे नाराज किसानों ने हंगामा किया। मंडी में एक व्यापारी द्वारा किसानों से उनकी उपज खरीदी जाती है। जो आगे बढ़ी हुई राशि में बेचने की शिकायत किसानों ने अधिकारियों से की। जिसके बाद अधिकारियों ने मंडी की व्याप्त कमियों को लेकर पंचनामा बनाकर मंडी के उक्त व्यापारी पर कार्रवाई का भरोसा दिलाया। यहां पर किसानों ने उनकी उपज नहीं खरीदे जाने की शिकायत करते हुए अनेक कमियां अधिकारियों को बताई। डावर ने इसके सुधार के निर्देश मंडी सचिव बीएस परिहार को दिए। यहां पर 100 व्यापारियों का खरीदारी के लिए लायनेस जारी किया गया है, लेकिन खरीदी के लिए 5 से 7 व्यापारी ही आते हैं। जिसके बाद बाकी व्यापारियों को सोमवार से आने की बात कही गई। सोमवार से जो व्यापारी मंडी में उपस्थित नहीं होगा। उसका लाइसेंस निरस्त करने के लिए नोटिस दिया जाएगा। साथ ही कर्मचारियों को ड्यूटी के समय वर्दी पहनने के निर्देश दिए। किसानों से उपज खरीदने के बाद आरटीजीएस की आधी राशि का भुगतान तुलाई के समय पर करने की बात कही गई। अधिकारियों ने मंडी में नियमों को फॉलो करने के साथ ही प्रतिदिन नीलामी एवं मंडी के कार्य दिवस के समय अलाउंस के जरिए किसानों को इसकी सूचना देने की बात कही। डावर एवं पटेल ने सोमवार को मंडी में आकर सुधार के लिए दिए गए निर्देशों का पालन करने की बात भी व्यापारियों से कही जाएगी। इस दौरान पटवारी नारायण दस्साने एवं एसआई एसएस पंवार सहित मंडी कर्मचारी मौजूद थे।

शनिवार को एमएसजी प्राप्त किसानों के वाहन के साथ अतिरिक्त वाहन आ गए थे। रात का समय होने से तुलाई कार्य नहीं हो पाया। जिसके बाद किसानों ने नाराजगी जाहिर करते हुए भार साधक अधिकारी को बुलाने की मांग की। जहां मौके पर नायब तहसीलदार डावर एवं पटेल ने पहुंचकर किसानों के चर्चा के बाद रविवार को भी बाकी बचे के किसानों की उपज खरीदी गई।

लायंस क्लब इंटरनेशनल का 104 वां स्थापना दिवस कोरोना योद्धाओं का सम्मान कर मनाया

माही की गूंज, सनावद। लायंस क्लब इंटरनेशनल के 104 वें स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में कोरोना योद्धाओं का सम्मान करने का निर्णय लॉयंस क्लब स्नेह तथा लॉयनेस क्लब ने लिया है।

यह जानकारी देते हुए क्लब अध्यक्ष अनिता भागचंद जैन ने बताया कि क्लब का स्थापना दिवस 7 जून है। इस तारतम्य में क्लब सदस्यों ने रविवार की शाम स्थानीय पुलिस थाने में पुलिसकर्मियों और पत्रकारों का सम्मान किया। जैन और क्लब सदस्यों ने थाने में पदस्थ समस्त पुलिसकर्मियों और पत्रकारों को फेस मास्क और सेनिटाइजर के साथ प्रशस्ति पत्र प्रदान किए। इस अवसर पर जैन ने कहा कोरोना जैसी प्राणघातक और विश्वव्यापी महामारी के समय पुलिसकर्मियों ने कर्त्तव्यनिष्ठा और साहस के साथ नागरिकों की जीवनरक्षा हेतु सराहनीय योगदान किया। इसी प्रकार पत्रकार साथियों ने भी कोरोना संक्रमण के विरूद्ध जनजागरण का दायित्व सजगतापूर्वक निभाया है। कार्यक्रम संचालक विपिन गुप्ता ने कहा कि मीडिया ने आम जन को कोरोना वायरस के बारे में त्वरित और सटीक जानकारी प्रदान कर जागरूक करने का कार्य बखूबी किया है। क्लब सचिव रेणुका गुप्ता ने कहा कि सनावद को कोरोना मुक्त रखने के प्रयासों के लिए डॉक्टर्स, नर्स, नगरपालिका, बैंक के योद्धाओं को भी उनके विभाग में जाकर अलग-अलग सम्मानित किया जाएगा। उपनिरीक्षक प्रकाश शाही ने क्लब के कार्यों की सराहना की और पुलिकर्मियों के सम्मान पर आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर समाजसेवी भागचंद जैन,राजेश जटाले,आदित्य पंचोलिया, वैशाली पंचोलिया भी उपथित थे।

महिला एवं बाल विकास विभाग में आडिट के नाम पर हुई अवैध वसूली

जिला कार्यक्रम अधिकारी की निष्क्रियता के कारण जनोन्मुखी योजनाओं का लाभ हितग्राहियों को नहीं मिल पा रहा

माही की गूंज, धार। महिला एवं बाल विकास विभाग के अधिकारियों ने विभाग की आंगनवाडी कार्यकर्ताओ से आडिट के नाम पर जबरन दवाब पूर्वक डरा धमकाकर अवैध वसूली की है। उक्त अवैध वसूली की जानकारी विभाग के वरिष्ठ अधिकारी को भी है। विभाग की आंगनवाडी कार्यकर्ताओं को वेतन के नाम पर अल्पवेतन मिलता हैं। वेतन भी निर्धारित समय पर नहीं मिलता है। अल्पवेतन कर्मचारियों से ऑडिट के नाम पर 200 रुपये प्रति आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओ से लिये गये हैं। नाम नहीं छापने की शर्त पर बताया गया कि रुपये नहीं देने पर आंगनवाड़ियों के समस्त रजिस्टरों का रिकॉर्ड चौक करने की धौस दी जाती हैं। अवैध वसूली का प्रकरण पूर्व में भी हो चुका हैं। जिसमें विभाग की सुपरवाइजर ने कार्यकर्ता या सहायिका से एक हजार रुपए की मांग की थी और बाद में लोकायुक्त प्रकरण भी दर्ज हुआ था।

होमटेक सत्तू का वितरण नहीं हो रहा

सूत्रों से मिली जानकारी के अनुसार विगत दो ढाई माह से लॉक डॉउन के कारण विभाग की आंगनवाडी बंद थी, किन्तु शासन द्वारा होमटेक सत्तू का वितरण प्रतिमाह वितरण के निर्देश है। किन्तु क्षेत्र की आंगनवाडी विगत दो ढाई महीने से नहीं खुल रही हैं और न ही सत्तू का वितरण भी नहीं किया जा रहा है। विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी, अस्वस्थ होने के कारण विगत कुछ महीने से अपने कार्यालय में निर्धारित समय पर नहीं बैठ पा रहे हैं और अपने निवास पर ही फाइलों को बुलाकर देख लेते हैं। और कुछ समय विभाग में आकर भी बैठते हैं। जिला कार्यक्रम अधिकारी की निष्क्रियता के कारण महिला एवं बाल विकास विभाग की योजनायें दम तोड़ती नजर आ रही है। सारी योजनाओं को कागज पर ही संचालित किया जा रहा है। कागजों पर ही खाना पूर्ति कर अपने कर्तव्य की इतिश्री की जा रही हैं। मध्यप्रदेश सरकार की जनोन्मुखी योजनाओ का लाभ हितग्राहियों को नहीं मिल पा रहा है।

जिम्मेदार क्या बोले

इस संबंध में महिला एवं बाल विकास विभाग के जिला कार्यक्रम अधिकारी का पक्ष जानना चाहा तो उनका मोबाइल बंद आया।

प्रशासनिक अधिकारियों ने ली मंदिर के पुजारी तथा होटल संचालकों की बैठक

कोविड-19 के बचाव के लिए दिए निर्देश पालन नहीं होने पर की जाएगी कार्रवाई

माही की गूंज, सनावद।

कोरोना वायरस कोविड-19 के संक्रमण से ग्रसित नागरिक आपके शहर में भी है। कृपया सावधानी रखकर इससे बचे। साथ ही धार्मिक स्थल एवं होटल लाज पर आप संचालकों को विशेष नजर रखना होगी। नगर पालिका परिषद कक्ष में आयोजित बैठक के दौरान एसडीएम मिलिंद ढोके ने मंदिर के पुजारी एवं होटल संचालकों को शासन द्वारा प्राप्त निर्देशों की जानकारी देकर इसका पालन करने का हवाला दिया। बैठक के दौरान एसडीएम ढोके ने बताया कि शासन ने निर्देश दिए कि सार्वजनिक स्थानों पर जहां तक संभव हो 6 फीट की दूरी रखी जावे। चहरे को फेस माक्स से ढकना अनिवार्य रूप से करें। दिखने में गंदे ना होने पर भी साबुन एवं पानी से बार-बार 40 सेकंड तक हाथ धुलवाए। अल्कोहल युक्त सेनीटाइजर रखें। कम से कम 20 सेकंड तक सेनेटाइजर से हाथ धुलवाए। खासते छीकते वक्त मुंह पर रुमाल टिशू पेपर का उपयोग करें। स्वयं के स्वास्थ्य की निगरानी भी आप करें। बीमारी के लक्षण होने पर तत्काल हेल्पलाइन नंबर से संपर्क करें। सार्वजनिक स्थानों पर थूकना वर्जित है। आरोग्य सेतु ऐप डाउनलोड करने का सभी को सलाह दी गई।धार्मिक स्थलों के लिए प्रवेश द्वार पर सेनेटाइजर करने के इंतजाम सुनिचशीत करे। जिनको सर्दी खासी बुखार आदि होने पर मंदिर परिसर में प्रवेश की अनुमति नही रहेगी। फेस माक्स पहनने पर ही प्रवेश की अनुमति रहेगी। कोविड-19 से बचाव संबंधी प्रस्ताव ऑडियो वीडियो क्लिप द्वारा बचाओ एवं शासन के बताए नियमो का प्रसार करे। जूते चप्पल स्वयं के वाहन में खोलकर आने एवं परिसर के बाहर पार्किंग में सोशल डिस्ट्रेसन का पालन सुनिश्चित करें। धार्मिक प्रतिष्ठानों को अनिवार्य है सोशल का पालन करें। आने एवं जाने का मार्ग अलग अलग हो। मार्ग मे गोले के निशाने एवं प्रवेश के लिए कतार में कम से कम 6 फीट की दूरी सुनिश्चित करें। मूर्ति धार्मिक ग्रंथ को स्पर्श करने की अनुमति न दें। धार्मिक प्रतिष्ठानों में प्रसाद चरणमृत का छिड़काव नहीं करे। धार्मिक प्रतिष्ठान में फुल, नारियल, अगरबत्ती, चादर आदि चढ़ाने की अनुमति न दें। मंदिर में घंटी बजाने की अनुमति ना दे। रेलिंग का स्पर्श करने से बचने की सलाह से अधिक संख्या में लोगों को जानकारी देवे। बैठक के दौरान नायब तहसीलदार राहुल डावर कृष्णा पटेल प्रभारी थाना प्रभारी शकुंतला डोडवे एसआई नीरज लोधी पटवारी नारायण दस्साने पंडित संदीप बर्वे पंडित जय प्रकाश दुबे अंजुमन सदर मिर्जा खालिद बेग सहित अन्य धार्मिक संस्थान से जुड़े नागरिक मौजूद थे।

दुकानों पर पालन नहीं होने पर सील की जाएगी दुकान

एसडीएम ढोके ने बैठक के दौरान शासन द्वारा दुकान एवं प्रतिष्ठानों के लिए भी आए नियमों की संक्षिप्त जानकारी वहां मौजूद लोगों को दी। एसडीएम श्री ढोके ने बताया कि शासन द्वारा दुकानों पर 5 से अधिक व्यक्ति एवं शासन द्वारा तय मापदंडों का पालन किया जाएगा। जिन दुकानों पर 5 से अधिक लोग बिना फेस मार्क्स और बिना सैनिटाइजर के मिलने पर उक्त दुकान पर कार्रवाई की जाएगी। जिसके लिए नायब तहसीलदार कृष्णा पटेल और सीएमओ राकेश चौहान के निर्देशन में एक टीम गठित की गई है। जो टीम नगर के प्रतिष्ठान एवं दुकानों पर सर्चिंग करेगी। साथ ही जिस दुकान की शिकायत आती है। वहां जाकर कार्रवाई करने से पीछे नहीं हटा हटा जाएगा। नागरिकों द्वारा फेस माक्स नहीं पहने पर नगर पालिका द्वारा 100 रुपये की चालानी कार्रवाई एवं दुकानों पर 5 से अधिक ग्राहक होने पर 5 हजार रुपये की चालानी कार्रवाई कर दुकान को सील कर दिया जाएगा।

अब एक क्लिक में मिलेगी शहरी पथ व्यवसायियों की पूरी जानकारी

माही की गूंज, बड़वानी। कोविड-19 महामारी के कारण शहरी पथ व्यवसायियों का रोजगार तथा उनकी आजीविका प्रभावित हुई है। इन्हें पुनः रोजगार से जोड़ने तथा उनकी पूरी जानकारी एक्जाई करने के उद्देश्य से शहरी असंगठित कामगार एकीकृत पोर्टल तैयार किया गया है। पंजीयन के बाद पथ व्यवसायियों की पूरी जानकारी एक क्लिक में मिल सकेगी। पंजीयन अभियान 25 जून तक चलेगा।

पोर्टल में नगरीय विकास एवं आवास विभाग द्वारा सभी पथ व्यवसायियों की जानकारी एकत्रित करने के लिए वर्ष 2012 में किए गए सर्वे को आधार मानकर हितग्राहियों का पंजीयन किया जाएगा। प्रत्येक शहरी क्षेत्र में वर्ष 2012 में दर्ज किए गए व्यवसायियों की जानकारी बढ़ अथवा घट सकती है। इसमें पुराने व्यवसायियों के नाम जो अब कार्यशील नहीं हैं, उनके नाम काटे जा सकेंगे, और नए नाम उपलब्धता के आधार पर जोड़े जाएंगे। इस तरह से वर्तमान में शहरी क्षेत्र में उपलब्ध सभी पथ व्यवसायियों की जानकारी दर्ज की जाना है।

वार्डवार दलों का गठन

प्रमुख सचिव नगरीय विकास एवं आवास नीतेश व्यास ने संबंधित अधिकारियों को 25 जून तक पथ व्यवसायियों के पंजीयन के लिए अभियान चलाने के निर्देश दिए हैं। पंजीयन के लिए नगरीय निकायों में वार्डवार दल गठित किए जाएंगे। पंजीयन नगरीय विकास एवं आवास विभाग के सभी कार्यालयों में अथवा एमपी ऑनलाइन के कियोस्क में निः शुल्क करवाया जा सकता है।

पोर्टल से लाभ

सभी पात्र हितग्राहियों की जानकारी पोर्टल में रखी जा सकेगी। पोर्टल के माध्यम से हितग्राहियों को समय पर पारदर्शिता के साथ विभिन्न योजनाओं का लाभ दिया जा सकेगा। हितग्राहियों का पूरा डेटाबेस होने से उनके लिए बेहतर योजनाएँ बनायी जा सकेंगी। साथ ही उनके द्वारा किये जा रहे कार्यों की निगरानी भी की जा सकेगी।

पंजीयन प्रक्रिया

पात्र हितग्राही www.mpurban.gov.in पर आधार एवं समग्र के आईडी के आधार पर स्व-पंजीयन कर सकेंगे। हितग्राही का मोबाईल नम्बर, आधार नम्बर से जुड़ा होना चाहिए, जिस पर ओटीपी प्राप्त हो सके। पात्र हितग्राही द्वारा स्वयं की जानकारी का स्व-प्रमाणन भी किया जाएगा। पंजीयन के लिए आवेदन करने के बाद हितग्राही को एसएमएस द्वारा कन्फर्मेशन मेसेज भेजा जाएगा। हितग्राही को एक संदर्भ नम्बर प्राप्त होगा, जिससे वह भविष्य में अपने आवेदन की अद्यतन स्थिति पता करने में उपयोग कर सकेगा।

जिला पंचायत सीईओ संदीप शर्मा के खोखले दावे की खुली पोल, मजदूर नही मशीन से हो रहा काम

जमीन पर नहीं का कागजो में दर्ज हो रहे मजदूर, जयस ने सीईओ लगाए गंभीर आरोप

माही की गूंज, झाबुआ।

कोविड 19 महामारी के चलते जिले भर के प्रवासी मजदूर अपने जिले में लौट आए। जिनके सामने रोजी रोटी का संकट पैदा न हो इस बात को ध्यान में रखते हुए प्रदेश के मुखिया मामा शिवराज चौहान ने प्रवासी मजदूरों को उनके इलाके में ही रोजगार मिले जिसके लिए जिले भर में योजनाए चलाई मगर धरातल पर उन योजनाओं का लाभ प्रवासी मजदूरों को मिलना तो दूर उनके सामने रोजी रोटी का संकट पैदा हो गया है और मजदूर पुनः परमिशन लेकर गुजरात सहित अन्य राज्यो में काम के लिए जा रहे है

जयस ने खोला मोर्चा ,प्रेस वार्ता में लगाये आरोप

जयस जिला मीडिया प्रभारी दिनेश वसुनिया जिला जनपद सीईओ को आड़े हाथों लेते हुबे कहा कि जिला सीईओ 1 लाख लोगों को रोजगार देने की बात कर रहे है वह झूठ है कई जगह लोगो को काम नही मिल रहा जेसीबी से कार्य किये जा रहे जिसके प्रमाण वीडियो हमारे पास मौजूद है जिला सीईओ क्यो झूट बोल रहे है , वास्तव में 1 लाख लोगों को रोजगार मिलता तो हमारे मजदूर भाईयो को इस संकट की घड़ी कोविड 19 महामारी के समय काम के लिए अन्य राज्यो में नही जाना पड़ता जिला जनपद सीईओ झूठा भ्रम फैला रहे है।

ऐसा भ्रष्ट जनपद सीईओ हमने आज तक नही देखा

जयस के मीडिया प्रभारी ने आरोप लगाते हुवे कहा कि जिला सीईओ कागजी आकड़ो के आधार पर खूब वाही वाही लूट रहे है मगर धरातल पर हकीकत कुछ और है उन्होंने आरोप लगाते हुवे कहा कि जिला सीईओ काम के बदले रिश्वत मांगते है कई मंत्री सरपंचों ने भी इस बात से हमे अवगत करवाया एक ओर यहां लोगों को रोजगार देने की बात मामा शिवराज कर रहे है और जिला जनपद सीईओ काम के बदले राशि मांग रहा है ऐसा भ्रष्ट सीईओ हमने आज तक नही देखा ऐसे भ्रष्ट अधिकारी का हम विरोध करते है , कई जगह कामो मैं जेसीबी का इस्तेमाल किया जा रहा है फर्जी मस्टर तैयार किये जा रहे है लोगो को काम नही मिल रहा है प्रवासी मजदूर परेशान है मगर यह सीईओ मामा शिवराज की योजनाओ को मूर्त रूप देने की बजाय भ्रम फैला रहा है कि जिले में 1 लाख लोगों को रोजगार दिया यह सरासर गलत है इसके लिए जयस लड़ाई लड़ेगा। इस प्रेस वार्ता में जयस के नगर अध्यक्ष माधुसिंह डामोर ने भी जिला जनपद सीईओ को आड़े हाथों लिया और कहा कि जनपद सीईओ जिले भर मे अफ्वाह न फैलाये इस प्रेस वार्ता में जयस के अन्य कार्यकर्त्ता भी मौजूद थे।

बैंड-बाजा व्यवसाईयों ने लॉकडाउन में आर्थिक तंगी को लेकर दिया आवेदन

माही की गूंज, झाबुआ। शहर के बैंड-बाजा व्यवसाईयों ने कोरोना वायरस महामारी के कारण लगे लॉकडाउन में गत 21 मार्च से व्यवसाय पूरी तरह से ठप्प होकर बंद होने से इन व्यवसाईयों एवं परिवारजनों की आर्थिक मद्द करने तथा व्यवसाय खोलने की अनुमति देने की मांग को लेकर जिला कलेक्टर एवं एसडीएम झाबुआ को आवेदन दिया।

शहर के बैंड-बाजा व्यवसायी जगदीश पंवार, दिनेश पंवार, रूपेशचन्द्र, लोकेन्द्रभाई, हेमेन्द्र पंवार, सुनिल पंवार, संदीपभाई आदि ने दिए गए आवेदन में बताया कि कोरोना वायरस महामारी के कारण संपूर्ण जिले में 21 मार्च से लॉकडाउन के बाद से ही हमारा व्यवसाय पूरी तरह से बंद हो गया है। सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रम नहीं होने के साथ ही शादियों की बाराते भी नहीं निकलने से व्यवसाय बंद पड़ा है। शासन-प्रशासन की ओर से बैंड-बाजा व्यवसाईयों को अपना व्यवसाय खोलने की अब तक छूट नही दी गई है।

व्यवसायी अत्यधिक आर्थिक बोझ के तले दब गए है

जिससे हमे काफी आर्थिक तंगी का सामना करना पड़ रहा है। परिवार का भरण-पोषण करने में भी दिक्कते आ रही है। बैंड-बाजा कार्य में जो मजदूर लगते है, उन्हें भी जेब से पैसा देकर उनकी पूर्ति करना पड़ रहीं है। उक्त समस्त व्यवसायी अत्यधिक आर्थिक बोझ के तले दब गए है। आवेदन में मांग की गई कि विपदा की इस घड़ी शासन-प्रषासन हमारी आर्थिक मद्द करे। साथ ही हमारे व्यवसाय को भी खोलने की अनुमति प्रदान की जाए। आवेदन प्राप्त करने के पश्चात् कलेक्टर श्री सिपाहा एवं एसडीएम श्री खराड़ी ने इस मामले में उचित कार्रवाई का आश्वासन व्यवसाईयों को दिया।

जिला आपदा प्रबंधन की बैठक में कलेक्टर के समक्ष रखी छोटे व्यापारियों की समस्याएं

कलेक्टर ने अपने आदेश में इन दुकानों को खोलने की दी छूट

माही की गूंज, झाबुआ।

सकल व्यापारी संघ अध्यक्ष नीरजसिंह राठौर ने अनलॉक-01 के प्रथम चरण में सोमवार को दोपहर हुई जिला आपदा प्रबंधन की बैठक में इस बार विशेषकर जिले के होटल, रेस्टोरेंटों, पान-मसाला, चाय-नाश्ते की ठेलागाड़ी, गुमटी व्यवसाईयों, ऑटो रिक्शा, लोडिंग रिक्शा व्यवसाईयों के बारे में बताया कि ये व्यवसायी निधर्न वर्ग से होकर पिछले करीब ढ़ाई महीने से लॉकडाउन के कारण इनका व्यवसाय पूरी तरह से बंद पड़ा है। इन सभी व्यवसाईयों को काफी आर्थिक तंगी का शिकार होना पड़ रहा है। जिस पर जिला कलेक्टर ने इन व्यापारियों की समस्याओं की ओर ध्यान देते हुए तत्काल ही इसी दिन शाम को जारी अपने आदेश में जिलेभर में व्यवसाइयों को लॉकडाउन में दुकानें खोलने की आंशिक छूट प्रदान की। दुकानें खोलने का समय भी बढ़ाकर सुबह 7 से रात्रि 8 बजे तक किया गया है।

हाट बाजार के दिन खाद-बीज तथा कृषि उपकरणों को मंजूरी

इसके साथ ही सकल व्यापारी संघ की ओर से जिले में लगने वाले हाट बाजारों के दिन, हाट बाजार तो आगामी 6 महीने तक प्रतिबंधित है, लेकिन इस दिन यदि ग्रामीणजन तथा किसान वर्ग खरीदी के लिए आते है, तो उनके लिए बाजारों में मेडिकल, पेट्रोल पंप जैसी इमरजेंसी सेवा की तरह खाद, बीज तथा कृषि उपकरणों की दुकानें भी खोले जाने की अनुमति प्रदान करने की मांग रखी। जिसे भी जिला कलेक्टर सिपाहा द्वारा स्वीकारते हुए अपने आदेश में अनुमति प्रदान की गई।

शहर में करवाया एलाउंस

सकल व्यापारी संघ ने मंगलवार को शहर का बाजार खुलने पर ऑटो रिक्शा के माध्यम से एलाउंस भी करवाया गया। जिसमें अपील की गई कि जिलेभर में बाजार खुलने के बाद हमें आगामी 3 महीने तक 4 चीजों का विशेष ध्यान रखना है। घर से बाहर निकलते समय पर मुंह पर मास्क या गमछा-रूमाल अनिवार्य रूप से पहनकर निकले। शारीरिक दूरी का आवश्यक रूप से पालन किया जाए। दुकानदारों के साथ सभी प्रतिष्ठानों के संचालक अपनी दुकान पर सेनेटाईजर का उपयोग आवश्यकरूप से करे। हाथों को साबुन से बार-बार धोएं आदि सावधानी रखते हुए शासन-प्रशासन को सहयोग करें।

शहर में शासन-प्रशासन के नियमों का पालन हेतु करवाया गया एलाउंस।

ऑनलाईन कवि सम्मेलन का हुआ आयोजन

माही की गूंज, झाबुआ।

अखिल भारतीय साहित्य परिषद् झाबुआ इकाई के बेनर तले विश्व पर्यावरण दिवस के अवसर पर अभा साहित्य परिषद के प्रांताध्यक्ष त्रिपुरारीलाल शर्मा के मार्गदर्शन में ऑनलाइन कवि सम्मेलन का आयोजन का आयोजन किया गया। यह कवि सम्मेलन कोरोना एवं पर्यावरण को दृष्टिगत रखते हुए 'एक शाम कोरोना के नाम' विषय पर आयोजित हुआ। आयोजन ख्यात मंचीय कवि ब्रजकिशोर पटेल 'इटारसी' के मुख्य आतिथ्य एवं हिन्दी के सशक्त हस्ताक्षर डॉ. रामशंकर चंचल की अध्यक्षता में मां शारदा साहित्य समूह पर आयोजित किया गया। कार्यक्रम के आयोजक अभा साहित्य परिषद के जिलाध्यक्ष भेरूसिंह चौहान 'तरंग' थे।

प्रारंभ में मां सरस्वतीजी के चित्र पर माल्यार्पण कर दीप प्रज्वलन किया गया। सरस्वती वंदना ब्रजकिशोर पटेल ने प्रस्तुत करते हुए ''हम भी कभी उफनता हुआ ज्वार थे, आजकल भाटा हो गए और जब ससुरा कोरोना वायरस बूढ़ों पर ज्यादा अटेक करता है, सुनकर कांटा हो गए है, के साथ ही कई रचनाएं सुनाई। उक्त प्रस्तुति ने श्रोताओं की खूब दाद बटोरी। अतुल देशमुख ने व्यथित पेड़ों की पीढ़ा को व्यक्त किया। डॉ. गीता दुबे ने 'पेड़ कटा, घोंसला गिरा ,बेघर हो गई चिड़िया, ची-ची करती, शोर मचाती, घर में घुस आई है चिड़िया''। भेरूसिंह चौहान ने 'कोरोना से जंग लड़ेंगे, उसको आज भगाएंगे, हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई मिलकर साथ निभाएंगे, गीत की प्रस्तुती दी और वाहवाही बटोरी।

ऑनलाईन कवि सम्मेलन में कवियों एवं साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया।

रोटी पाने की चाह में देश-विदेश भटका

डॉ. अंजना मुवेल ने 'रोटी तुझे पाने के चाह में देश-विदेश भटका बहुत, तुझे पाने की चाह में घर छोड़ा'। रत्नदीप खरे ने 'ये मस्जिद जरूरी है, न वो मंदिर जरूरी है, किसी बेघर का बन जाए कहीं घर जरूरी है। डॉ. रामशंकर चंचल ने अपनी लघु कथा प्रस्तुत की। जिसे काफी सराहा गया। मकनसिंह खपेड एवं डॉ. अर्चना राठौर ने कोराना वायरस को लेकर बहुत ही सुंदर रचना प्रस्तुत की। पं. गणेशप्रसाद उपाध्याय ने 'हमने पीपल को पूजा, तुलसी को अर्घ्य चढ़ाया है'। महेंद्रकुमार खुराना, रमेशदास वैरागी एवं गोवर्धनलाल शाह ने भी अपनी सुंदर रचनाएं प्रस्तुत की। कार्यक्रम का सफल संचालन प्रवीणकुमार सोनी 'पुष्प' ने किया एवं आभार भेरूसिंह चौहान ने माना।

भाजपा ने मनाई क्रांतिकारी बिरसा मुंडा की पुण्यतिथि

माही की गूंज, झाबुआ। भारतीय इतिहास में बिरसा मुंडा एक ऐसे आदिवासी नेता और लोकनायक थे जिन्होंने भारत के झारखंड में अपने क्रांतिकारी चिंतन से उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आदिवासी समाज की दशा और दिशा बदलकर नवीन सामाजिक और राजनीतिक युग का सूत्रपात किया,काले कानूनों को चुनौती देकर बर्बर ब्रिटिश साम्राज्य को चुनौती ही नहीं दी बल्कि उसे सांसत में डाल दिया। उन्होंने आदिवासी लोगों को अपने मूल पारंपरिक आदिवासी धार्मिक व्यवस्था,संस्कृति एवं परम्परा को जीवंत रखने की प्रेरणा दी,आज आदिवासी समाज का जो अस्तित्व एवं अस्मिता बची हुई है तो उनमें उनका ही योगदान है, बिरसा मुंडा सही मायने में पराक्रम और सामाजिक जागरण के धरातल पर तत्कालीन युग के एकलव्य और स्वामी विवेकानंद थे। उक्त बात झाबुआ रतलाम अलीराजपुर सांसद गुमानसिंह डामर ने बिरसा मुंडा की पुण्यतिथि अवसर पर कही।

वही भाजपा जिला अध्यक्ष लक्ष्मण सिंह नायक ने कहा कि जन नायक बिरसा मुंडा ने किसानों का शोषण करने वाले जमींदारों के विरुद्ध संघर्ष की प्रेरणा भी लोगों को दी। उनका संघर्ष एक ऐसी व्यवस्था से था, जो किसानी समाज के मूल्यों और नैतिकताओं का विरोधी था। भाजपा प्रदेश कार्यकारिणी सदस्य शैलेश दुबे ने कहा कि जन नायक बिरसा मुंडा की जननीति से सभी वर्ग के आमजन भी प्रभावित थे। उनकी इसी दूर दृष्टि और क्रांतिकारी सोच को देखकर ब्रिटिश सरकार भी भयभीत हो गयी थी। वही प्रदेश भाजपा कार्यकारिणी सदस्य दौलत भावसार ने कहा कि बिरसा मुंडा का पूरा जीवन समाज को एकजुट करने और समाज की तरक्की पर ही विशेष ध्यान रहता था। बिरसा मुंडा समाज सेवी के साथ जन नायक, भगवान के नाम से भी उनका नाम आदर पूर्वक लिया जाता था। भाजपा झाबुआ जिला द्वारा आयोजित पुण्यतिथि कार्यक्रम में सांसद गुमानसिंह डामोर, भाजपा जिला अध्यक्ष लक्ष्मणसिंह नायक, जिला उपाध्यक्ष अजय पोरवाल, अजजा मोर्चा जिला अध्यक्ष शैलेन्द्र सोलंकी, अंकुर पाठक, धनसिंह बारिया, अजय सोनी, चेतना चौधरी, पर्वत मकवाना, अमरू अजनार, मितेश गादीया, संगीता पलासिया, विजय चौहान आदि कार्यकर्ता उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन भाजपा जिला उपाध्यक्ष अजय पोरवाल और आभार नाना राठौर ने माना।

आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था के स्थान को परिवर्तन को लेकर ग्रामीणों ने की मांग

झाबुआ। नईदुनिया प्रतिनिधि

आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था मर्यादित देवझिरी के स्थान परिवर्तन को लेकर मंगलवार को दोपहर झाबुआ शहर के आसपास के ग्रामीण अंचलों के करीब 50 से अधिक ग्रामीणजन जिला मुख्यालय पहुंचे और जिला कलेक्टर प्रबल सिपाहा तथा उपायुक्त सहकारिता विभाग को ज्ञापन देकर मांग रखी कि देवझिरी सोसायटी का स्थान परिवर्तन कर इसे झाबुआ शहर या सटकर ही कहीं आसपास संचालित की जाए, जिससे ग्रामीणों को आवागमन में परेशानी ना हो।

मंगलवार को झाबुआ से सटे ग्राम सेमल्या, माकनकुई, कुशलपुरा, पानकी, उमरी, पिपलीया, गडवाड़ा, डूंगरालालू, डूंगराधन्ना, बाटियाबरडी, नवागांव के झीतरा भूरजी अमलिया, सुरेश गुल्ला, कैलाश तोलिया, बहादुर रूपा डामोर, कालिया रेसिंह, पानु पांगला डामोर, बापू खूना, जामसिंह कालिया भूरिया, कैलाश बारिया, जवाहर बारिया आदि द्वारा 100 से अधिक ग्रामीणों के हस्ताक्षरयुक्त दिए गए आवेदन में बताया गया कि हम सभी आदिम जाति सेवा सहकारी संस्था मर्यादित देवझिरी के स्थाई कृषक सदस्य होकर विगत कई वर्षों से संस्था से खाद, बीज नगद एवं उधार लेते है तथा बचत बैंक का कार्य भी करते आ रहे है। संस्था द्वारा पूर्व में गोपाल कॉलोनी में कार्य किया जाता था। संस्था का निजी भवन ग्राम देवझिरी में बनाया गया था तथा संस्था का संपूर्ण कार्य कुछ समय के लिए ग्राम देवझिरी से किया गया था। किंतू आने-जाने में हितग्राहियों को काफी असुविधाएं होती है। ज्ञापन में मांग की गई कि उक्त आदिम जाति सहकारी सेवा संस्था का स्थान परिवर्तन कर झाबुआ या उससे सटे ग्राम डूंगराधन्ना, पिपलीया, गडवाड़ा, आईटीआई कॉलेज के आसपास संचालित की जाए। इसके साथ ही प्रत्येक गांव में कम से कम एक गाड़ी खाद करीब 20 से 25 टन की आवश्यकता होती है, यह गांवों में सीधा प्रदाय करने की मांग रखी गई। इस मामले में उचित कार्रवाई का आश्वासन कलेक्टर सिपाहा तथा उपायुक्त सहकारिता विभाग की ओर से दिया गया।

उपायुक्त सहकारिता विभाग को ज्ञापन प्रेषित करते ग्रामीण किसान वर्ग।

सट्टा बाजार हुआ सक्रिय नगर में दिखने लगे सटोरिये

माही की गूंज, झाबुआ।

कोरोना वायरस की चेन को रोकने के लिये जिला प्रशासन द्वारा झाबुआ जिले को लॉक डाउन किया गया था। जिस पर से प्रशासन की आंशिक छूट के बाद ही सटौरियो ने भी अपना मुंह खोलना शुरू कर दिया। यह सटोरिया शहर के लक्ष्मीबाई मार्ग, हास्पीटल कालोनी, राजगढ नाका, रामकृष्ण नगर , गोपाल कालोनी, नगर पालिका के बाहर , बस स्टैण्ड, राजवाडा चौक, आदि स्थानो पर सट्टा लगाने वाले सटौरियो को आसानी से देखा जा सकता है। पुलिस विभाग की लचीली कार्यप्रणाली के कारण नगर मे ही सटौरिये खुले आम घूम रहे है।

नगर में सटौरियो के द्वारा अब घूम घूम कर सट्टे का कारोबार चलाया जा रहा है। जिसके कारण पुलिस इन पर नजर तो रख रही है लेकिन इन्हे पकड नही पा रही है। जिसका फायदा उठाकर ये सटौरिये एक स्थान से दुसरे स्थान पर अपने कारोबार को चला रहे है। नगर मे लॉक डाउन के तहत मिली आंशिक छूट के दौरान ही सटौरियो ने अपने धंधे को शुरू कर दिया। सटौरियो के द्वारा दो पहिया वाहनो पर घूते हुये मोबाईल द्वारा इस व्यवसाय को संचालित किया जा रहा है। सटौरियो के द्वारा गली गली घूम कर सट्टा लगाने ओर खिलवाने का कार्य किया जा रहा है ।इन सटौरियो के द्वारा अपना कोई एक ठिकाना नही बनाया गया है। ये कभी पानी की दूकानो , कभी चाय की दूकानो या फिर किसी किराने की दूकानो, या फिर बाजारो मे घूमते हुये दिखाई देते है। शहर मे एक गली जो सट्टा गली के नाम से भी अधिक प्रचलित हुई है। जिसमे नगर के लोगो तक को मालूम है कि यहा सट्टे का कारोबार चलता है। लेकिन पुलिस की कार्यप्रणाली से तो लगता है उनहे यह जानकारी ही नही है। सुत्रो की माने तो कई लोगो का यह तक मानना है कि ये सटौरिये पुलिस के साथ तालमेल जमा कर ही अपना धंधा चला रहे है। जब आम लोगो को यह सुचना है कि ये सट्टे का खाईवाल है तो फिर पुलिस की मुखबिरी तो सबसे तेज होती है आखिर इन लोगो पर पुलिस का शिकंजा क्यो नही कसा जा रहा है। आखिर क्यो गिने चुने लोगो को ही पकड कर पुलिस के द्वार इतिश्री कर ली जाती है। आखिरकार पुलिस के हाथो बडे बडे सट्टे बाज क्यो नही हाथ आते है। ये बात समझ से परे है।

युवा वर्ग धस रहा सट्टे के दलदल में

युवा वर्ग धस रहा सट्टे के दलदल मे

नगर में सटौरिये के ाकरण युवा वर्ग व ग्रमीण युवा भी इस दलदल की ओर धसती जा रहे है। वही इन सटौरियो के कारण नगर मे युवा वर्ग को शामिल कर इनसे सट्टे का कारोबार कर उन्हे लूटा जा रहा है। वही ऐसे कई युवा वर्ग इस गौरखधंधे में फंस चुके है जिनमे कई युवा वर्ग को सट्टे के पैसे जुटोन ओर उसे खेलने के लिये अपराध का सहारा लेना पडता है। जिससे उनके द्वारा कई ऐसे कृत्य किये जा रहे है जो समाज एवं कानून के लिये घातक सिद्ध हो रहे है। कई बार पैसो के लेनदेन के कारण विवाद भी करते है। कुछ बडे सटौरिये धन का लालच देकर युवा पीढी को इस दलदल में धकेल रहे है।

देखना यह है कि क्या पुलिस प्रशासन इस ओर ध्यान देकर इन सटौरियो पर कार्यवाही करती है या फिर यह खुलेआम ही युवा पीढी को इस दलदल मे धकलते रहेगो।

राधाकृष्ण मंदिर में बनाए गए सोशल डिस्टेनसिंग के पालन हेतु गोले

माही की गूंज, झाबुआ। जिला कलेक्टर प्रबल सिपाहा द्वारा 9 जून से जिले के सभी धार्मिक स्थलों को सुबह 7 से रात 8 बजे तक खोले जाने की छूट दे दी गई है। आदेश के एक दिन पूर्व रात को शहर के सभी धार्मिक स्थलों पर पुलिस प्रशासन की ओर से मंदिरों में आने वाले भक्तजनों के सोशल डिस्टेनसिंग के पालन हेतु गोले बनवाएं गए। जिसमें मंदिर में आने वाले भक्तों को सोश्यल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुये ही दर्शन करना होगे। वही मुंह पर मास्क लगाकर ही धर्मस्थल पर प्रवेश करना होगा। जिला प्रशासन के निर्देशों को ध्यान में रखते हुये जिले भर सहित नगर के सभी धार्मिक स्थलों पर गोल घेरे बनाये गये। जिसमें खडे रहकर ही भक्त मंदिर मे दर्शन कर पायेगे।

इन्दौर जांच के लिए गया झाबुआ का युवक निकला कोरोना पॉजिटिव

नगर का सुभाष मार्ग सील

माही की गूंज, झाबुआ। नगरवासियो के लिए एक बुरी खबर इन्दौर से आ रही है जिसमे अपना ईलाज कराने गए झाबुआ के युवक को कोरोना पॉजिटिव निकला है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार झाबुआ के सुभाष मार्ग में रहने वाला मांगू (परिवर्तित नाम) जो इन्दौर केंसर की जांच कराने के लिये गया था। वहा उसका कोरोना की जांच के लिए सेम्पल भी लिये थे। जिसके बाद बुधवार शाम को उसकी रिपोर्ट मे कोरोना पॉजिटिव निकला है। यह खबर झाबुआ जिला प्रशासन को मिली वैसे ही पूरा अमला हरकत मे आ गया है। मौके पर स्वास्थ्य विभाग के डॉ सावन सिंह चौहान ओर उनकी टीम पहुची है ओर जितने भी लोग इस युवक के संपर्क में आये थे उनहे कोरोनाटाईन सेंन्टर ले जाया जा रहा है। स्वास्थ्य विभगा से सीएमएचओ डॉ बी एस बारिया, एसडीएम डॉ अभयसिंह खराडी, पुलिस विभाग से थाना प्रभारी सुरेन्द्रंसिंह गडरिया मौक पर पहुच कर युवक के परिजनो को एवं संपर्क में आने वाले लोगो को कोरोनटाईन के लिये भेजा जा रहा है। साथ ही सुभाष मार्ग वाले क्षेत्र को सील करने की प्रक्रिया भी शुरू कर दी है। गौरतलब है कि संक्रमित व्यक्ति का पूरा परिवार व सुभाष मार्ग के अधिकांश लोग वही के एक निजि क्लिनिक पर ही ईलाज करवाते है। व सुत्रो से पता चला कि इनके परिवार की तीन दूकाने एक नगर के बोहरा गली ओर दूसरी दिगम्बर जैन मंदिर के सामने है तथा तीसरी घर पर ही मोबाईल की दूकान संचालित की जाती है। नगर के ये क्षेत्र अत्यधिक व्यस्ततम ईलाको में से एक है जहां पर रोजाना सैकडो लोगो का आना जाना होता है। अगर इनकी गहराई से जांच की जाये तो कई ओर भी कई लोग इनके संपर्क में आये है का पता लग सकता है।

बैंक में गई पैसा निकालने नाबालिक लड़की हुई लापता

माही की गूंज खवासा। शा. कन्या हा. स्कूल खवासा में 9 वीं क्लास की छात्रा खुशबू पिता लालूसिंह खड़िया (16) टोड़ा फलिया खवासा नाबालिक होकर 4 जून को सुबह 10 बजे घर से छात्रवृत्ति के रुपए बैंक से निकालने हेतु खवासा राजवाड़ा चौक स्थित एसबीआई बैंक शाखा में गई थी। जो पैसा निकालने हेतु लाइन में भी बैंक में लगी, लेकिन बैंक बंद होने तक उसका नंबर नहीं लगा। यह बात परिजनों को उनके परिचितों ने कहीं, लेकिन बैंक से वह घर नहीं लौटी। आस-पास एवं रिश्तेदारों के यहा तलाश करने पर खुशबु के नहीं मिलने पर 8 जून को पुलिस चौकी खवासा में पिता के बीमार होने पर खुशबू की मां सम्बुडी बाई ने रिपोर्ट दर्ज करवाई। रिपोर्ट दर्ज के बाद भी आज तक गुमशुदा की तलाश नहीं हो पाई है। परिजनों ने अपील की है कि, जिस किसी को खुशबू का पता चले वह मो.नं. 6264467534 पर सूचना दें, सूचनाकर्ता को उचित इनाम भी दिया जाएगा।

पेटलावद विधानसभा में निर्मला वर्सेस गुमान

ग्रामीण मंडल में कई नामों पर चर्चा, कुछ साइलेंट तो कुछ खुलकर कर रहे है दावेदारी

आपसी खिंचतान के बीच अंतिम निर्णय पर नही पहुंच पा रहा संगठन

माही की गूंज, पेटलावद।

पेटलावद विधानसभा का सबसे महत्वपूर्ण ग्रामीण मंडल जहां से जिला जनपत उपाध्यक्ष की सीट तय होती है और अधिकांश इस पर कांग्रेस के कब्जा रहा है। कांग्रेस के प्रभाव वाला यह मंडल अब पहले से छोटा हो गया हैं। जिसमें से बामनिया, करड़ावद, रूपगढ़ जैसे बड़ी पंचायतों सहित 20 के लगभग पंचायतों को हटा दिया गया है। अब जिन पंचायतों का मंडल अध्यक्ष भाजपा की ओर से बनना है उसके ऊपर कांग्रेस के गढ़ में भाजपा का खुटा ठोकने की बड़ी जवाबदारी होगी। स्थितियां सामान्य होते ही स्थानीय चुनाव होना तय है, क्योंकि सरपंच सहित जनपद और जिला जनपद का कार्यकाल समाप्त हो चुका है और आने वाले चुनाव की तैयारी बूथ स्तर तक हो सके इसके लिए भाजपा को बिना समय गवाएं मंडल की नई टीम खड़ी करना होगी। विधानसभा 2018 के पहले से ग्रामीण मंडल की जिम्मेदारी कृष्णपाल राठौड़ के पास है जो विधानसभा 2018 में अपनी जिम्मेदारी से भाग कर यहाँ से कांग्रेस को वन वे कर गए थे। अब और जड़े मजबूत कर चुकी कांग्रेस की पकड़ ढीली करने के लिए क्षेत्र के कई भाजपा कार्यकर्ता दावेदारी कर रहे हैं। यहां से गुमानसिंह डामोर अपने प्यादे फिट करने की फिराक में है और सांसद समर्थकों की अंदरूनी रूप से बैठकें चल रही है। भाजपा और निर्मला समर्थकों को इन बैठकों से दूर रखा जा रहा है। यहां तक कि मंडल के कई वर्तमान पदाधिकारियों को बैठक की सूचना नही है। बताया जा रहा हैं कि ग्रामीण मंडल से अलग-अलग कार्यकर्तओं से एक ही नाम पर सहमती देकर जिलाध्यक्ष को गुमराह किया जाएगा। जिसकी जानकारी जिलाध्यक्ष और पूर्व विधायक निर्मला भूरिया तक भी पहुंच गई है, और उसी को देखकर ग्रामीण मंडल के लिए पूरी तैयारी की जारी है।

एक अनार सौ बीमार

वैसे तो पेटलावद विकास खण्ड के तीनों मंडल में यही स्थिति हैं। ग्रामीण मंडल में ये एक अनार सौ बीमार वाली स्थिति बाद में निर्मित हुई है। यहां से पहले गिने चुने नाम सामने आ रहे थे, लेकिन अब नामों और दावेदारों की लिस्ट लम्बी हो चुकी है। जिसमें कुछ कार्यकर्ता साइलेंट और कुछ कार्यकर्ता खुल के दावेदारी कर रहे हैं। बात करें दावेदारों की तो सबसे पहले और चर्चा में नाम कसारबड़ी सरपंच पति सुखराम मोरी का आता हैं। जो भाजपा के लिए लगातार वर्षों से काम कर रहे हैं। सुखराम मोरी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की पृष्ठ भूमि से आते हैं और वर्तमान में ग्रामीण मंडल में महामंत्री हैं। युवा मोर्चा पेटलावद मंडल उपाध्यक्ष रहे उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं और इनकी माता जी को जिला पंचायत सदस्य का बड़ा चुनाव भाजपा लड़वा चुकी हैं। अनुभव और कार्य के आधार पर मंडल के लिए फीट बेठेते हैं, लेकिन ग्रामीण मंडल के अध्यक्ष कृष्णपाल की बी टीम का हिस्सा माने जाते हैं और फिलहाल मंडल के चुनाव को देखते हुए कृष्णपाल और सांसद का स्टेम्प लगा कार्यकर्ता नहीं दिखना चाहते या ये भी कह सकते हैं कि इन्होंने कुछ समय के लिए सांसद और उनके समर्थकों से सामान्य दूरी बना ली, जो बाद में खुलकर देखी जा सके। वैसे तो ये पद किसी भी आदिवासी कार्यकर्ता के खाते में जाता दिख रहा है, लेकिन किसी परिस्थितियों में अन्य पर चर्चा का दौर होता हैं तो सारंगी क्षेत्र के बोलासा से आने वाले जितेंद्र गेहलोत का नाम भी चर्चा में है। जितेंद्र गेहलोत कलाल समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं जो कि ग्रामीण क्षेत्र के हर गाँव में रह कर अपनी अच्छी खासी पेठ रखते है। पेटलावद विधानसभा की बात करें तो ग्रामीण क्षेत्र में कलाल समाज से कम ही चेहरे भाजपा से जुड़े होकर खुलकर काम करते हैं। ऐसे में जितेंद्र गेहलोत को आगे कर न केवल एक समाज विशेष को प्रतिनिधित्व दिया जा सकता हैं। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ, सेवा भारती और विश्व हिंदू परिषद जैसे संगठनों में कार्य किया। तो भाजपा की युवा मोर्चा टीम में मंडल मंत्री और युवा मोर्चा में जिला उपाध्यक्ष रहने के बाद वर्तमान में जिला महामंत्री युवा मोर्चा में है। अच्छा खासा राजनीति अनुभव और संघ से लेकर संगठन में कार्य करने का अनुभव इनका मजबूत पक्ष बना हुआ है। निर्मला भूरिया के समर्थक तो माने जाते हैं लेकिन सांसद गुमानसिंह से भी नजदीकी जग जाहिर है। वहीं शराब व्यवसाय से जुड़े होकर पिछले दो सालों में क्षेत्र जिले से बहार ज्यादा रहे हैं और वर्तमान में भी दूसरे जिले में ही काम कर रहे हैं। गुटबाजी से परेशान जिलाध्यक्ष ग्रामीण मंडल में नए और निर्विवाद चेहरे की तलाश में हैं। जिसे साधने के लिए सभी गुट के नेता और कार्यकर्ताओं का पूरा सहयोग मिल सके। वर्तमान में युवा मोर्चा के मंडल अध्यक्ष पप्पू गामड़ इस रेस के वो विजय घोड़े हो सकते हैं। जिस पर जिलाध्यक्ष और पार्टी पूरा भरोसा कर सकती हैं। सारंगी क्षेत्र के बेंगनबड़ी ग्राम पंचायत के सरपंच न केवल अनुभवी भाजपा के कार्यकर्ता है बल्कि गुटीय राजनीति से दूर भी है। पप्पू गामड़ खुद जिलाध्यक्ष लक्ष्मणसिंह नायक के साथ काम कर चुके हैं और वर्ष 2011 से लगातार तीन बार से युवा मोर्चा के मंडल अध्यक्ष है। 2011-15 के बीच जनपद सदस्य रह चुके है। वर्तमान में भी ये भाजपा समर्थित सरपंचों की गुड लिस्ट में है। जहाँ से भ्रष्टाचार के कारण पार्टी को बदनाम नहीं होना पड़ा। जहां एक ओर गुटबाजी और दावेदारी है। वहीं दूसरी ओर पप्पू गामड़ को संगठन पर भरोसा हैं कि वो मेहनती और समर्पित कार्यकर्ताओं को कभी निराश नहीं करते हैं।

हालांकि सांसद और उनके समर्थकों द्वारा इनकी अनदेखी निर्मला समर्थक मानकर की गई, लेकिन इनकी और किसी प्रकार का विरोध दर्ज नहीं कराया गया। जिस तरह से जिला संगठन में गुटबाजी निपटाने के लिए एक अलग नाम पर मोहर लगी हैं। उसी तरह पप्पू गामड़ भी मंडल स्तर पर ग्रामीण मंडल के लिए चुने जा सकते हैं। देखा जाए तो ग्रामीण मंडल के लिए दावेदारों की सूची में ज्यादातर दावेदार वो सरपंच या सरपंच पति हैं जो ग्राम पंचायत स्तर पर अच्छा कार्य कर रहे हैं। ग्राम पंचायत मोईचारणी के सरपंच छगनलाल गामड़ जो भाजपा के पुराने कार्यकर्ता हैं और कांग्रेस के वर्चस्व वाले गांवों के बीच भाजपा का झंडा बुलंद किए हुए हैं और इस बार खुद से दावेदारी कर रहे हैं। इस प्रकार रुनजी के सरपंच मुन्नालाल निनामा भी अपना दावा मंडल अध्यक्ष पद के लिए ठोक रहे हैं। मुन्नालाल निनामा का राजनीतिक अनुभव भी कम नहीं है। 1992 में शिवसेना से जुड़कर कार्य करने वाले निनामा संघ और सेवाभारती में काम कर चुके हैं। दो बार मंडल उपाध्यक्ष का पद और सरपंच संघ पेटलावद के अध्यक्ष रह चुके है। इसी तरह से करवड़ के सागरमल प्रजापति भाजपा के नगर अध्यक्ष पद पर रह चुके हैं और वर्षो से भाजपा के लिए करवड़ क्षेत्र में संघर्ष कर रहे हैं। वर्तमान में किसान मोर्चे मंडल में पदाधिकारी है और प्रजापति समाज के जिलाध्यक्ष का दायित्व भी अभी इनके पास है। करवड़ के पूर्व सरपंच विकास गामड़, वर्तमान उप सरपंच भवरसिंह गेहलोत, गेहन्दी की तेजमल सोलंकी सहित कई भाजपा कार्यकर्ता ग्रामीण मंडल के लिए दावेदारी कर रहे हैं। वहीं ज्यादा पुरुष दावेदारी के बीच महिला नेतृत्व पर भी संगठन भरोसा कर सकता हैं। क्योंकि पेटलावद विकास खण्ड में भाजपा के पास महिला नेतृत्व की कमी है। सारंगी की सरपंच फुंदी बाई मैड़ा भले ही उम्र के लिहाज से मंडल अध्यक्ष के दायरे में नही है लेकिन बात जब संगठन को मजबूत करने की आएगी तो उम्र को नहीं योग्यता को तवज्जों दी जा सकती हैं।

अमानक बीज पर सख्ती जरूरी

माही की गूंज खवासा। कोविड-19 (कोरोना संक्रमण) के बीच पहली बारिश के बाद बाजार में हलचल बढ़ गई है। लोग लंबे समय तक घरों में कैद रहने के बाद तमाम सरकारी गाइड लाइन को दरकिनार कर बेखौफ होकर बाजार में खरीददारी कर रहे हैं। कृषि प्रधान जिला होने के कारण पहली बारिश के बाद एक ओर जहां किसानों के चेहरे खिल उठे हैं, वहीं दूसरी ओर उन्हें खाद-बीज की व्यवस्था करने की चिंता भी सता रही है। बाजार में बीज की दुकाने लग चुकी है लेकिन इन सबके बीच एक मुख्य विषय है, बाजार में उपलब्ध बीज की गुणवत्ता और सरकारी महकमे का बीज माफियाओ पर नियंत्रण। आमतौर पर यह देखने में आया है कि बारिश होते ही क्षेत्र में बीज माफिया सक्रिय हो जाते हैं और वे अप्रमाणिक और नकली बीजों का व्यवसा बड़े पैमाने पर करते हैं और यह सब कृषि विभाग के नाक के नीचे होता है। अमूमन यह सीजन 10 से 15 दिनों का होता है और बोवनी पूर्ण होने पर बाजार में बीजों की बिक्री शून्य हो जाती है लेकिन यह 10 से 15 दिन किसानों पर वर्ष भर भारी पड़ते हैं। कुछ बीज माफिया उर्फ असामाजिक तत्व अपने क्षणिक लाभ के लिए आम किसानों को वर्ष भर खराब कर देते हैं। अमानक और अप्रमाणिक बीजों से उतनी पैदावार भी नहीं होती है और अपेक्षाकृत ज्यादा खर्चीले भी होते हैं। इनमें समय-समय पर खाद और पानी देने के बाद भी अपेक्षानुरूप फसल पैदा नहीं होती है। जिससे किसान कर्ज के बोझ तले दब जाता है। बेहतर होगा प्रशासन और कृषि विभाग बाजारों में सख्ती दिखाएं और पंजीकृत व्यापारी ही केवल प्रमाणित बीजों का विक्रय ही कर सके ताकि आम किसानों का वर्षभर बर्बाद न हो। इन दिनों बाजार में मुख्य रूप से कपास और सोयाबीन के बीजों का विक्रय धड़ल्ले से हो रहा है और यही क्षेत्र की मुख्य फसल भी है।

रास्ते के विवाद में हरे भरे फलदार वृक्ष काटे

कार्यवाही के लिए भटक रहे आवेदक को नही मिल रहा न्याय

माही की गूंज, पेटलावद।

जहां एक ओर शासन-प्रशासन पेड़ लगाकर पर्यवरण को हरा-भरा करने की बात कर रहे हैं। वहीं क्षेत्र में हरे भरे पेड़ों के काटे जाने पर जवाबदार मौन धारण कर कोई कार्यवाही नहीं कर रहे हैं। पेटलावद विकास खण्ड की ग्राम पंचायत में ठिकरिया में रास्ते के विवाद को लेकर 08 से 10 से हरे फलदार पेड़ काटने की शिकायत पुलिस और तहसील न्यायालय में भिलजी पिता अमरा देवदा ने उसके ही गाँव के कुछ लोगों पर रास्ते के लिए सेड़े पर लगे पेड़ काटने का आरोप लगाया है। शिकायतकर्ता का कहना है कि 14 मई को कुछ लोगों ने सेड़े पर लगे पेड़ों में से लगभग 08 पेड़ काट दिए। जिसकी शिकायत 100 नम्बर कर पुलिस को कर मौके पर बुलाया और मौके पर पटवारी भी आए। दोनों ने पेड़ काटने को गलत बता कर थाने पर आकर रिपोर्ट करने को कहा, लेकिन थाने मौजूद नायक हेडसाब ने भगा दिया। पेड़ काटने वालों के हौसले इतने बुलन्द हो गए कि बचे हुए पेड़ भी लगभग 08 दिन पहले काट दिए। जो हेड साब रिपोर्ट नहीं लिख रहे थे वो पेड़ काटने वालों के बुलाने पर मौके पर पहुँच कर शिकायतकर्ता को धौंस दपट कर पेड़ कटने पर थाने पर बिठा कर समझौता करवाने का दबाव बनाने लगा है। मामले की लिखित शिकायत पुलिस थाना पेटलावद और तहसीलदार के समक्ष की गई है।

वन विभाग ने नहीं लिया आवेदन

मामले की शिकायत भिलजी देवदा द्वारा वन विभाग को भी की गई लेकिन वह विभाग में पदस्थ वन रक्षक पारसिंह भाबर ने आवेदन लेने से मना कर दिया। जब इस बारे में वनरक्षक से बात की तो उनका कहना है कि पेड़ निजी भूमि में लगे हैं। इस पर कार्यवाही करने का हमकों अधिकार नहीं है। यदि लकड़ी भर के ले जाते रहे हो तो हम कार्यवाही कर सकते हैं। इतने सारे पेड़ काटने पूरे मामले में जिम्मेदार पल्ला झाड़ते नजर आए।

नेता जी के इशारे पर चल रही अतिक्रमण मुहिम, कुचले गए कई परिवारों के आशियाने

सांसद के गृह ग्राम में चल रही मुहिम के पीछे किसी की राजनीति

माही की गूंज, पेटलावद।

बर्बर कार्यवाह को अंजाम देता राजस्व अमला।

कोरोना संकट में खड़े हुए रोजी-रोटी के संकट के बीच सांसद गुमानसिंह डामोर के गृह ग्राम उमरकोट में अतिक्रमण मुहिम चलाई जा रही है। जिसमें गांव के कई लोगों के घर और रोजी-रोटी की व्यवस्था का साधन छीन गया। सवाल यहां यह खड़े हो रहे है कि आखिर कोरोना संकट से पूरा देश जूझ रहा है। कई जरूरी प्रशासनिक कार्य लंबे समय से अटके पड़े हैं। प्रशासन के आवेदन स्वीकार करने और राजस्व की टीम के पास बंटवारे और सीमांकन जैसे कार्य करने का समय नहीं है। ऐसे में रतलाम-झाबुआ सीट से सांसद बने गुमानसिंह डामोर के गृह ग्राम उमरकोट के किसके इशारे और किस बात की खींज प्रशासन द्वारा निकल कर अतिक्रमण मुहिम चलाई जा रही हैं। मिली जानकारी के अनुसार पिछले कई दिनों से प्रशासन का एक दस्ता गुमान के मुंह लगे अनुविभागीय अधिकारी अभय खराड़ी के नेतृत्व में उमरकोट में लगातार अलग-अलग मामलों में कार्यवाही कर रहा है। उमरकोटवासी भी कार्यवाही को समझ नहीं पा रहे है। आखिर पूरे प्रदेश में कांग्रेस राज में चली अतिक्रमण मुहिम बन्द हो चुकी हैं, पुराने हटाए गए अतिक्रमण धीरे -धीरे वापस अपनी पुर्नस्थिति में पहुंच चुके है। प्रदेश से कांग्रेस की सरकार भी रवाना हो गई। ऐसे में लॉकडाउन की वजह से लंबे समय से बंद पड़ी दुकानों को अतिक्रमण मुहिम के नाम पर हटाकर कई गरीब लोगों को बेरोजगार कर दिया गया। कोरोना संकट से पहले से जूझ रहे लोगों के भूखे मरने की नौबत आ चुकि हैं। वहीं केवल उमरकोट में चल रही द्वेषतापूर्ण कार्यवाही बता रही हैं और पूरी कार्यवाही के पीछे सांसद का हाथ होना बता रहे जो अपने परिवार के ही किसी शिकायतकर्ता के कंधे पर रख कर बन्दूक चला रहे हैं।

अतिक्रमण हटाने के लिए दिए जा रहे थे नोटिस

इधर प्रशासन का कहना है कि उमरकोट में अतिक्रमण करने वालों को लगातार अतिक्रमण हटाने को कहा जा रहा था, लेकिन लोगों ने पक्का अतिक्रमण कर लिया था जिसे तोड़ा गया। वहीं उमरकोट ग्राम पंचायत सरपंच मोहन डामर का कहना है कि उनकी ओर से अतिक्रमण हटाने को लेकर किसी प्रकार कोई मांग लिखित या मौखिक प्रशासन से नहीं की गई। न ही प्रशासन की ओर ग्राम पंचायत से कोई सूची अतिक्रमणकर्ता के नामों की मांगी गई और न ही कोई ग्राम पंचायत या अतिक्रमणकर्ताओं को नोटिस दिए गए। सरपंच मोहन डामोर ने बताया कि एसडीएम अभयसिंह खराड़ी से दुकानदारों ने कोरोना महामारी से परेशान होने और बारिश के मौसम को देखते हुए अतिक्रमण मुहिम को रोकने की बात कही। जिस पर एसडीएम सहमत हो गए, लेकिन अगले दिन पूरे बल के साथ आकर जबरन अतिक्रमण हटाने की कार्यवाही की गई। सांसद के भाई गुजराजसिंह की शिकायत पर पूर्व में ही गुमटियों आदि के आगे से डालिये और सेड हटवा दिए गए थे। सरपंच डामर के कहना है कि मेरे द्वारा एसडीएम खराड़ी से मुहिम रोक कर लोगों को बारिश निकलने तक का समय देने की मांग की गई, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। सरपंच द्वारा दी गई जानकारी से साफ हो गया कि पूरे मामले के पीछे केवल लोगों को प्रताड़ित करने की योजना हैं। जिसके तहत लॉकडाउन और कोरोना महामारी को ताक में रख कर पूरे प्रदेश में बंद पड़ी मुहिम को केवल उमरकोट में चलाया गया। मुहिम के पीछे मुख्यमंत्री हेल्प लाइन पर की गई शिकायत को बताया गया। जहां ऐसी सैकड़ों शिकायत आज भी लम्बित पड़ी है। फिर केवल उमरकोट को निशाना बनाया गया। जिससे सवाल खड़े होते हैं।

गृह क्षेत्र से हार का सामना करना पड़ा था

सांसद गुमानसिंह डामर का उमरकोट गृह ग्राम हैं। डामोर का पूरा परिवार यहीं का रहने वाला है और यहीं से गुमानसिंह का काला इतिहास युवा मोर्चा के जिलाध्यक्ष महावीर सिंह की हत्या के मामले से भी जुड़ा है। जो चुनाव के दौरान मुद्दा पूरी तरह से छाया रहा। उमरकोट के लोगों की पुरानी आस्था उमरकोट दरबार के परिवार से जुड़ी है। चुनाव के दौरान लाख प्रयास के बाद भी उमरकोट दरबार के प्रभाव से पार नहीं पा सके। भाजपा और मोदी के नाम पर भी गुमान को वोट उतने नहीं मिले की अपना सम्मान बचा सके। उमरकोट के तीन में से दो बूथ पर हार का सामना करना पड़ा। एक बूथ पर 50 वोट से मामूली जीत मिली। जबकि पूरे उमरकोट सेक्टर में भाजपा और गुमान को हार का मुंह देखना पड़ा। अब अतिक्रमण का शिकार हो रहे लोग दबी जबान से इस बर्बर कार्यवाही को इस हार का परिणाम बता रहे हैं। जनसंघ के समय कार्य कर रहे उमरकोट परिवार के पूर्व के किसान मोर्चा के जिलाध्यक्ष बहादुर सिंह उमरकोट ने सीधे-सीधे इस कार्यवाही के लिए सांसद को जिम्मेदार ठहराते हुए कहा है कि चुनाव में मिली हार से खिजवा कर बदले की कार्यवाही प्रशासन का दुरुपयोग कर की जा रही हैं।

14 साल से फरार ईनामी स्थाई वारंटी को किया पुलिस ने गिरफ्तार

माही की गूंज, थांदला। पुलिस मुख्यालय भोपाल के आदेश अनुसार 1 से 30 जून तक चलाए जा रहे संपत्ति संबंधी अपराधो पर नियंन्त्रण हेतु विशेष अभियान चलाया जा रहा है। जिसके अन्तर्गत पुलिस अधीक्षक विनित जैन के मार्गदर्शन में मनोहरसिंह गवली अअपु. अधीक्षक थांदला के निर्देशन मे चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत प्रथम श्रेणी न्यायालय थांदला जिला झाबुआ के न्यायाल के प्रकरण क्रमांक 743/06 धारा 294,323,506,34 भादवि. मे जारी स्थाई वारण्टी बाबू पिता मोतिया पारगी भील उम्र 35 वर्ष निवासी छोटी नागनखेडी को थाना मेघनगर की टीम ने ग्रम छोटी नागनखेडी वारण्टी के घर से मुखबीर की सुचना पर 9 जून 2020 को दबिश देकर गिरफ्तार किया। जिसे 9 जून को प्रथमा श्रेणी न्यायालय थांदला में न्यायालय में पेश किया गया। उक्त वारण्टी 14 वर्षो से फरार चल रहा थां तथा उकत वारण्टी की गिरफ्तारी पर पुलिस अधीक्षक जिला झाबुआ के द्वारा ईनाम घोषित किया गया है। उक्त वारण्टी की गिरफ्तारी मे थाना मेघनगर की थाना प्रभारी श्रीमती कौशल्या चौहान, उनि. हीरालाल मालीवाड, सउनि. हरिसिंह चुण्डावत, सउनिऋमहेश भामदरे, प्र.आर.373 मुकेश वर्मा, प्र.आर.22 शैलेन्द्र रघुवंशी, आर.48 अनिल, आर.391 जामसिह का सराहनीय योगदान रहा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा, संपादक- धर्मेन्द्र पंचाल । मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422